भाषा, मातृभाषा आ भोजपुरी

भाषा ऊ हऽ जवन समय से उपजल परिस्थितियन में- हमहन के जिये आ अपना जरूरतन खातिर, एक दूसरा से मिले-जुले, बोले बतियावे लायक बनावेले, जवन घर का भीतर से बहरा ले-: विशाल जनसमुदाय से जोरेले। अभिव्यक्ति आ संवाद के जरिया इहे भाषा अतीत, इतिहास, परंपरा आ संस्कृति के सचेतन वाहक बनेले। एही से पीढ़ी दर पीढ़ी अपना सामूहिक चेतना संगे चलि आइल जातीय समृतियन के खजाना कहाले। पुरखा-पुरनियन का जीवन-संघर्ष के माध्यम रहल ई भाषा, आदमी का दिल-दिमाग से जरत जातीय-स्वाभिमान के ऊ लौ हऽ, जेकरा अँजोर में ओकर पहिचान लउकेला। हमहन के आदि अन्त आ अस्तित्व से जुड़ल हर सवाल के जबाब ढूंढ़े में भाषा सहायक बनेले।

अपना जियका-जोगाड़; सुविधा आ जरूरत खातिर, क्रिया-व्यापार, रोजगार, व्यवसाय खातिर एगो भाषा, दोसरा भाषा से स्वतंत्रता आ समानता का आधार पर मिलेले। तब्बे आपुसी मेल-मोहब्बत बढ़ेला आ एक दुसरा के जीवन संस्कृति जाने-समझे के अवसर मिलेला। एक दुसरा के भावना आ विचार के आदर के बिना, कवनो भाषा दुसर भाषा-भाषियन से रिश्ता ना बना सके। जब कवनो भाषा 'सत्ता' शक्ति आ वर्चस्व के सहारा लेके, दुसरा भाषा से मिलेले, त ओघरी ओकर रूप आधिपत्य जमावे वाला होला। अंग्रेजी भाषा के साम्राज्यवाद दोसरा भाषा आ लोकभाषा से जनतांत्रिक सम्बन्ध ना बनवलस। ऊ शुरू से 'उत्पीड़क' आ 'वर्चस्व' बनावे वाली भाषा रहे, जवन दुसरा भाषा-भाषियन के ओछ, हीन आ गुलाम मान के आपन बर्चस्व कायम कइलस। अपना सुविधा, स्वार्थ खातिर, पद, पइसा रोजिगार, नोकरी खातिर लोग अंग्रेजी के सत्ता कबूल कइलस आ ओकरा गुलामी खातिर मजबूर भइल।

अंग्रेज आ ओकर पिठ्ठू अंग्रेजी भाषा के महत्व आ शक्ति के अतना बढ़ा-चढ़ा के परोसलन सऽ, जेसे बुझाव कि संसार के सगरो ज्ञान आ तरक्की के सगरी राह एही भाषा में मिल सकेला। ईहो जाहिर कइल गइल कि दोसर भाषा आ लोक भाषा अशिक्षा, अज्ञान, अन्धकार आ अपमान का सिवाय अउर कुछ ना दी। बस अंग्रेजिये, पिछड़ापन, अज्ञान, अंधकार, गरीबी दूर कर सकेले। ऊहे आधुनिकता आ विकास का ओर ले जा सकेले, सुख-सुविधा पद-अधिकार, आ सम्मान दिया सकेले। हिन्दुस्तान में, दबाव आ दमन का बूता पर अंग्रेज हमन का भाषाई एकता आ सांस्कृतिक चेतना के छिन्न-भिन्न करे के बहुत कोशिश कइलन सऽ।

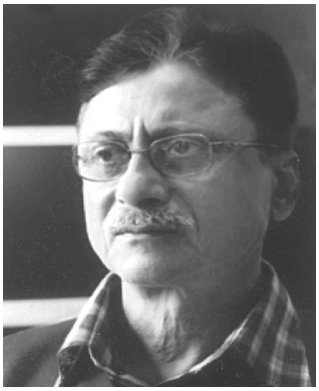

अइसन ना रहे कि अंग्रेजन के साम्राज्यवादी वर्चस्व के चुनौती आ विरोध ना मिलल। दमन अन्याय, जुलुम आ शोषन का खिलाफ हिन्दुस्तान के कूल्हि भाषा मिलि गइली स। कलकत्ता से भारतीय पत्रकारिता के मशाल जरल, जातीय भाषा का जोर पर राष्ट्रीय आंदोलन के शुरूआत भइल आ उत्तर भारत में राष्ट्रीय नवजागरन क शंख बाजल । फेर अपने भाषा के हथियार बना के अंगरेजी सत्ता का अनेति से लड़ल गइल।

१८२६ में 'उदन्त मारतण्ड' पं० युगुल किशोर शुक्ल अउर 'उचित वक्ता' (श्री दुर्गा प्रसाद मिश्र) का जरिये एक बेर हिन्दी पत्रकारिता हुंकार भरलस, फेर त पर्चा, पोस्टर, अखबार के जरिया बना के हिन्दुस्तानी भाषा (हिन्दी, उर्दू, मराठी, बंगला, तमिल आदि) अंग्रेजी सत्ता का खिलाफ उठ खड़ा भइली सऽ। सुराज आ स्वतंत्रता खातिर, हिन्दुस्तान बहुभाषा-भाषी रहलो पर एही से एकजुट भइल कि हिन्दुस्तानी भाषा सभन में भाईचारा, बहनापा आ एक दुसरा का प्रति समानता के भाव रहे। आजादी का बाद अगर अंग्रेजी बनल रहल आ बढ़त रहल त ओकरा पाछा अंग्रेज ना, हमहने के देश के प्रभुत्व संपन्न, साधन-सम्पन्न लोग आ अफसरशाही जिम्मेवार रहे। सबके मालूम बा कि जवना हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनावे खातिर, ब्रजी, अवधी, मैथिली, भोजपुरी, बुन्देलखण्डी, मगही आदि भाषा आपन सबकुछ

न्यौछावर कऽ दिहली स, उहो हिन्दी राष्ट्रभाषा ना बनल, अंगरेजी का संगे ओके राजभाषा बनावे के कोसिस जरूर भइल, बाकि आजादो भइला पर अंग्रेजी अउर मजबूत, अउर हावी होत गइल। आजादी के पैंसठ साल बितलो पर लोक सभा में राजभाषा समिति गठित ना हो सकल।

मातृभाषा क माने खाली माई के भाषा ना हऽ, बलुक जवन जनम का साथे, माई-बाप, सगा-संबंधी, परिवार, टोल-महाल, गाँव आ क्षेत्रीय समाज बोलेला; ओके 'मातृभाषा' कहल जाला। मातृभाषा के ऊ परिवेश, जौना में लड़कपन बीतल, जवानी चढ़ल, जवना समाज में हमन के भाव विचार आ सोच के अभिव्यक्ति मिलल, ऊ हमन के जाति-जमात आ पूरा क्षेत्रीय समुदाय के भाषा ए दायरा में आवेला। दोसरा शब्दन में कहल जाव त मातृभाषा में हमन के एक-एक दुख-सुख, खुशी-उल्लास, चिन्ता, विचार प्रगट भइल, जवना का जरिये सोच क दायरा बढ़ल, जवना में हमहन गवली-बजवलीं, हँसलीं-रोवलीं जा, जवना में प्रेम क उद्‌गार निकलल, दुख-विपत्ति में जवन एक जुट होके लड़े सिखवलस, ऊ मातृभाषा हऽ।

एह भाषा से हमन क जनम-करम जुड़ल बा। फिर ई भाषा दीन-हीन आ पिछड़ल कइसे हो सकेले? जरूर कवनो भेदभाव, कवनो साजिश, कवनो राजनीति बा, तबे नऽ कुछ लोग अपना भाषा-वर्चस्व का जोर पर, हमहन का भाषा से नाक-भउँ सिकोरऽता। अब देखीं, जनगणना में यू०पी०, बिहार के मूल भोजपुरी-भाषी लोग मातृभाषा का जगहा- हिन्दी, अरबी आ उर्दू लिखवा देता। हिन्दी-उर्दू त समझ में आवऽता बाकिर 'अरबी' ? पछिला जनगणना में जनगणना-मंत्रालय के अधिकारियो हैरान रहलन सऽ बाद में विश्लेषण कइला पर, पता चलल कि यू.पी. बिहार के अति पिछड़ल इलाका क ऊ लोग, जेकर मातृ-पितृ भाषा भोजपुरी अवधी बा, उहां ज्यादा संख्या में मदरसा का चलते, धर्म का आधार पर लगभग साठ हजार लोग, मातृभाषा 'अरबी' लिखवा दिहल। एह ममिला में कश्मीरे बढ़िया बा, उहां उर्दू राजभाषा बा, बाकिर बहुसंख्यक वर्ग आपन मातृभाषा कश्मीरी लिखवालेला।

सरकारी फाइलन के आँकड़ा चाहे जवन कहे, पूर्वी यू.पी. आ बिहार के लोग, बलुक बेतिया, चंपारन, झारखण्ड, नेपाल तक भोजपुरी भाषा आ संस्कृति फरत-फुलात बा। दुख एह बात के बा, कि खुद भोजपुरिहा लोगन में अपना भाषा का प्रति गौरव आ स्वाभिमान नइखे। कबीर आदि संतन के भाषा भोजपुरी के, आपन सांस्कृतिक विरासत आ विपुल-साहित्य रहला का बादो; अउर मान्यता प्राप्त लोकभषन नियर संविधान के आठवीं अनुसूची में नाँव लिखावे बदे, का-का नइखे करे के पड़त ? भोजपुरी क्षेत्र के सांसद आ बड़-बड विद्वान लोग, अपना भाषा के खाली मतलब परले इयाद करेला। ऊ लोग, मातृभाषा त छोड़ीं, राजभाषा हिन्दिये के केतना कदर करेला ?

सांच आ खरा तथ्य ई बा कि हमहन का देश में, सुराज का बाद, 'साम्राज्यवादी, वर्चस्व' के भाषा अंग्रेजी के 'पावर' आ उपयोगिता घटला के बजाय, अउर बढ़ि गइल बा। संचार-माध्यम के विस्तार- टेलीविजन, इण्टरनेट, यूट्‌यूब के आगमन का बाद, समाचार चैनल आ अखबारों के 'भाषा'-संस्कृति अब बदल रहा बा। अंग्रेजी आजुओ संपर्क, संवाद, शिक्षा, जानकारी, क्रिया-व्यापार, रोजगार, व्यवसाय, कैरियर, तरक्की आ ताकत के ताकतवर भाषा बनल बा। 'भाषा' पर सोचे-विचारे वाला लोग खुदे एकरा पाछा छुपल कारन आ रहस-भेद जाने खातिर अंग्रेजिये के पोंछ पकड़ले बा। बड़-बढ़ुवा नेता, अफसर सभे 'रोमन लिपि' में लिखल हिन्दी पढ़त-बोतल बा, इहां तक कि हिन्दी के प्रोफेसर-विद्वानों लोग 'अंगरेजी' के शान में कसीदा काढ़े में गुरेज नइखे करत। अब खाली अगड़े, पिछड़े, दलित, महादलित, अनुसूचित, परिगणित ना हर वर्ग जाति के लोग अपना छोट-छोट अबोध लड़िकन के 'मातृभाषा' का बजाय 'अग्रेजिए' सिखावल-पढ़ावल पसंद करत बा। आखिर अंगरेजी से 'फ्यूचर' आ 'कैरियर' जुड़ल बा। अब अंगरेजी के विरोध संभव नइखे, ना शुद्ध हिन्दी बोले के जिद बा। रोजी रोजगार, काम-धन्धा आ सम्पर्क खातिर कवनो भाषा सीखीं, बोलीं; बाकिर अपना मातृभूमि आ मातृभाषा का दिसाईं आँख मून के अपना के, अउर हीन आ तुच्छ मत बनाईं !

अशोक द्विवेदी

आजकल

फेरू बैतलवा डाल पर.....

❑ शिलीमुख

हमहन का लोकतंत्र में अक्सर हुल्ल-हपाड़ मचत रहेला। ऊहो एकदम ठेठ अंदाज में। कबो संसद का भीतर त कबो बाहर। घोटाला, लूट आ भ्रष्टाचार पर कवनो साल बाँव (खाली) ना जाला। बलुक अब त हर चार-छव महीना में घोटाला के नये-नया रिकाड सोझा आ जाला। अइसना में तय बा कि विपक्षी राजनीतिक दल हाय-तोबा आ हंगामा मचइबे करिहन सऽ। आज के सत्ताधारी पार्टियों पहिले अइसहीं करत रहे- बलुक ऊ त कबो-कबो बेमसरफो हंगामा करे से ना चूके। सत्ताधारी पार्टी के कूल्हि पैंतरा मालूम बा ।जब ऊ देखेले कि कवनो घोटाला के सोरि, ओकरा मेन लीडरे के ओरि जाता आ कूल्हि विपक्षी-दल एकवटि के हंगामा मचावत बाड़न सऽ, त ऊ 'आरक्षण' के एगो पुरान बिल संसद में पटक देले।

हुल्ल-हपाड़, हंगामा सार्थक होखो भा निरर्थक, ऊ लोकतंत्र के सुभाव में बा। हँ एक बात अउर बा- ई हुल्ल-हपाड़, विरोध आ हंगामा करे के अधिकार आम जनता के स्वयंभू नेतृत्व के नइखे। जइसे भ्रष्टाचार भा कालाधन पर कारवाई के लेके, भा लोकपाल बिल के लेके, संसद का बाहर अगर कवनो अन्ना-पार्टी भा रामदेव पार्टी अइबो करी त ओपर संसद में सवाल खड़ा हो जाई, 'हुँ....ई कहां से आ गइलन, संसद के बतावे ? ई हउवन के ?' राजनीतिक पार्टी मिलके ई सवाल दाग- दी कि 'ई त संसद का अधिकारे पर चुनौती देता, दबाव बनावऽता।' कहे के मतलब ई कि हमहन के लोक तंत्र में ई हंगामा चलत रहेला आ सरकारो चलत रहेले। कबो-कबो चैनलिया ब्रेक लेखा, मराठी-बिहारी के हंगामा, कबो असमिया बोडो के हंगामा आ कबो एह हंगामा का विरोध में मुम्बइया हंगामा। हमहन का देश के लोकतंत्र के इहे सब शोभा हऽ।

सरकार ई कूल्हि देखेले आ महटियाइ के आपन काम करत रहेले, काम करत-करत 'मनमानी' के अछरंग लागेला, सहजोग करे वाली पाटी पिनिक जाले, सरकार समझावेले....। 'मनिहें त मनिहें ना त जासु.... अरे ऊ सरकारे का, जवन कुछ मनमानी ना करे...बन्हुआ थोरे हऽ सरकार।' जनता कॉखेले, कहरेले--- कबो महंगाई का दाब से कबो असुरक्षा का दाब से, कबो पुलिसिया दाब से....। जनता पर मुसीबत आ दुख-बीपत आवते रहेला। दइबे ओकरा पर टेढ़ रहेलें। कबो सूखा आई कबो बाढ़, कबो बादर फाटी कबो धरती धंसी....ई सब चलत। ई सब चलत रहेला आ 'लोक' के तंत्र आपन काम करत रहेला। जनता के कहंरला, पर सरकार पुछार जरूर करेले, कुछ ना त संवेदना, आश्वासन त देबे करेले। महंगाइयो पर लगाम लगावे के सरकारी-चिन्ता से सभ वाकिफ बा। महंगाई रूके त कइसे? ससुरी कबो पेट्रोल, कबो डीजल, कबो बिजुली, आ रसोई गैस के बढ़ल दाम पी के अस छतिया जाले कि जनता का छाती पर चढ़ बइठेले। सरकारो जानेले कि जनता के धेयान भटकावे के कई गो नया बहाना बा। कुछ ना मिली त अगड़ा, पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक, आतंकवाद, आरक्षण, घुसपैठ में से कवनो मुद्दा उछाल दियाई। पचासन बरिस से हमनी किहां इहे होत आइल बा आ हमनी का---(माने आम जनता) ई सब देखत-सुनत -सहत आइल बानी जा।

हमहन का लोकतंत्र में आम लोग ऊ 'वोटर' हऽ, जवन बहुत कुछ देखियो-समझि के ना समझे। अफवाह आ उसुकवला पर ई वोटर ऊ सब क 'घाली जवन ना करे के चाही, बाकि वाजिब बात पर आवाज निकाले के जगहा, मुहँवे बन्द क' ली। वोटर कहाये वाला ई लोग कूलि दुख, अपमान, अनेति, असुरक्षा, बदहाली आ महंगाई झेली आ चुनाव में, अदबदाइ के आपन वोट, ओही पाटी के दे देई, जे एकरा खातिर जिम्मेदार बा। जात, मजहब आ भाषा का नांव पर बंटाए वाला वोटर 'भ्रष्टाचार' अत्याचार सब भुला जाला। अपना छोट आ छुद्र स्वारथ में--- कुछ रूपया, कुछ कपड़ा, आवास, नोकरी का लालच में बहक जाला। कबो कर्जमाफी कबो बेरोजगारी भत्ता आ लैपटाप खातिर आपन भविष्य दॉव पर लगा देला।

एह 'वोटर' नांव के आम जनता का पास न सुविधान सड़क बा, न सुविधान बिजली-पानी, न लड़िकन के पढ़ावे लिखावे के इस्कूल बा न अस्पताल बा, आ जहवां बा, ओइजा जाए खातिर रुपया चाहीं। ऊ पलिवार क खेवा-खर्चा चलवले में तंग बा। एही में अगर कवनो दैबी परिस्थिति, दुर्घटना आ बेमारी हो गइल त घर-दुआर, खेत-बगइचा पोसल पालल पसु-चउवा तक बिका जाई। गंवई सूदखोर अलगे ताक

में बइठल मिलिहन सऽ। कहे क मतलब ई कि सरकार का मनमानी आ अनेत पर, केंकियाए-चिचियाये तक के बेंवत आ हिम्मत ओकरा पास नइखे आ जेकरा लगे बा, ओकरा अपने से फुर्सत नइखे।

pquko dk ifgys ,d fpV~dh lqfo/kk] ,d ilj vljk vk [kq'kgky Hkfo"; dk ,d uhu liuk ij jh>s okyk lk/kkju ykx pquko dk cjk cgfd tkykA dq'kklu] v0;oLFkk] egxkbZ] Hk"Vkpkj] ?kkVkyk vk Ny&NgUrj ij Hkhrj dk mity [khl vk fdjk/k vk?kjh Hkqyk tkykA vxj gegu dk n'k ea vke tu eku] vke okVj dk bgs gky jgh r doukk jktuhfrd ny] dck lcd uk flf[kgs l·A

अब सरकार विदेशी पूंजी का जरिये विकास का नाँव पर कड़ा आ लोकविरोधी फैसला लेत खा ई नइखे सोचत कि एकर नतीजा उल्टो हो सकेला। एकर कारन इहे बा कि ओकरा पाछा, विरोध करे वाला बहुत लोगन क दबल-छुपल समर्थन आ सहमति बा। बिरोधी कहाये वाला कुछ लोग हर हाल में, ओकरे साथ आई। मौका देख के 'डील' करे वाला राजनीतिक दल आ सांसद, सरकार का संगे खड़ा बाड़न। लोग जियो चाहे मुओ, चाहे एक-एक चीजु खातिर तरसो, बदहाली का कगारे पर ना पहुँच जाव, ए कूल्हि से, एह दल आ नेता लोगन के कवनो मतलब नइखे। जनता के देखावे आ भरमावे वाला चेहरा अउर बा आ मौका ताड़ के फायदा कमाए वाली नीति अउर बा। जनता त जनता हऽ ओके समझा दियाई कि 'सम्प्रदायिकता' के रोके खातिर ई कूल्हि घोटाला, भ्रष्टाचार, महंगाई आ जनविरोधी फैसला मंजूर बा। साधारन लोग, भला ई छल-छहंतर आ राजनीतिक पैंतरा का बूझी ? बुझिये के का करी ? जबाब ना दीही। इयादो राखी त, वोट आवत आवत भुला जाई.....। नतीजा, फेरू बैतलवा डाल पर....

क्रमशः..........

●●●

fugkjk--

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि आ प्रकाशन सामग्री भेजे वाला भाई लोगन से ....

(1) **फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा टाइप कराके रचना–सामग्री आ साथ में संक्षिप्त–परिचय आ फोटो ग्राफ भेजीं। रचना अप्रकाशित होखे के चाहीं।**

(2) **पत्रिका में रिपोर्ताज (रपट), फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।**

(3) **पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं।**

(4) **संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं।**

●●●

विशेष अनुरोध –

अपना मातृभाषा के स्तरीय, कला संस्कृति आ भाषा–साहित्य के संरक्षा आ विकास खातिर, भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका ''पाती'' के सालाना सहयोग राशि भेजि के नियमित गॉहक/सहयोगी बनीं। सालाना सहयोग, डाक व्यय सहित रू0 130/– एकल भा सामूहिक रूप से नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर का साथ, मनीआडर भा ''ड्राफ्ट'' डा0 अशोक द्विवेदी, संपादक ''पाती'', बलिया के नाम से भेजीं। जवना भाई लोग के पास डाक से पत्रिका पहुँच रहलि बा, ओहू लोग से आगा सहयोग के उमेद पत्रिका परिवार करत बा। ●●●

थाती

['पाती' के पुरनका अंक में भोजपुरी आ ओकरा साहित्य के लेके १९७६ में दिहल आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के व्याख्यान छप चुकल बा। एह अंक में डा० उदय नारायण तिवारी के भाषन दिहल जा रहल बा जवन उहाँ का भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिला अधिवेशन (प्रयाग) मार्च १९७५ में अध्यक्ष का रूप में देले रहलीं]

भोजपुरी आ भोजपुरी साहित्य

❑ **(स्व0) डा0 उदय नारायण तिवारी**

आज हम अपने सभन के बहुत रिनी बानी कि हमरा के एह सभा के सभापति होखे के मोका आ सम्मान दिहलीं। 'भोजपुरी साहित्य परिषद्' प्रयाग का ओर मे ई 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' अइसना समय में हो रहल बा जब कि देस के बहुत भाग में राजनीति के तुफान आ बवंडर उठि खड़ा भइल बा। आजु चारों ओर खाली राजनीति आ रूपये-पइसा के संकट नइखे खड़ा भइल, बलुक सबसे बड़ संकट त ई बा कि आदमी के चालि-चलन, आचार-बेवहार बहुत नीचे गिर गइल बा। कवनो गॉव-नगर अइसन नइखे जहवाँ महँगाई, मिलावट, कालाबजार आ चोरबजार के बोलबाला ना होखे। जो सॉच पूछल जाय त हम कहब कि एह के बात सउँसे संसार में फइल गइल बा। भोजपुरियो इलाका, खास करके पूरूबी उत्तर प्रदेश आ पच्छिमी बिहार एकरा हवा-पीने से छूटल नइखे। इतिहास एह बात के गवाह बा कि देस में जब-जब एह तरह के संकट आइल बा, ई समूचा भोजपुरी इलाका चिन्ता से बेयाकुल होके बहुत-कुछ तियाग कइले बा। ई सबूत देबे के जरूरत नइखे कि इहवॉ के लोगन में देस-प्रेम के केतना लगन आ सरधा बा। सन् अठारह सौ संतावन के महाबली बीरबर कुँवर सिंह आ बहादुर सिरोमनि श्री मंगल पांडे जी से लेके सन् १९२०-२१, १९३०-३२ आ १९४२ के आन्दोलन में भोजपुरी के जेतना लोग बलिदान भइल, ओह सहीदन के एक-एक गॉव आ एक-एक नगर जुग-जुग तक ले याद करी। आजुओ हमरा पूरा-पूरा भरोसा बा कि देस के सामने कवनो तरह के संकट अइला पर ई टप्पा सबसे आगे बढ़ि के एकरा गौरव आ मरजाद के रक्षा करी।

भोजपुरी पच्छिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश आ छोटानागपुर के आपन मातृभाषा ह। ई भोजपुर, रोहतास, पलामू, सारन् चम्पारण, पच्छिमी पटना, मुजफ्फरपुर, पूरा गोरखपुर आ बनारस कमिश्नरी के जिलन में बोलल जाले। बिहार का राँची जिला में सदानी का रूप में जवन बोली बोलल जाजे, ऊहो भोजपुरी से बहुत मीलत-जुलत होले। मध्य प्रदेश का रायगढ़ आ सुरगुजा जिला क पुरूबी भाग भोजपुरिये ह। नेपालो का तराई का सात जिलन में भोजपुरी बोलल जाला। भोजपुरी एगो साहसी आ बीर लोगन के बोली ह, जेकर बोले वाला लोग भारत आ भारत के बाहरी दुनियॉ के हर क्षेत्र में मिलिहन। एही लगने हम ई बता दीं कि 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' नागपुर में जेतना बिदेसी लोग भाग लेवे खातिर पिछला जनवरी में बाहर से अइल रहस ऊ करीब-करीब सभे भोजपुरी बोले आ समुझे वाला लोग रहे। अपना देश के बड़-बड़े शहरन में जइसे दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, कानपुर व वगैरह में भोजपुरी लोगन के बहुत बड़ तयदात, बा आ ई सभ कहू बड़ा संगठित होके रहेला। ई कुल्हिये नगरन में भोजपुरी समाज, भोजपुरी परिषद्, भोजपुरी संसद, साहित्य परिषद् अइसन नॉव के संगठन कायम हो चुकल बा। अइसने कुल्हि संगठन के झंण्डा के छाया तर खास-खास तिहुआर पर बटुरा के लोग ओइजा आपस में गले मीलेला, खुसी मनावेला। ईहे ना, अपना बहुत से समस्या के बारे में लोग बूझो-बिचार करेला।

हम पहिलहीं कहली हाँ कि भारत के बाहरी भोजपुरी बोले वाला बहुत बिदेसी लोग बा। हिन्दी महासागर में मोरिशस, अउरी ब्रिटिश गाइना मतिन बहुत छोटे-छोटे टापुअन में भो. जपुरी लोग बसल बा। पूरा मोरिशस में बोले जाये वाली बोली 'क्रियोल' में भोजपुरी के बहुतायत सबद के बारे में उहॉ के रहवइया लोग खूब जानता। खास करके फ्रेंच आ भोजपुरी से मिलके ई ' क्रियोल' भाषा कहाला। मानुस-तन्तु-बिग्यान, भाषा विज्ञान का विचार से आजुओ एह टापुअन में भोजपुरी जाति का लोगन के सुभव आ भाषा के कुछ अइसन चलन मीलेला जवन कि अपना इहॉ खतम हो गइल बा। एह बातन से त ई बहुत साफ हो गइल, कि भोजपूरी बहुत दूर-दूर तक फइललि बा।

हम ऊपर जवना बाति-बेवहार आ नेति-नियम। गिरला

के जिकिर कइले रहली हॉ, ओपर विचार विचार कइल जाई त मालूम हो जाई कि एकर खास कारन पढ़ाई के ढंग आ विषय वस्तु का साथ-साथ पढ़ाई के भाषा के कठिनाई बा। हमहन के सुराज मिलले आजु सताइस बरिस होता, बाकिर अब तक ले देस में एगो राष्ट्रभाषा के हर जगह नइखे मानल जातं आजु देस के सभे भाषा, अँगरेजी के बोझ से दबा गइल बाड़ी स। अँगरेजी राज के खतम भइला के बाद ई बात जरूरी रहे कि अपना तरक्की आ विकास में लागल बाहरी मुलुकन का तरह अपनो देस में पढ़ाई लिखाई के तौर-तरीका अउरी सरकारी भाषा में बदलाव आवे आ एह देश के एगो अइसन भाषा होखे जवन पूरा देस के भाषा कहाय आ सभे देस बासी एपर घमंड से आपन माथा ऊँच कर सके बाकिर बहुत दुख के साथ कहे के परत बा कि एह ओर हमनी के कोसिस जेतना होखे के चाहत रहे ओतना ना भइल, आ ना त होता। एसिया में चीन, जापान, इन्डोनेसिया, कोरिया, स्याम, आ लंका में शिक्षा के संगे सासन के भाषा ओही देस के आपन भाषा ह। चाहे दोसर देस, ओकरा भाषा के बोले-समझे के गियान राखत होखे भा ना राखत होखे। अपना देस में बिदेसी भाषा के जरिये शिक्षा दिहला से, पढ़ाई-लिखाई महंगा त होइये गइल बा, संगे संग करोड़न बिद्यार्थियन के तेज दिमाग आ बुद्धि दबि के माटी हो रहल बा। इहे कारन रहे कि महतमा गॉध ी जी देस के पौरूख जगावे खातिर कई तरह के ठोस काम हिन्दी के जरिये करे में आपन दिमाग लगवले।

आजादी मिलला का बाद कानूनन हिन्दी के राजभाषा के जगह मिल गइल अरी २६ जनवरी सन् ६५ से त ई पूरे तरह से आपन जगह पा गइलि। अंगरेजी के बेवहार तब तक के वास्ते मीलल बा जब तक कि देस कि देस, हर राज्य हिन्दी के सरकारी काम-काज में ना अपना ली। बाकिर ई एगो अइसन ढिलाई के बात बा कि एकरा में सचहूँ अबहीं बहुत समय लागी। भोजपुरी टप्पा त सुरूए से हिन्दी के अपना के ओकर पूरा-पूरा गॉव आ नगर मे सगरो बेवहार कइ रहल बा। खुशी के बात बा कि अबहीं हाले में प्रदेशन का सबसे बड़का कोर्ट (जइसे मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश आ राजस्थान वगैरह) में अब फैसलो हिन्दी मे लिखाये लागल। गैर-हिन्दी प्रदेशन वालन के ई कहनाम बा कि हिन्दी भाषा भाषी लोग पहिले कुल्हि काम हिन्दी में काहे नइखन करत। एह बात पर सचहूँ हमरो आ रउरो सबके सोचे के जरूरत बा।

उत्तर भारत में हिन्दी से मिलत-जुलत बहुते भाषा बाड़ी स जवना में हम पंजाबी, सिन्धी आ कश्मीरी वगैरह के गिन सकीला। बाकिर हिन्दी के सबसे निगिचा उत्तर भारत का अउरी भषन में हम नीचे बतावल सभे भाषा के लेतानी आ मिलान का बिचार से सबके चार वर्ग में बाँटतानीं (१) बाँगरू, ब्रज आ गढ़वाली (२) मारवाड़ी, मेवाती आ राजस्थानी (३) अवधी, छत्तीसगढ़ी आ जनपद के खड़ी बोली (४) मैथिली, मगही आ भोजपुरी। बघेलखडी अवधिये में राखब आ ओही तरे कनउजी के भेद रहलो पर ब्रज राखब। एहमें बनावट का खियाल से हरियानवी, ब्रज आ बुन्देलखंडी एक वर्ग में अउरी राजस्थानी, मारवाड़ी, पहाड़ी आ मालवी दोसर वर्ग के बाड़ी स। अवधी आ छत्तीसगढ़ी तिसरा वर्ग के भाषा ह, मैथिली भोजपुरी आ मगही चउथा जगहा पर आई। करीब-करीब बहुत आदमी जवना में कुछ भाषा-विग्यान के लोग बा एह सबके हिन्दिये क बोली मानेला। सॉच बात त ई बा कि भाषा आ बोली के फरक साफ-साफ अलग करे वाली रेखा नहखे। धरम आ राजनीति के सहारा आ बल पाके कवनो बोली भाषा बन जाले। कश्मीरी आ पंजाबी एही तरह के बोली हउए जवना के आज कानूनन चउदह भषन मे जगहा आ मान्यता मिल गइल। भारत में हम ऊपर के बयान कइला में भाषा के बोली कहीं चाहे भाषा, एमें कवनो फरक परे वाला नइखे। कुछ लोग ई समझेला कि एह सब भाषा के हिन्दी के बोली मान लिहला से हिन्दी एगो मजबूत भाषा कहाये के अधिकार पा जाई। बाकिर ई खाली भरम कहाई। हिन्दी के तागत त एह में होई कि ओकरा से अलग अलग कुल्हि बोलिन के तागतवर बनावे खातिर उहॉ के लोगन के कुछ करे के चाही। ओकरा के आपन मातृभाषा के रूप में बढ़ावे के चाहीं। आज संसार के भाषा के रूप में अंग्रेजी आ रूसी भाषा के एही से इज्जत बा कि इनहन के दुसरो भाषा बोले वाला लोग अपनवले बा। रहि गइल भोजपुरी के बात, त एहिजा के लोग सूरू से हरदमें हिन्दी के पछपाती आ प्रेमी ह। जवना घरी भोजपुरी क्षेत्र में खड़ी बोली हिन्दी के मान-मर्यादा ना रहे ओह घरी इहवॉ काब्य-भाषा का रूप में ब्रज के चलन रहे। बाकिर जइसहीं अठारहवीं सदी के अंत आ ओनइसवीं सदी का सूरू में सब लोग गद्य खातिर एक भाषा के जरूरत समुझल, भोजपुरी भाषा के लोग एहू काम में सबसे आगे आइल।

एह सम्बन्ध में ई बतावल जरूरी बा कि देस में जवन

चारिगो बड़का गद्य के लीखे वाला विद्वान लल्लू लाल, इंशा अल्ला खॉ, मुन्शी सदासुख लाल आ पंडित सदल मिसिर के नॉव लीहल जाला ओमें से पं० सदल मिसिर जी भोजपुरी बोलेवाला रहलन। उहॉ का बिहार में आरा के रहे वाला रहीं। उनकर गद्य एतना जोरदार होत रहे कि आज के खड़ी बोली के ऊ रीढ़ कहाई। सॉच कहल जाय त हिन्दी गद्य शैली का क्षेत्र में पं० सदल मिसिर के मोल आज ले केहू ना बूझल। हमारा त कहनाम ई ह कि आज के हिन्दी कलकत्ता से चलि के बनारस आ प्रयाग आइलि आ उहे धीरे-धीरे पश्चिम का ओर बढ़ि गइलि। एह बात के जनलो पर कि ओह हिन्दी के आधार एकदम पच्छाहीं ह, तबहियों ओके आगे बढ़ावे आ मजबूत बनावे में पूरब के लोगन में भोजपुरी लोग जौन मदद कइले ऊ इतिहास में सोने का अक्षर में लिखाई। भारतेन्दु से लेके हरिऔध, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य शिवपूजन सहाय आ राहुल सांन्कृत्यायन मति न हिन्दी के सेवा करे वाला लोगन के काम केहू ना भुला सकेला। सांच पूछी त हिन्दी पूरा एशिया के भाषा ह। संसार मे चीनी आ अंग्रेजी बोले वाला लोगन के गिनती का विचार से हिन्दी तीसरा नम्बर पर बा। इ दुर्भाग के बात बा कि हमनी के राजनीति में एतना कमजोर बानी जा कि राष्ट्रसंघ के भषन में एके जगह ना मिलल।

ई भोजपुरी लोगन के गर्व बा कि बहुत पहिले से एह अनमोल हिन्दी भाषा के अपना पढ़े-लिखे आ शिक्षा के भाषा बनवले बा। एपर जे लोग हिन्दी आ भोजपुरी में कवनो विरोध समझेला ऊ सच्चाई के समुझला से अहुत दूर बा। एह तरह हिन्दी अउरी उत्तरी भारत के बोलिन का चरचा में एगो बाति इहो बता दिहल चाहतानीं कि हमरा देस में राजनीति के असर एतना जियादे बा कि हमनी के धियान सब बोलियन का गुन-महत्व पर जाते नइखे। असल में हरियानवी, ब्रज, अवधी, छत्तीसगढ़ी, मगही, मैथिली, भोजपुरी आ बिहार के अंगिका आ बज्जिका, अइसन बोली ना ह, जवना के खाली हिन्दी के बोली कह दिहला से समस्या सझुरा जाई। उपर बतावल चारि वर्गन का (बोली चाहे भाषा) शिक्षा-दीक्षा के भाषा हिन्दिये बा, तवनों पर एह इलाकन में हिन्दी के शिक्षा कइसे देबे के चाहीं, एह विषय पर आजु ले ना त हमहन के आ ना त सरकारे के धियान गइल। राज-सरकार त एह ममिला में मैभा वाला बेवहार करते बिया। दिल्ली में हिन्दी के बढ़ंती पर विचार करे खातिर एगो संसद के लोगन के मंडल बा जवना के एगो सदस्य श्री गंगाशरण सिंह जी बानीं। लोकसभा के बहुत सदस्य लोग ई समझेला कि जेतना जोरदार आ महत्व के बोली हई स, अब ऊ कुछुवे दिन के मेहमान बाड़ी। अउरी उन्हनी का जगह पर जल्दिये हिन्दी आ जाई। बांकिर अइसन भइल संभव नइखे। अंगरेजी अइसन बलवान भाषा के रहले आजुओ वेल्स अउरी आयरलैंड के लोग आपन धरती के बोली 'केल्टिक' के बेवहार करेला। जब प्रिन्स आफ वेल्स दीक्षान्त-समारोह का मोका पर वेल्स यूनिवर्सिटी में जालन त उनका लचार होके पहिले 'केल्टिक' भाषा में कुछ बोलहीं के परेला। संसार के सबसे जियादा बली भाषा अंग्रेजी जब अतना कमजोर भाषा 'केल्टिक' के ना मेटा सकलि, त ई कइसे केहू उमेद करता कि इहां के क्षेत्रीय बोलियन के २०-३० बरिस में हिन्दी मेटा दी? एह उदाहरन से भारत सरकार आ राजसरकारन के ई कुल्हि बोलिन के असलियत के समझे के परी। एहू बोलियन के साथ प्रेम से विचार करेके परी। साथ-साथ हिन्दी के पढ़े-पढ़ावे में नया तरीका आ नया रास्ता अपनावे के परी। एकरा खातिर हमार दू गो सुझाव बा।

भाषा के जवन चारि गो वर्ग बतवली हां ओह क्षेत्र में हिन्दी पढ़ावे के जवन काम हो रहल बा, ऊ तरीका ठीक नइखे। एकरा पीछे जरूरी बा कि एह क्षेत्रन के बोली आ हिन्दी भाषा के ताल-मेल से पढ़ाई-लिखाई, कुछ खास भाषा-विग्यान के जानल मानल विद्वान लोगन से करावे के चाहीं। एह क्षेत्र का भाषा-भाषी लोगन के हिन्दी पढ़े-पढ़ावे में जो मुश्किल परत होखे त ओकरा के हल करे खातिर प्राइमरी आ सेकेन्डरी स्कूल का शिक्षकन के भाषा-शिक्षा का विचार से ओह विषय पर शिक्षा दीहल जाय। एकर नतीजा ई होई कि लोग बहुत थोर समय में हिन्दी लीखे आ बोले सीख जाई। हमरा देस में आजुओ अनपढ़ लोगन के तयदात बहुत जेयादा बा आ जबले अइसने हाल रही तबले हमनी का असल में न त प्रजातंत्र के माने वाल कहा सकीले आ न ता आजादी के कवनों फायदे उठा सकीला आ एहसे ई जरूरी बा कि दुसरका तरीका से सब अनपढ़ लोगन के पढ़ाई करावल जाव।

एह बारे में हमार सुझाव ई बा कि ऊपर बतवला मोताबिक चार वर्गन का क्षेत्रन में नागरी लिखावट के परचार कइल जाय आ अनपढ़ लोगन में ओकर अभ्यास होही बोली में पढ़े वाली किताब तैयार कराके दीहल जाय। ई भागि के बात

बा कि एह सब बोलिन के क्षेत्रन में बहुत विद्वान गद्य आ पद्य के लिखे वाला मौजूद बाड़न। एह विद्वानन का किताबन के परचार-परसार से निरक्षरता कुछुवे बरिस में हटावल जा सकेले। असल में शिक्षा में ई दूनों जो साथ-साथ चलसु त एक ओर जहवां हिन्दी के चउतरफा परचार आ परसार हो जाई, उहवें लोग हिन्दी के थोरहीं समय में सीख लीही आ देस से जल्दिये निरच्छरता दूर भागि जाइत। एह तरे भाषा पढ़ावे के दू गो ढंग हो जाई। एगो लइकन खातिर आ दूसर बड़ लोगन खातिर। भोजपुरी एगो बीर आ बहादुर जाति के भाषा भर नइखे, बलुक एकरा में गंभीर आ ऊँच गद्य-पद्य साहित्य के रचना हो रहल बा। पिछिला १९७२-७३ में भोजपुरी इलाका से बाहर इहाँ प्रयाग में 'भोजपुरी कवि सम्मेलन' जवन भोलानाथ गहमरी जी करवले रहनी ऊ बहुते सफल भइल आ एहू नगर में ओकर बड़ी चरचा रहे। अवधी आ ब्रजभाषो में अइसने सफल कवि सम्मेलन सुने में आवत रहेला। आजु एहू लोक-भाषा के कवि सम्मेलन के, दिल्ली, कलकत्ता आ बम्बई के लोग बहुत आदर आ प्रेम से सुनि रहल बा।

ए तरे जइसन कि पहिले बतावल गइल ह, भोजपुरी के गद्य-पद्य दूनों में साहित्य बहुत सुन्दर आ धनी हो रहल बा। पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय 'अँजोर' (पटना) के सम्पादक भोजपुरी भाषा के परकासित साहित्य के एगो सूची तैयार करवले बानी। ओमें भोजपुरी में लीखल केतना काव्य, महाकाव्य, नाटक, उपन्यास, लेख, कहानी आ कई तरह के रचनन के नाँव बा। भोजपुरी खातिर ई गौरव के बात बा कि श्री स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी भोजपुरी में 'बउधायन' (बौध-लीला) महाकाव्य के रचना कइनी हँ, जवन जल्दिये छपे वाला बा । सभके ई जानि के खुशी होई कि रामायन मतिन ग्रन्थनों के रचना भोजपुरी में भइल बा। एह तरे भोजपुरी के गद्यो के बढ़ावे आ सम्मान दिआवे में पं० गणेश चौबे, डा० विवेकी राय, चतुरी चाचा, स्व० आचार्य महेन्द्र शास्त्री आ बहुत कहानी उपन्यास लिखे वाला लोग बा जे दिन रात एह में लागल रहल। स्व० बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, पं० राहुल सांकृत्यायन आ कविवर मनोरंजन जी के लगन अउरी महान रचना खातिर हरमेसा याद कइल जाई। एह सिलसिला में हम जमशेदपुर का भोजपुरी भाषा-सेवकन के आ आरा के श्री रघुवंशनारायण सिंह के भोजपुरी सेवा खातिर साधुवाद दे तानीं। बनारस के 'भोजपुरी संसद' के सेवा आ मदत जेकर थापना में स्व० डाक्टर स्वामीनाथ सिंह जी के खास हाथ रहे, हमेशा याद कहल जाई। ऊहाँ का साँस रहते दम तक कई किताबन के छपवा-छपवा के भोजपुरी साहित्य के बढ़ावा दिहनीं आ आजु के 'भोजपुरी कहानियाँ' के जनम उनहीं के देले हई। ई कुल्हि लोगन के अलावा जे-जे सेवक लोगन के नाँव हम नइखीं ले पावत, ओहू सबके तियाग तपसिया खातिर हमनी का रिनी बानी जा ।

हम सब लोगन क भोजपुरी के बढ़ंती खातिर बराबर कोसिस करत रहे के चाहीं। करीब सात-आठ करोड़ लोगन के ई भाषा, जवना के संसार के हर कोना में बोलल जात बा, साहित्य-अकादमी से अबतक मान्यता ना मीलल, एकरा के हम अपने कमजोरी समझतानीं। आजु एह सभा के खुसी बा कि 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के थ. ापना पटना में हो चुकल बा, जवना का पहिलका अधिवेशन में रउवा सभे इहाँ इकट्ठा भइल बानीं। अब मीलि-बइठि के एकरा के आगे बढ़ावे में सबके जुटि जाये के चाहीं। एकरा खातिर सरकार से एक्को पइसा के मदत लीहल एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ठीक ना होई। काहें कि जहाँ सरकारी पइसा आई, उहाँ सम्मेलन सरकारी हो जाई आ सरकार से मदत मिलला से लोगन में गुटबन्दी हो जाई। हमनी का चाहीं कि बीसन लाख लोगन के एक-एक रूपया के सदस्य बनाई आ ओसे मीलल धन से भोजपुरी कथा साहित्य, काव्य, नाटक, एकांकी आ बेयाकरण के सुन्दर किताब-पोथी छापल जाय । धन के कमी से भोजपुरी के बहुत से किताब अच्छा ढंग से छपि नइखी स पावत, ई बड़ा हँसी आ दुख के बात बा।

अपने सभ हमार बात एतना देर से मन लगा के सुनली, एकरा खातिर हम बहुत रिनी बानीं। आजु इहवाँ सभा करवला, सबके एक जगह जुटवला के आ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एह नगर में मंच दिहला खातिर एकर आयोजक लोगिन के, जे बहुत तकलीफ उठावल, दिन-रात दउढ़-धूप कइल, ओह सबके हम अपना ओर से आ रउरी सभ के ओर से बहुत-बहुत धनिबाद देत बानीं ।

●●●

भोजपुरी के भौकाल आ ओकर वर्तमान स्थिति

❑ डा0 ओम प्रकाश सिंह

कई बेर मन सोचि के बेचैन हो जाला कि भोजपुरी ह का? एगो भाषा, संस्कृति, संस्कार आ कि अपना के चमकावे वाला पालिश. अगर भोजपुरी भाषा हियऽ त एकरा के बढ़ावे के, समुझे के, सुधारे के कोशिश होखल चाहीं. अगर संस्कार ह त आपस में बोले बतियावे, सभा संगठन में एकर सम्मान होखे के चाहीं. बाकिर अइसन त कतहीं लउकत नइखे. हो सकेला कि अइसन होखत होखे आ हम एहसे अनजान होखीं. काहे कि आजु का दुनिया में एगो छपाई वाला मीडिया बा त दोसरकी टीवी आ सिनेमा वाली. तिसरकी मीडिया हवे नेट वाला. भोजपुरी के छपाई वाला मीडिया में बहुते काम होखत बा; बाकिर काम के दायरा बहुते छोटहन बा. बस अपना जान पहिचान के गोल से बाहर नइखे निकल पावत ऊ काम. अगर केहू ओह काम का बारे में जानलो चाही त कवनो साधन नइखे जवना से जानल जा सके. टीवी आ फिलिमो का माध्यम से भोजपुरी में बहुते काम होखत बा. बाकिर एह में भोजपुरी के चिन्ता कम अपना कमाई के चिन्ता बेसी बा. रहल बात नेट के, त एह बारे में हम अतने कहब कि जे लिखेला से नेट ले ना आ पावे आ जेकरा आवेला ऊ सुबहित लिख ना पावे.

आजु से नौ साल पहिले हम अँजोरिया डाटकाम के शुरुआत कइले रहीं. ओह दिन कवनो वेबसाइट अइसन ना रहे, जहवाँ भोजपुरी में भोजपुरी के चरचा होखत होखो. कुछ ग्रुप, कुछ वेबसाइट जरूर रहली सँ, जहवाँ भोजपुरिया जमात जुटत रहुवे आ भोजपुरी के चरचा होखत रहुवे बाकिर सब कुछ अंगरेजी में. एह नौ साल में कुछ अउरिओ वेबसाइट अइली सँ। कुछ के काम आ प्रभाव बहुते बढ़िया रहल त कुछ आपन आपन गोल बनावे में लाग गइली सँ. कुछ आजुवो लागल बाड़ी सँ, अपना काम में त कुछ हार थाक के बिलाए का कगार पर बाड़ी सँ.

एह बीच एगोबात जवन खास तौर पर देखनी ऊ ई कि भोजपुरी के बात भोजपुरी छोड़ हिन्दी आ अंगरेजी में करे के प्रचलन घटत नइखे, बलुक कहीं त बढ़ले जात बा. जब से भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के बात चलल बा तबसे त अउरी भौकाल मचा दिहले बावे लोग. सभकर इहे दावा बा कि भोजपुरी के जवन कुछ मिलत बा, तवना का पाछा बस उनहीं मेहनत रहुवे ना त कुछ ना मिलित. अधिकतर, कहे के त चाहत बानी कि सगरी, संस्था आ व्यक्ति जे भोजपुरी के नाम पर काम करे में लागल बा, ऊ आपन सगरी विज्ञप्ति आ प्रेस नोट हिंदी भा अंगरेजी में जारी करत बा. अंगरेजी में कम, हिंदी में ज्यादा. मानत बानी कि एहसे मुख्य धारा के मीडिया में हवा बनावे में सहूलियत होखेला बाकिर अगर ओह विज्ञप्ति भा प्रेसनोट के मूल रुप से भोजपुरी में जारी कइल जाइत आ ओकर हिंदी अनुवाद साथही दे दिहल जाइत त कामो हो जाइत आ भोजपुरी के मानो रह जाइत. संसद विधानमंडलन में भोजपुरी में बोले पर कवनो संवैधानिक रोक नइखे बाकिर कवनो सांसद भा विधायक भोजपुरी में ना बोलसु. या त उनुका गलतफहमी बा कि भोजपुरी में बोलल गलत कहल जाई या ऊ अपना के असहज मानेलें भोजपुरी बोले में.

दोसर छपाई के दायरा दिन पर दिन सीमित होखला का चलते अतना दिन बादो भोजपुरी लेखन में एकरूपता नइखे आ पावल. कुछ प्रकाशन जरूर बाड़ी सँ जवन अपना सीमित दायरा में एगो मानक शैली विकसित करे के कोशिश करेली सँ. शैली एहसे कहत बानी कि व्याकरण कहल गलत हो जाई. हर प्रकाशन आपन एगो शैली विकसित करेला आ करहू के चाहीं बाकिर कुछ प्रकाशन अइसन बाड़न सँ जवन एह दिसाईं बहुते लापरवाह बाड़न सँ आ जवने मिलल तवने के छाप दिहल जात बा. एहसे भोजपुरी के नुकसान होखत बा. भोजपुरी फिलिम हिंदी फिलिमन का फूहड़ नकल का फेर में भोजपुरी नइखे रह जात. ओकर भाषा आ संवाद सुन के कहल मुश्किल होखी कि ओकर भोजपुरी कवना इलाका के बा. निर्माता आ निर्देशकन के गैरभोजपुरिया होखला का चलते आ अधिकतर काम गैर भोजपुरी इलाका में होखला का चलते एह फिलिमन में भोजपुरी के असल स्वरूप माने लायक नइखे रहि जात.

कई बेर चरचा चलावे के कोशिश कइनी कि कुछ भोजपुरी विद्वान मिल बइठसु आ भोजपुरी के एगो सहज आ सर्वमान्य ना सही बहुमान्य मानक विकसित कइल जाव. बाकिर हर कोशिश बेकार साबित भइल. केहू का लगे अतना फुरसत नइखे कि ऊ भोजपुरी के मानक क बात करो. ओकरा त आपन बयान, आपन लेख, आपन समाचार, आपन फोटो छपवावत रहे के बेचैनी बा. कुछ भोजपुरिया महामानव त एह दिसाईं अतना सचेत रहेलें कि आपन फोटोग्राफर ले, अपना

संगे राखेलें भा कवनो ना कवनो फोटोग्राफर से सांठगाँठ बना के राखेलें. बाकिर भोजपुरी के हित चिन्तन उनुका सोच का दायरा में ना आ पावे. हर सभा समारोह सम्मेलन में तरह तरह के अवार्ड आ पुरस्कार के मोलभाव चलत रहेला भा 'तू हमार सुघराव हम तहार सुघरा देत बानी' वाला अंदाज में लेनदेन चलत रहेला. तूं हमरा के अवार्ड द, हम अपना सम्मेलन में तोहरा के सम्मानित कर देब.

एह लेख में हम जानबूझ के केहु के नाम नइखीं लेत. काहे कि, केकर केकर लीहीं नाम, कमरी ओढ़ले सगरी गाँव. एकाध गो अपवाद छोड़ दीं त सभकर इहे हाल बा.

सबले बड़ समस्या बा कि आजु भोजपुरी में जवन साहित्य रचात बा, तवना के पर्याप्त प्रचलन नइखे होखत आ जवन साहित्य रचात बा तवन सगरे छवले बा. एह साहित्य के परिभाषा हालही में सुधीर पचौरी के लेख से मिलल कि साहित्य वाह वाह आ वाहियात का बीच के चीझु ह. आजु के नवही पीढ़ी नेट पर बेसी जाले आ ओहिजा जवन लिखात पढ़ात बा तवना में से अधिका के साहित्य के दर्जा में राखल जा सकेला. जवन माहौल बनल जात बा तवना में अब साहित्य से बेसी चरचा वाहित्य के होखे लागल बा.

पुरनिया लोग कह गइल बा कि जवना समस्या के समाधान ना लउके तवना के यथार्थ मान लेबे के चाही, जीवन के सत्य मान लेबे के चाहीं. एहसे अगर हम खाली समस्या के चरचा कर के रहि जाएब त ई ठीक ना कहाई. एहसे कुछ समाधानो के चरचा करल चाहब. ई लेख मूलतः वाहित्य के दरजा वाली बा बाकिर एकरा के जान बूझ के साहित्य का मंडली में पेश करत बानी. भोजपुरी साहित्यकारन से, प्रकाशनन से हमार निहोरा इहे बा कि रउरा सभे अपना सीमित दायरा से बाहर निकलीं. भोजपुरी के इलाका बहुते बड़हन बा, दूर दूर ले पसरल बा. एह बड़हन दायरा में छपाई वाला प्रकाशन के पसरावल बहुते मुश्किल काम बा आ खास कर के तब जब एकरा से कवनो आर्थिक फायदा नइखे होखे वाला. अधिकतर रचना आ प्रकाशन स्वांतः सुखाय होखत बाड़ी सँ त काहे ना एकर दायरा बढ़ा लिहल जाव. दायरा बढ़ावे में या त कवनो खरचा नइखे, या बा त नाम मात्र के. सगरी ना त अधिका साहित्यकारन का घर परिवार में अइसन नवही जरूर होखीहें जे नेट पर आवाजाही राखत होखीहें. ओह लोग के सहयोग से अपना रचना आ प्रकाशन के दुनिया भर में चहुँपावे के कोशिश करीं. अगर स्वतंत्र रूप से कुछ नइखीं कइल चाहत त अँजोरिया के भेज दिहल करीं. पिछला कई अंक से भोजपुरी दिशा बोध के ई पत्रिका पाती के अँजोरिया पर दिहल जात बा आ बहुते लोग एकर फायदा उठावत बा. अगर रउरा चाहीं त अपना प्रकाशन के आपन वेबसाइट भा मुफ्त ब्लाग बनवा लीं आ ओह पर आपन रचना दिहल करीं. एहसे भोजपुरी के दायरा बढ़ी आ गँवे गँवे एगो मानक स्वरूप विकसित होखे के माहौल बनी..

ओमप्रकाश सिंह भोजपुरी के पहिलका वेबसाइट अँजोरिया डाट काम के प्रकाशक आ संपादक हउवें. इनकर लिखल एगो साप्ताहिक स्तंभ हर अतवार के कलकत्ता के मशहूर हिंदी अखबार सन्मार्ग में पिछला डेढ़ साल से छपत बा. एह स्तंभ में भोजपुरी भाषा के बारे में बतकुच्चन होत रहेला. बाकिर एह सबका बावजूद ई अपना के साहित्यकार ना मानसु. कवनो किताब नइखन लिखलें, छपल त दूर के बात बा. बाकिर पिछला नौ साल से लगातार भोजपुरी के सेवा जरूर करत बाड़ें. इनका से anjoria@outlook.com पर संपर्क कइल जा सकेला। ●●●

---

if=dk feyy--------

१. 'भोजपुरी माटी' (अग०१२), पश्चिम बंग भोज० परिषद् २४ सी, रवीन्द्र सरणी, कोलकाता- ७०००७३

२. 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका (जून २०१२), प्रोफेसर कालोनी, मुहम्मदपुरलेन, महेन्द्रू, पटना-०६

३. 'सुलभ इन्डिया' 'सुलभ-ग्राम' महावीर इन्क्लेव, आर जेड-८३, पालम-डाबड़ी मार्ग, नई दिल्ली- ११००४५

४. 'परिछन' (अप्रैल-सित० ११), मैथिली भोजपुरी अकादमी, समुदाय भवन, पदमनगर किशनगंज, दिल्ली-११०००७

५. 'लुकार' (नवं० २०११) 'निर्भीक संदेश' (नवं० २०११) जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, होल्डिंग-१०२,
जोन-११, बिरसानगर, टेल्को जमशेदपुर-८३१००४ (झारखंड)

●●●

भावना बूझत बानी

(संदर्भ : भोजपुरी भाषा के मान्यता पर चिदम्बरम् जी के बयान)

❑ राजगुप्त

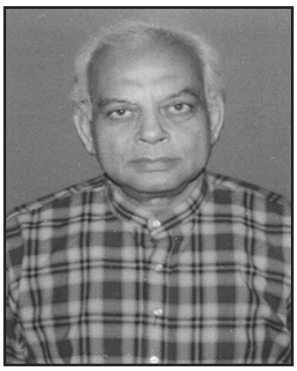

अपना गृहमंत्री चिदंबरम् बाबू के संसद में भोजपुरी बोलल सुनि के करोड़न भोजपुरिहन भाईन के नीक लाग ह, एकर कवनो पैमाना हमरी लगे नइखे। बाकिर किरिया खा के साच बाति हम कहतानी कि हमरा उनकर बाति ना रुचल ह, ना पचल ह। जिनिगी भर एमपी रहे वाला नामी गिरामी रहि गइले। बाकिर केहु के कान पर ढोलक ना बाजल। दामोदर स्वरूप सेठ, जवन उत्तर प्रदेश में कांग्रेस अध्यक्ष रहले, जिन कहले रहले कि मातृभाषा में सरकारी काम ना होई तबले देश के तरक्की के राहि साफ ना हो पाई। पुरनका लोग लड़ते रहि गइल कुछ हाथे ना लागल। पुराने चाउर पंथ कहाला, ओकरा बादो निज भाषा के टीका माथे ना लागल।

बाबा रामदेव के सभा के भीड़ि गवाह बा कि उनकर बाति श्रद्धालु केतना सरधा से सुनेले, बाकिर नेता लोगन के उनकर बाति इचिको ना सुहाला। अन्ना जी बहुत कुछ कहले रहले, सभे सुनल। बाकिर उनकर बाति कुछ लोगन के बहुते बाउर बुझाइल। कुछ लोग उनका विरोध में जउरिया गइले। एक सूर से कह लगले कि केहू के संसद के गरिमा पर कीचड़ फेके के अधिकार नइखे। बाति त साफ बा भाई। वोट के जमाना बा। जहवाँ लाखन आदमी वोट देले एक आदमी के आपन बहुमत देले होखे, ओकरा के केहू खराब कइसे कहि दी ? मोकदिमा चलो, कइयो बरिस चलो, का फरक पड़ी ? जबले अदालत दोसिहा ना कही, केहू दागी ना कहाई। कोढ़िया के थुकला से डेराये वाला जमाना अब ओरा गइल। मानऽतानी एगो ऊ जमाना रहे, जब पत्रकार, पुलिस आ अफसर से लोग-बाग डेरात रहे। आजु काल्हु सदेहे सब भिड़ि जाता। सड़क जाम कइ के गाड़ी-घोड़ा फूँकि-ताप देता।

बाबा के बाति के समरथन कइल कवनो बेजायँ ना कहाई, काहे से कि शून्य काल में कबो कबो संसद-हाल खाली-खाली लउकेला। अइसना में केकरा जिम्मेदारी के दुहाई दियाई ?

भावना में बहिये के ओह जमाना में जनता उनका के बहुमत से जितवले रहे। जवना के नतीजा भइल कि उहां का नामी गिरामी कालीदास मार्ग आम जन खातिर बन्द करा दिहलीं। सज्जी विरोधियन के मुँह पर जाबी मारि दिहलीं। उनका जमाना में लोगन के थरहरी डोल जात रहे, अच्छा-अच्छा के बोलती बन्द हो जात रहे। इचिकी सा गलती में अपना मंत्रियन के जेल भेजवा दिहली। तनिका सा उरेबा पर घर से बहरिया देत रहली। अउरी ना त नामित पुरस्कारन पर लगाम लगा के साहित्यकारन के साहित्य-सृजन पर एकट्टे ताला हनि दिहली। जनभावना बूझि के ऊ बदलि गइली। सुराज के बासठ बरिस बाद भोजपुरी के भावना बुझला खातिर राउर बलिहारी बा। बहुते समुझलीं, कुछ बुझलीं तऽ ? जाने के बाति बा कि भावना बूझे में महतारी आगे बाड़ी सऽ, जवन समय से पहिले भावना बूझि के लड़िका के मुँहे दूध लगा देली सऽ। समय से तेयार क के लड़िकन-फड़िकन के इसकूले भेजि देलीसऽ।

कहे के त बहुते बड़ाई बाकि मन से पुकारीं त हाथी के बचावे खातिर भगवान आपरुपी प्रगट हो जइहे। बाकिर संदेह होता। करोड़न के दिल पर राज करे वाला पूजनीय बाबा जयगुरूदेव अपनी चलती में चुनाव हारि गइल रहले। एही कारन से अन्ना आ बाबा रामदेव चुनाव से भागल फिरेला लोग।

एकरा बादो ए साहेब, रउरा के हम ई बतावल चाहत बानी कि हमार भाषा केहू के मोहताज नइखे। भीखि मांगे के ओकरा साध नइखे। एतना मीठ भाषा दुनिया के गली-गली में बोलल जाला। खाली बोलले ना जाला, बलुक भोजपुरिहा जंगलो में रहिहे त सज्जी धरम निभावत रहिहें, तीज-त्योहार मनावत रहिहें। ई भोजपुरी के जिये वाली संस्कृति हऽ।

विश्वविद्यालय स्तर पर जवना भाषा के पढ़ाई होत होखे, जवना भाषा में एतना पर्यायबाची शब्दन के भरमार बा कि ओकर जोड़ खोजल मोश्किल बा। जवना भाषा में एतना सा. हित्य रचल जात बा, जवना भाषा के एतना पुस्तक आ पत्रिका होखे, जवना के लोग पढ़ि-पढ़ि अघात होखे, जवना भाषा में एतना लटका-झटका वाला फिलिम बनत बाड़ी स कि हिन्दी आ अंगरेजी फिलिमन के मात क दे ताड़ी स। दिग्गज दिग्गज अभिनेता आ अभिनेत्री भोजपुरी सनीमा में काम करे के तरसत

बाड़े। अइसना में आगा चलि के बुझाई, ठाकरे साहेब के समुझे के पड़ी कि भोजपुरियन के गरिअइहें कि पुजिहें। राजठाकरे साहब समझस भा ना, राजनीति वाला बूझत बाड़न सऽ।

जवना भाषा में कुछ लाख लोग बोले वाला बाड़े ओकरा के मान्यता मिल गइल आ जवना भाषा के करोड़न बोले वाला बाड़न, सउँसें संसार में जवना के रस्मो-रिवाज धरम निभावल जात होखे, तीज त्योहार मनावल जात होखे, जवना भाषा के आपन प्रथम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभाध्यक्ष होखे अउरी ना त पूरा देशे जवना भाषा के होखे, अइसना में रउरा कहिया तकले टरकाइब ? टिटिहरी से असमान अड़ाई ? हमनी के भावना से खेलवाड़ होत आइल बा, कहिया तकले होई, एकर कवनो गिनती नइखे। बिगड़ल बाति बिसारि के आजु रउवा हमनी के भावना बुझलीं हऽ। एकरा खातिर कोटि-कोटि परनाम। भोजपुरिया समाज के बल बेंवत बुझली तऽ !

ए चिदंबरम् बाबू, रउरा त भावना बूझि के भाषा के आदर दिहलीं ह, बाकिर आजु-काल्हु भावना बुझला के बादो, दहेज खातिर पतोहि के जारि दिआता। भावना बुझला के बादो बिजुली मिले लागे त कटौती काहे होई ? ना त काम सीवरेज के रुकित, नाहीं गंगा माई मइल होखती।

रउरा बूझीं, चाहे जनि बूझीं। हमनी का आजुवो गान्ही बाबा के सत्य-अहिंसा पर अटल बानी जा। बाकिर चेता देत बानी, जहिया भोजपुरिहा सुनामी आई; तहिया ओकर जोर केहू से अड़ाई ना। आगि भीतरे भीतर सुनगऽता। जहिया भउर फूटी, ओह दिन तहरीर चउक लेखा करिश्मा हो जाई। बाबा आ अन्ना जी की तरे दिन देके जुटान के ज्वारभाटा के झंझट नइखीं जा कइल चाहत। नाही-भट्टा पारसौल की तरे समस्या खड़ा कइ के, टीकैत की तरे रेल रोकल चाहतानी जा। नाही सिंगूर के समस्या के सुना के ममता बनल चाहतानी जा। शंकर भगवान की तरे जहर पचावे के हमनी में छमिता बा। कर्ण से जेयादा गमखोर बानी जा, मउअति जानियो के कुण्डल, दान क दिहली जा। ओकरा बादो मुँह ना खोललीं जा। भावना दधिचि बुझले रहले, जे परहित खातिर शरीरे दान क देले रहले।

रोमन भाषा में भोजपुरी बुझलीं, जदि भोजपुरी भाषा में भोजपुरी के बुझले रहतीं त आन्ही आ गइल रहित। रउरा भावना बुझलीं त का बुझलीं; बस एतने बुझलीं कि अउरियो बेरि लेखा टरका दिहलीं। रउरा टरकवला के बादो हमार भोजपुरिहा भाई, रावां के बहुत बुझले ह। खुशी से झूमले ह। रउरी बड़ाई में अखबारन में फोटो से रंगि दिहले हऽ। मय तोपल-ढाँपल तरकस के तीर हनि दिहले। अगरइला में लंगड़ो पर्वत फानि गइल। भला ई भावना, ई प्रेम, केतना बुझली हँ ?

रुसी भाषा के, राज्य भाषा के दर्जा देबे खातिर युक्रेन के संसद में जवन लात-घूँसा चलल देखनी कि करेजा दहलि गइल। अपना किहां ओइसन जे अनेसा होखे, त बकसऽ ए बिलाई मुर्गा बांड़े होके रहिहें। बे मान्यता के हमनी का दिन-दूना राति चौगुना फरत-फुलात बानी जा। के नइखे जानत कि बे गंगा जी के हमनी का नहात आ जियत बानी जा। केतना बड़ जीयत जिनिगी के करिश्मा बा। बे सुबहित सड़क के आदमी भेड़िया धसान कइ के गचकी मे जीयत बा। मोका सिरे खाद-पानी, बीया नइखे मिलत; तब्बो हमनी के पैदावार मैदाना सड़ऽता। बिजली के दुर्दशा के बादो, लाचार आदमी जेनरेटर के धुवाँ पीयत बा। रउरा त मालूमे होई कि केतना शिलान्यास कइल पूल-सड़क, अस्पताल ओइसहीं पड़ल बाड़े स। पता ना केतना बिल संसद में पास होखे खातिर, फाइल में जतन के बादो, सड़त बाड़ी स। हथिया आइल, हथिया आइल, जाने केतना हाली हल्ला भइल, बाकिर कुछ ना उजिआइल। का जाने जे रउरे हाथे जसे लिखल होखे। एह से रउरी बड़ाई में हमहूँ कुछ कढ़ावत बानीं -

बतिया जे मनितीं हमरो, ए चिदंवरम् बाबू !
मिसिरी बतसवा के भोगवा लगइतीं।
हमनी के दुखवा जो इचिको समुझती तऽ
घिउवा के दियवा से आरती उतरतीं।

हम ज्योतिषी त ना हईं कि भविष्य बताई बाकिर एतना जानत बानी कि बड्डुवा खाली गाल बजावेले। केतना रवकवला के बादो अब्बर के गोहार केहू ना सुनल। अब बुझाता को. इला के करिखा से भोजपुरी भाषा मानसूनों सत्र में मान्यता मिलत-मिलत रहि जाई। हमनी के दुलरुवी भाषा फेरू से जीसस लेखा सरकारी सूली पर चढ़ि जाई।

बकस ऽ ए बिलार
मुर्गा बांड़े होके रहिहें।
जेतने होखी देर
ओतने अउर पोढ़ होइहें
कीच-कानों में रहि के
कमल अस खिलिहें !

●●●

भोजपुरी 'लोक' में पर्यावरण

❑ सत्यदेव त्रिपाठी

'पर्यावरण' आजकल सुर्खी में बा, जीवन में ओतना नइखे, जेतना चर्चा आ बहस में बा, जेतना पाठ्यक्रम आ 'प्रोजेक्ट' में बा। आज के जुग कागज के बा- कागजी छोड़ा दउरेला आ पढ़ल - लिखल 'कैरियरिस्ट' लोग ओही पर सवार रहेला । कागजे पर हमनी का सब कुछ क लेनी जा। पर्यावरण के कुल्ही समस्या, जवना के बारे में हमनी के पूरा - पूरा पतो ना रहेला , एतना जोर शोर से उठावेली जा कि कुल्ही समस्या पनाह माँगे लगिहन स । फेर उन्हनी के अतना बढ़ावल चढ़ावल भारी भरकम हल सुझावल जाला कि ऊ कबो पूरा ना होई, '' दरिया के बिच्चे बइठल के कागज के नाव में। का - का करत बा अदमी अपना बचाव में।''

ई विषय पहिले वनस्पति शास्त्र आ भूगोल के रहे, बाकिर अब सांइस आ अर्थशास्त्र ओके लगभग अगवा क लेले बाड़न स । बलुक साँच माने में पर्यावरण अब राजनीति के जकड़बन्दी में बा । सभे आपन आपन मकसद आ हित साधल चाहत बा। पर्यावरण के बचावे का नाव पर अपना भौतिक सुख के सुरक्षित कइल चाहत बा आजकल हमनी का एकरा अइसन वश में बानी जा कि तकनीक से मिले वाला सुख पर्यावरण (प्रकृति) के भोग-सुख के बिना ना मिल सके। माथ काटि के बार के रक्षा कइला लेखा उपाय से पर्यावरण ना बाँची, काँहे कि **पर्यावरण कवनो उपयोग भा उपभोग के साधन ना, संवेदना आ मानवीय मूल्य रहल बा। साहित्य में आदमी आ ओकरा संवेदना में पर्यावरण बराबर सहभागी रहल बा। ऊ आदमी के सुख–दुख से अलग नइखे रहल। फेड़–रूख, नदी–पोखरा, गाय–बैल, पशु–पक्षी आ हमनी के खेत में उपजल फसल कबो खाली कैमरा में फोटो खींचे आ एलबम में सजावे के चीज नइखे रहल। एकर प्रमाण हर अंचल के लोक आ ओकरा सिरजल साहित्य में बा, जहाँ पर्यावरण ओकरा पूरा जीवन संस्कृति में रचल बसल रहल बा।** एह घरी एह सांस्कृतिक विरासत के साथ बहुत अन्याय आ बदसलूकी हो रहल बा। लोग एह लोक विरासन के इस्तेमाल कइल, मालामालो भइल चाहत बा, आ ओके रहहूँ नइखे दिहल चाहत- एकदम नाशे करे पर उतारू बा।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक ई लोक एक्के नियर रहला का बादो भाषा संस्कृति के नाव पर अलग लउकेला, बाकि पर्यावरण आ आदमी के सह संबंध एके लेखा बा। भोजपुरी में सबेर, एगो चिरई के बोली से शुरू होला तब कान्ह पर हर लिहले किसान खेत का ओर निकलेला, आ घर के बहू जाँत पर आटा पीसे बइठेले- ''ए भोरे भिनुसार चिरइया एक बोलेले, मिरिग बन चूंगेले, हर लेके चले हरवइया, आ बहुआरि जाँते।'' दिनचर्या के सहज सुभाविक शुरूआत सुबह का संगति का साथे बनल जीवन क्रम के आजो समझल जा सकेला। जीयल भले न जा सके। बाकि जवन एक दम अलोपित हो गइल, ओके के आज कइसे बतावे कि ऊ चिरई ''ठाकुर चिरइया कहात रहे जवन कातिक में रबी के बोआई के समय में, आदमी के श्रम के साथी बनि के आवत रहे।'' अब त हड़हड़ात ट्रैक्टर के जुग आ गइल। हमरा गाँव में उत्तर आ दक्खिन में दू गो करइत साँप रहत रहलन स। उत्तर वाला बोले त बरसात होखे, आ दक्खिन वाला बोले त सूखा पड़े। आज ना ऊ बोलत बाड़न स, या साइत हमनी के सुनत नइखीं जा। साइत हमनी का सुनला के संवेदना खो देले बानी जा। अंग्रेजी कवि शेली घास के बढ़ल सुनत रहे- (आइ कुड हियर, द ग्रास ग्रो....)। हमनी के घास बढ़ल सुनला के के कहो, देखियो नइखीं जा पावत। त एह संवेदना आ चेतना के अभावे में पर्यावरण के समस्या उठल बाड़ी स।

भोजपुरी लोक के बेटी त, बाप से, नीम, आम, आ पीपर के फेड़ लगावे के अनुनय-विनय करेले- 'अमवा लगइहऽ बाबा, बारी-बगइचा कि निमिया लगइहऽ दुआर । पिपरा लगइहऽ बाबा पोखरा के भिंटवा कि गोंइड़े लगइहऽ बँसवार।'' एह निहोरा कइला का पाछे बेटी के ऊ संवेदना आ पर्यावरण से भावनात्मक लगाव आ रिश्ता रहे जवन बतावे कि कवन फेंड़ कवना कामे आई- ''अमवाँ सयान होइ फरिहें ए बाबा, निमिया दिही जुड़ छाँह। पिपरा के डढ़िया में पड़िहैं झुलुववा, बांसवा बिरनवां के बाँह।'' बाप के ई एसे अजीब लागल कि फेंड़ के सँगे ई बांस बँसवार के मतलब ऊ ना बुझलस। त बेटी बाँस के अउर गुन गिनवलस- ''काहें न बँसवा लगइबऽ ए बाबा, बँसवा सगुनवा के खान। सुपवा, मउनियां से ओडचा चंगेलिया, सबही जे करेला बखान।'' बाप अबहियों संतुष्ट ना भइल। मँड़वा के बिहान बेटी के विदाई के दारूण-दुख के ऊ पहिंलही अनुभव करे लागल- बंसवा से ए बेटी डोलवा फनाला, होइ जाला घर

सुनसान। बिटिया के बाबा से पूछऽ न कइसन, मँड़वा के होला बिहान?'' आजकल भ्रूण हत्या करे वाला बाप लोगन के मड़वा के बिहान के पीड़ा का मालूम बा? ए घरी पर्यावरण का नाँव पर वृक्षारोपण जरूर होला आ हजारों के रेकार्डों बनेला। बाकि कतना पौधा वृक्ष बनेलन सऽ? कुछ लोगन के फोटो वृक्षारोपण के साथ अखबार में जरूर छपि जाला। नतीजा ई कि धीरे-धीरे फेड़ गायब हो गइलन सऽ। आज के भोजपुरी कवि एके महसूस करत बा। ''काटि बगइचा रोजे बस्ती नया बसावल जाला। हरित आवरण के चर्चा भी खूब चलावल जाला। कथनी करनी के नीचे निकहा चौड़ा बा छाँट। कहां पेड़ के नाँव, सगरी बबुरी के काँट।'' इहे त आज के समस्या बा। कहाँ से पर्यावरण के रक्षा होई?

हमनी का लोकजीवन में फेड़ त फेड़, एक-एगो फूल पौधा, चिरई-चुरँग, के संवेदना लोक मानस से होत लोकगीतन में आ गइल बा। ''रामा बगिया में पाँच फेड़ अमवा, पचीस गो महुअवा बाटे हो राम।'' रामा तबहूँ ना बगिया सोहावन, एकरे बेइलिया बिनु हो राम, हमनी का लोक में प्रकृति के दीहल रूप, रस, गंध कुल्हि के महातम बा। इहां तक कि, तीत लागे वाली नीमियो अंगना में आ दुआर पर लगावल जाले। ओ नीमि के संवेदना आ महातम अतना बा कि कहल ना जा सके। एगो लोक गीत में बहू अपना सास से पूछत बिया- कि कवना उमिरि में ऊ (बाबूजी) नीम लगवलन, आ कवना उमिरि में परदेस गइलन। ''कवनी उमिरि सासु नीमिया लगवले, कवने उमिरि ऊ बिदेसवा हो राम? खेलत कुदत बहुअरि निमिया लगवले, रेखिया भिनत ऊ बिदेसवा हो राम।'' ई संवाद सुनि के बतवला के जरूरत नइखे रहि जात कि फुलात फरत नीम ओही स्त्री के जीवन ह, जवन सुनवइया के करूणा के सागर में डुबो देतिया। ''फरि गइली निमिया लहसि गइली डरिया, तबहू न अइले मोर बिदेसिया हो राम।'' एही नीमि से बेटी के संवेदना जुड़ल बा। ओपर बसेरा करे वाली चिरइन के चहचहाहट आ प्रेम जुड़ल बा। एही से ऊ पिता से नीमि के फेड़ ना काटे के निहोरा करत बिया कि बाबा नीमि के फेड़ मति कटिहऽ। ओकरा पर बसेरा करे वाली चिरई बेटिए लेखा बाड़ी सन। एक दिन कुल्हि उड़ि जइहन सऽ। (बेटी ससुराल चलि जइहन सऽ) आ नीमि अकेले रहि जाई, जइसे माई '' निमिया क पेड़ जिन कटिहऽ ए बाबा, निमियां चिरइया बसेर। बाबा बिटिया के जनि दुख देउ, बिटिया चिरइया के नाइं। बलैया लेउ बीरन के। एक दिन चिरइया त उड़ि-उड़ि जइहैं, रहि जइहें निमिया अकेलि।। एक दिन बिटियवा त जइहैं ससुरवा, रहि जइहैं मइया अकेलि....... बलैया लेउ बीरन के।।''

प्रतीक रूप में स्त्री बनल ई नीम एही से अँगना-दुआरे लगावल रहेले। एही से मइया (देवी माँ) एकरा से लगाव आ मोह-छोह राखेली। नीम पर उनकर ममता आ छोह एही से प्रगट होता- ''नीमिया के डाढ़ि मइया डालेली झुलुहवा, कि झूलि-झूलि ना, मइया गावेली हो गितिया, कि झूलि-झूलि ना।''

अगर रउवाँ फिलिम ''नसीम'' देखले होखीं तऽ, ओमे नातिन पूछऽतिया- ''दादा जी, आप बँटवारे के बाद पाकिस्तान क्यों नहीं गये?'' दादा ने आँगन के विशाल पेड़ की ओर गरदन उठाकर निहारते हुए जबाब दिया- ''इसी नीम के पेड़ के कारण।'' एकर मतलब लोक संस्कृति में घर का बहरा का फेड़न से मन ना भरे, तब्बे न घर-अंगनों में नीम लगावल जाव।

आज समय आ साधन अतना बदल गइल कि पर्यावरण के सबसे बड़ संसाधन- 'पानी, के संचय-संरक्षन के बतिये नइखे होत। पहिले बाग-बगइचा, कुआँ-पोखरा कवनो पुन्न फल से कम ना रहे-- 'कुअवाँ खोनवले कवन फल, सुनहु राजा दशरथ, झोंझवन भरें पनिहारिन तबै फल होइहें। बगिया लगवले कवन फल, सुनहु राजा दशरथ; राही बाटी अमवा जे खइहें, तबे फल होइहें।' माने बाग आ कुआँ अपना खातिर ना, बलुक पूरा समाज खातिर होत रहे।

आज नीम आ कुंआँ-पोखरा जनजीवन से दूर जा रहल बा। पेड़ के छतनार छाया के जरूरत नइखे रहि गइल, तबे न आज के संस्कृति में बाग-बगइचा आ फेड़ काटि के भवन आ इमारत खड़ा कइल जाता। बड़-बड़ कालोनी बनत बाड़ी सऽ। सुख सुविधा के बनवाटी सरंजाम लोगन के प्रकृति से दूर क देले बा।

i;koj.k ijk idfr] vkdjk gok ikuh vk _rvu e cnyk okyk vkdjk ijk ikdfrd coLFkk l tMy ck] touk e tjr&tkjr xeh gkyk] gkM xykor] fBBjkor tkMk gkyk vk /kjrh d ikj&ikj fHktkor] tMokor cjlkr gkykA ,gh e ir>j] clUr vk e/kekl vkoykA ykd thou e lky d ckjgk eghuk d vyx&vyx lonuk] irhfr vk egkre ckA ykd lonuk] idfr vk i;koj.k l fcyx jg okyh lonuk uk gkA

'पर्यावरण' के दुसरका घटक पर चर्चा अभी आगे होई........ तबले क्रमशः.......। ●●●

भावानुवाद : हीरालाल 'हीरा'

अक्षय कुमार पाण्डेय के चार गो गीत

[एक] : अम्मा

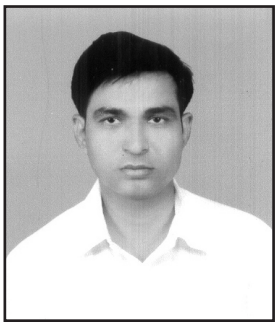

धूल धुआँ से भरल शहर में,
बिन आँगन वाला एह घर में-
खिड़की खोल निहारे अम्मा,
झोल समय कऽ झारे अम्मा।

गूढ़ पहेली कऽ हल कवनो,
आँख तलाशे सम्बल कवनो,
खूँटी ना मजबूत अलगनी-
सपना कहाँ पसारे अम्मा ?

सुख कऽ ऊ परतीत कहाँ बा,
रीत सहेजल गीत कहाँ बा,
इहाँ न आपन धरती-अम्बर-
कइसे सगुन उचारे अम्मा ?

सूखल नदी पियासल जिनिगी,
मन में साध उदासल जिनिगी,
साजल ऐना झूठ लगे अब-
जमल अन्हार बहारे अम्मा।

●●●

[दो] : निर्मला

घर आंगन देहरी दालान कुल उदास भइल
धीर धरऽ एतना मत रोवऽ तूं निर्मला,
धूप-छाँह मिल-जुल के ढोवऽ तू निर्मला।

टूटे ना मन कऽ ऐना सम्हार लऽ तूं
रूप अब अनूप लगे अस सँवार लऽ तूं
बिखर गइल बान्हल ई जूड़ा, त का भइल
आन्ही फिर डालि गइल कूड़ा त का भइल
भीरत कऽ घन अन्हार हाथ से बहार के,
आँखिन में सपना फिर बोवऽ तू निर्मला।

खोलऽ खिड़की घर में सुघर हवा आवे
समय क मुड़ेरी पर सुर-पंछी गावे
अँजुरी भर लऽ गुलाब, हवा में उड़ा दऽ
घर कऽ कोना-कोना फूल से सजा दऽ
नींद में रही कब ले, नदी के गोहार के
थाकल चेहरा रुआँस धोवऽ तू निर्मला।

चिरइन से चहक पंख-तितली से रंग लऽ
सागर कऽ लहरन से जिये कऽ उमंग लऽ
चाँद कऽ हँसी अपना ओठ पर उतार लऽ
तुलसी कऽ चउरा पर सँझवाती बार लऽ
अँचरा में गमकत मन हरसिंगार धार के,
हँसि-हँसि के जिन्दगी सँजोवऽ तू निर्मला।

●●●

[तीन] : कहऽ गाँव कऽ, घर कऽ केशव

बहुत भइल बेपर कऽ केशव,
कहऽ गाँव कऽ घर कऽ केशव !
ईंटा कऽ जंगल में हम तऽ
शहर जी रहल बानीं,
कंकड़–पत्थर नाता–रिश्ता
आपन इहे कहानी,
बाग बगइचा ताल नहर कऽ
कहऽ खेत पोखर कऽ केशव ! कहऽ गाँव कऽ...
सँइचल आग गँवा के आपन
सपना जोड़त बानीं,
नून मिलल पानी में निबुआ
रोज निचोड़त बानीं,
लैनू माठा मीठ किकोरी
दूध दही सिकहर कऽ केशव ! कहऽ गाँव कऽ...
पुतरी में आकाश उतारल
भूलि गइल अब मन ई,
धार संग हँस बहत रहे, अब
थिर लागे जीवन ई,
पानी कऽ ऊ अकथ कहानी
नदिया नाव नहर कऽ केशव ! कहऽ गाँव कऽ...
रोज बिछावत रोज चपोतत
मन अब फाट गइल बा,
शहरी नेत नियाव नीत
सइ टुक में बाँट गइल बा,
जुम्मन अलगू बुधिया होरी
धनिया आ गोबर कऽ केशव ! कहऽ गाँव कऽ...

[चार] : इहे कहानी बा

हर कोना बइठल हलकानी बा
अपना घर कऽ इहे कहानी बा।
मुह कऽ भरे कठौती ओन्हल
चाकी चुप चूल्हा उदास बा,
बटलोही से लड़े भगौना
गगरी कऽ लागल पियास बा,
चिरुआ भर बस बाँचल पानी बा,
अपना घर कऽ इहे कहानी बा।
आँख उरेहे सपना पल–छिन
कागा अब ना सगुन उचारे,
उतरी चन्दा कब आँगन में,
रोज अमावस काजर पारे,
करिखा–करिखा कुल जिनगानी बा,
अपना घर कऽ इहे कहानी बा।
बा दबाव छत कऽ देवाल पर
कइसे खुली नया दरवाजा,
खूँटी–खूँटी भूख टंगल बा,
आन्हर रानी आन्हर राजा,
लोकतंत्र कऽ लास चुहानी बा,
अपना घर कऽ इहे कहानी बा। ●●●

QkVk xkQj] y[kd] dfo ykxu ls -----.

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा टाइप कराके रचना–सामग्री आ साथ में संक्षिप्त–परिचय आ फोटो ग्राफ भेजीं।
(2) पत्रिका में रिपोर्ताज ;रपटद्ध, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।
(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं।
(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं।
(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

कहानी

जमीन

❑ विष्णुदेव तिवारी

नरेश बो अपना घोनसारि के देंवकाइल मड़ई में लेवा के ऊपर झरल कम्मर सटाले, भोर होखे का टोह में, कबो मुँह तोपसु, कबो गोड़। लालधारी वाला कम्मर बे घिकुरी मरले देंह पर अँटबे ना करे। घिकुरी मरले पेंडुरी चढ़ जाय त लकड़िआइल गोड़ फइलावे परे।

गोड़ सोझ करते, ओढ़ना से बहरिया जाँ सऽ आ उनका फेरु गोड़ मोड़े के परे।

चालिस बरिस से उपरे भइल होई... घर उजरल, देआढ़ लोग से लउरा-लाठी भइल। 'दू कठवा' खातिर पाँड़े टोल में केसो-फउदारी भइल। सवाँग के जान गइल आ अब लइ. को...

मुए के बेर बुढ़वा पंडी जी काँपत कहले रहले... पंचमा, अमावस से अँजोरिया बरा सकत बा, पानी से दीया बरा सकत बा बाकिर सैतान के मन में आदमी बने के विचार उगावल बड़ा मुस्किल बा। हमार बिन्ती बा कि जइसे, हमरा जिअते राधो के खयाल रखलू, हमरा मुवलो प'खेयाल रखिहऽ ! ... हम एगो जबून बाप रहलीं हाँ, बेटी, जे माई मे बिहीन अपने लइका के ना सँवार सकलीं।

पंडी जी के रूप में नरेशबो के आपन बाबुए जी लउकले... बहुत उदास। गँवे-गँवे पंडी जी के आँख फुलौना अस फूले लागल रहली सऽ। उनका बड़ा डर लागल। तबो ओह आँखिन से ऊ आपन आँख हटा ना सकल रही, जइसे जादू से बन्हा गइल होखसु। ऊ देखली कि पंडी जी के आँखिन में राधो आ गेंदा दउरत बा लोग। दउरते-दउरत ऊ लोग छरबेंग बन गइल रहे आ उनका बरौनियन में टँगा गइल रहे। ओकरा बाद पंडी जी के दूनो आँख मुदा गइल रहीऽ सऽ।

... बाकिर बाप के मुअते राधो पर सती माई के आसिरबाद अस फरल कि घन- आसमान फोर के बरिसे लागल।

ओह दिन पलखत पाके राधो गेंदा के गोर मुँह चूम लेले रहले। उनका गाल पर तीन चप्पल घींचत गेंदा कइले रही... 'केहू के लेहाज नइखे तऽ,' लाज त करऽ राधो। माई तहरा के आपन दूध पिआ के जिअवले बिया।... बहिन लेखा बानी, हमरा के काहें अइसन-ओइसन लइकी समुझत बाड़ऽ ?

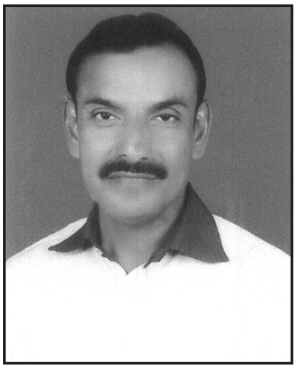

राघो के आँख गरहन के चनरमा अस थल-थल लाल हो गइल रहली सऽ... 'बदमास ! सइ मूस खाके ... ...?'

... 'कबो ना। माई के मुँह देख के आ बुढ़वा पंडीजी के करम सोच के चुप बानीं तऽ परेसान कइले बाड़ऽ ?'

... 'हूँह ! तोरा के, के नइखे जानत रे ?'

... 'तें त एकदमे ना। घर सून देख के अइले हा, हरमजादा ! भाग ना त गरदन रेति देब ! भाग !... भाग !'

बँड़ेरा उठल त गोंड़ टोली के मए घूर राधो के कपारे परल। मचल होहकारा। बिटोर में गोबिन साहु कहले... हथजोरी बा। जवन भइल, तवन माफ कइल जाउ। राधो जदि संभरि जइहें त ठीक... ना त जानते बानीं सभे... बकरी के बाचा गोंयड़ा ढेर दिन साग ना चर पावसु।

नरेश बो डंटा टेकत जब राघो के दुआर के सोझा अइली त काने मोबाइल सटवले राधो ओहिजे खाड़ रहले। ऊ उनका के गोड़ लगली आ उदास गइली। पाँड़हूँ उदास मुँह बनाके दू हाली खँखरले। उनकर मुँह गोबिन के पाड़ा के मुँह से ढेर मिलेला। एक दिन गोबिन से कहा गइल रहे... ए डगडर साहेब, हमरा लागेला कि रउआ आ हमार पाड़वा पिछला जनम में एकलाद के भाई रहलीं हाँ जा। राघो खटाक से बीछी के टूँड़ हो गइल रहले.... 'तोरा ! राह मन से हमार मये सूदे-मूरे अबहिंए लवटा दऽ !'

नरेश बो ओहिजे सींढ़ी पर बइठ गइली। फजिरे से कई दुआरे घूमत-घूमत एहिजा आवे परल हा। आइल त ऊ नाहिंए चाहत रहलीं हा, बाकिर केकर चाहल एहिजा भइल बा कि उनकर होई ? ऊ जइसे थाह लेत कहली... 'हमरा के कुछ रुपया चाहीं।'

'...हमरा किहाँ कहाँ बा।' गाइ मरला अस मुँह बनवले

पाँड़े कइले।

... 'रउआ किहाँ अफरात बा। डाग्डरी अलगा, ओझइती अलगा।'

... 'आरेऽ .... कहाँ हो ?'

दुख के ओह जरत बेरा में, नरेश बो के बुझाइल, एगो भनसार उनका कपारे पर जर गइल। कुछऊ होखे, ऊ अपना मन के कमजोर ना होखे दीहें।... ऊ मने-मन सोंचली।

'कुछ रुक के राधो पुछले... का सोचे लगलू?'

... 'कुछ ना।' ऊ कहली।

... तऽ चलऽ कोनवा वाला घर में नीक से बतिआवल जाउ !

'... आजु ढेर ना बाचा।' कहत ऊ देंह घिसरावत उनका पाछा चल दिहुई। सोंचत रही... 'फैक्टरी के नोकरी हमरा बाबू खातिर काल हो गइल... किडनी वाला रोग !... एगो छाती रामबिरिछ का ओर आ एगो राघो का ओर। गोबिन के माई कहसु... एह जमाना में आन के जमला के अइसे के करत बा जी ?'

'... अइसे मत कहीं।' नरेश बो के याद बा, ऊ कहले रही... 'राधो के तन से ना जनमवलीं से का ? इहो रामे बिरिछ नियर हमार लइका हवन !'

कहाँ भइले हमार लइका ? गेदा इनकर बहिन ना भइली ? उनके पर नजर खराब कइले ! इनकर माई, साँस छूटे का पहिले हमरे लइका कहि के नू हमरा कोरा एगो अउर जन. मतुआ डाल दिहली ! का बाभन आ गोंड़ के खून दू गो होला ?... आ मन... ?

घर के फर्श पर बइठत, तनिकी संभर के राघो के मुँह ताकत ऊ कहली... अबे दसो-बीस हजार के इंतजाम कऽ दीं। हमार मन कहत बा, जो आजुए पटना चल जाई लोग त हमार बिरिछ बाँच जइहें।

... आ हो, बाकिर अइसहीं अतना पइसा... ?' राघो आँख मुँदले, फेर खोलले, जइसे कुछ गिनत होखसु, कहले।

... अइसे कहाँ कहलीं हाँ ?

... उहे तऽ ! त... कइसे कहलू हा ?

... हमरा दुअरा के आगे 'दू कठवा'... जानत बानीं नूं ? सरिसो बोवल बा !' नरेश बो आजु में होइयो के, जइसे बहुत पाछे के काल्हु में लवट गइल रही... 'खिस्सा त जानते होखब ! रउआ होखे से साल भर पहिले... एक रात हम सपना देखलीं कि... राउर भाई... सतरह बरिस हो गइल रहे बियाह के... तऽ सपने में देखलीं कि राउर माई लइका खेलावत बाड़ी आ सपने में हम पूछत बानीं... 'ए रवों, ई केकर लइका ह ?'

'... हमार ह, अउर केकर ?' सपने में राउर माई कहले रही।

फजिरे दउरल-दउरल जाके जब ई बतिया उहाँ से कहलीं त ऊहाँ के रोअत हमरा के गरे लगावत कहलीं... 'जदि भगवान के मरजी से राउर ई सपना पूरा होखल, तऽ 'दू कठवा' रउआ के दे देब !' आ संजोग देखीं, पत्थल प दूब जाम गइल।

... 'तब ? राघो अकुतात रहले।

... तब का ? नरेशों बो अकुताते कहली- 'रउआ महतारी के टायफड़ भइल आ छवे महीना दूध पिआ के सरग ठेकली... बाकिर राउर बाबूजी 'दू कठवा' हमरा नाँवे लिखिए के त मनले... आ बबुआ जी, रउआ आ हमार रामबरिछ जेंउआ अस हमरे दूध से संगे-संगे बढ़े लगलीं जा। रउआ यादे होई... हाहिं खा ले रउआ बिरिछ के देखा-देखी हमरा के माइए कहीं।

लागल ए पारी राधो पाँड़े सचहूँ उदास गइले, कहले... 'आगे ?'

... आगे का ? नरेश बो कर बदलत कहली... राउर जमीन रउरा नाँवे लिख देब। मदत करीं।

... से ना होई। बाप के असिर- बाद पर बेटा से करिखा पोतवइबू ?

... ना, ना, ना। भगवान के चीजु भगवान के सउँप देब।... आखिर हमरा पाले अउर दोसर बड़ले का बा ? आ रउआ ना लेब, तऽ केहू दोसर लीही। अइसे पइसा त केहू नाहिंए दीही।

राघो के मन में पोखरा के महकत पानी में छपकत जलिआइल जोंक अस कई गो विचार आवे-जाए लागल रहऽ सऽ। मूड़ी ऊपर करत, बायाँ हाथ से दहिना भँहु ककुलावत कहले, 'देखऽ'... पइसा हम दे देब। जब होई, तब लवटा दीहऽ। तहरा से सूदियो ना लेब !'

-'एँ ??...' नरेश बो के मुँह अचरज में खुलल त ढेर देरी ले खुलले रहि गइल।

राघो कहले... 'आ देखऽ... कुछ सोचऽ-ओचऽ मत। पनरह हजार अबे ले लऽ। बाद में जइसन होई, तइसन खबर

करिहऽ... आ हँ, एगो अउरी बात..... जले ई नइहर से नइखी आ जात, तले..... गेंदवा से कह दीहऽ रतिया के खयका बना जाई !

... 'आयँ !!' नरेश बो के लागल ऊ बाघ के मुँह से छटक के अजगर के मुँह में आ गइल होखसु। ऊ जानत रही... पाँड़े के अपना मेहरारू से ना पटे आ ऊ बेसी नइहरे रहेली। पाँड़े बड़ा सोझिया मने कहले...'हँ हो... दिन में त कतहूँ खा लेला आदमी, बाकिर रात खा लिट्टी पटकत असकत लागेला। गेंदवा के जब बिआह होता तऽ खायक तऽ ओकरा बनावे आवहीं के चाहीं'।

'ऊ त ओकरा अइबे करेला।' कहत नरेश बो डंटा उठवली आ तलमलात चल देली। उनकर महमंड जनात रहे... अब फाटल, तब फाटल। आँगन पार करत-करत बुढ़वा पंडी जी आ उनकर मेहरारू उनकरा आँखी के सोझा कई-कई बेर आइल लोग। उनका जनाइल... पोखरा पर के मये बानर उनकर नरेटी चाँपे खातिर दउरल बाड़े सऽ आ सती माई के तिरसूल उनकर मूड़ी काट के, छुरछुरी अस, गोल-गोलाई में नाचत फुवारा आसमान देने उड़त चल गइल।

राघो चिचिआत दउरले... 'अरेऽ ! पइसवा त... ले जा... !'

नरेश बो तनिको ना रुकली। उनकर डंटा के ठक्-ठक् कुछ देर ले जमीन पर सुनात रहल।

●●●

दू गो ग़ज़ल

❑ पाण्डेय कपिल

, d

कबो-कबो मन में, पछतावा होखेला
चिन्तन पर, चिन्ता के धावा होखेला।

कुछ से कुछ हो जाला, पलखत पावत में
जिनिगी में ई कवन छलावा होखेला।

सम्हर-सम्हर के डेग बढ़ाई पानी में,
जगहे जगहे खाईं-खावाँ होखेला।

सब कुछ ऊहे, ना होखेला दुनिया में
जवना के पुरजोर दिखावा होखेला।

सोच-समझि के करीं फैसला जिनिगी में
नाहीं तऽ पाछे पछतावा होखेला।

n

का पता, कब तलक चले के बा
मोम का कबतलक गले के बा

नेह जबले बचल रही तबले
जिन्दगी के दिया जले के बा

अब ले होत रहल गलत शिकवा
बात इहे इहाँ खले के बा।

दोस कइलस जे ऊ त छूट गइल
दोस लागत इहां भले के बा।

ई त कोंढ़ी ह, इन्तजार करीं
फूल लागी, तबे फले के बा।

कहानी

मलिकार

❑ रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

कुँवर बाबू विद्यालय में बड़े बाबू रहलन। उनकर लमहर खेती-बारी रहे। गाँव के प्रधानों रह चुकल रहलन। बाकिर बदलत जमाना में अब गाँव में त केहू रहे चाहत नइखे। उहो अलगा-बिलगी भइला के बाद, मेहरारू के दबाव में शहर में मकान लेके रहे लगलन। मेहरारू के कहनाम रहे कि गाँव में रहला से लइका पढ़-लिख ना पइहें सऽ। नवकी पीढ़ी क गुजर-बसर अब खेती-बारी से ना होई। आवे वाला समय में नोकरी-चाकरी जरूरी बा।

कुँवर बाबू शहर में त रहे लगलन, बाकिर गाँवों से नाता बनवले रहलन। हर छुट्टी में गाँवे जरूर जांसु। लालचो रहे कि गाँव से जुरल रहला से फिरू कबो प्रधान बने के मोका मिल सकेला। अब बरधन से त खेती-बारी करे के ना रहे। टेक्टर आ मशीन से सभ कुछ हो जाय। एसे कुँवर बाबू खेती अपनहीं करावें।

कुँवर बाबू के दू गो लइका आ एगो लइकी रहलिन। शहर में रहला के एगो फायदा भइल कि लइकन के पढ़ाई-लिखाई नीमन से होखे लागल। ऊ, ओह लोगन के दाखिला अंग्रेजी इस्कूल में करा के ट्यूशनों के इंतजाम कऽ दिहलन। बाकि पढ़ाई-लिखाई आ ट्यूशन से उनकर खरचा बढ़ गइल।

लइको लोग मेहनत से पढ़े लागल। इण्टर पास कइला के बाद अपनी बड़का लइका के पढ़े खातिर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में भेज दिहलन। अब उनके खरचा अउर बढ़ गइल। बाकि हिम्मत ना हरलन आ खेती-बारी आ एने-ओने से जुगाड़ कऽ के काम चलावे लगलन। लइको लोग मेहनत से पढ़े लागल। लइकियो इण्टर पास कऽ के बी०ए० में पहुँच गइल।

जब लइका एम०एस-सी० (भौतिकी) में फर्स्ट डिविजन पास भइल, कुँबर बाबू के खुशी त भइबे कइल, मेहरारूओं के दुगना खुशी भइल। लइका इलाहाबाद छोड़े ना चाहे। ऊ सोचलस कि इलाहाबाद रह के तर-तइयारी कर त कतहीं सरकारी नोकरी जरूर मिल जाई। अब ऊ समझदारो हो गइल रहे। ओके अपना बाबूजी के हैसियतो के ज्ञान रहे। मने-मन तय कइलस कि अब घर से रुपया-पइसा के सहयोग ना लेइब।

जल्दिये ओकर नोकरी कानवेन्ट इस्कूल में फिजिक्स लेक्चरर के पद पर हो गइल। पांच हजार हर महीना वेतन रहे। लेक्चरर भइला के लाभ ई भइल कि ओकरा पास ट्यूशनों के भरमार हो गइल। करीबन दस-बारह हजार महीना ट्यूशन से मिले लागल। ओकरी दिमाग में इहो रहे कि एक-दू साल में बहिन के बिआहो करे के पड़ी। नीमन बिआह कइला में पुरहर रुपयो लागी। एसे ऊ अपनी कमाई में से बिआह खातिर रुपया बटोरे लागल।

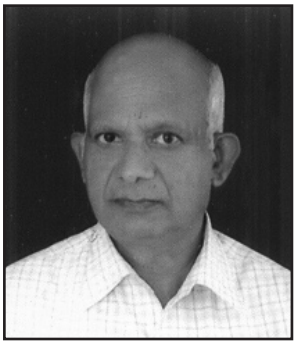

कुँबर बाबू के लइकी जब बी०ए० फाइनल में पहुँचल त ऊ ओकरी शादी-बिआह के चक्कर में पड़ गइलन। जे केहू जहाँ बतावे उहाँ आवे-जाये लगलन। कहीं लइका पसन्द पड़े त परिवारे ना आ कहीं परिवार पसन्द पड़े त लइके ना। उनकर मेहरारू कह देले रहली कि ओही लइका से बिआह होई, जवन नोकरी करत होखी आ ओकरी पासे भरपूर खेतियो-बारी होई। कुँबर बाबू एही से अऊरी परेशान रहलन। पसन्द पड़े लायक बिआह के खरच करीबन दस-बारह लाख पड़त रहे। ऊ जोड़-बटोर के बिआह खातिर तीन लाख रुपया रखले रहलन।

संयोग से कुँवर बाबू के एक जगह लइका पसन्द पड़ गइल। लइका सरकारी नोकरी में रहे। लइका के बाप पालिटेक्नीक इस्कूल में प्रिंसिपल रहलन। गाँव पर पुरहर खेती-बारी रहे। लइको सुन्दर रहे आ हर तरह से लइकी लायक रहे।

लइका के बाप कहलन, "रउरी बतवला के अनुसार लइकी आ राउर परिवारों हमके पसन्द बा। हम तइयार बानी। लेनो-देन क हमरी इहाँ कवनो खास डिमाण्ड नइखे। बाकिर...।"

"हमार लइकियो हर तरह से लइका जोग बिया। हम लइको के देख चुकल बानी। हमहूं हर तरह से रउवां सभ के खातिर-बातिर के तइयार बानी। लेनो-देन के बारे में कुछ बता देती, जेसे हमार मन अस्थिर हो जाइत।" कुँबर बाबू कहलन।

लइका के बाप कहलन, "लेन-देन खातिर रउवां निफिकिर रहीं। हमहन के पास कवनों चीज के कमी नइखे। बाकिर बिआह

तय हमार बड़ भाई करिहें। ऊ गाँवें रहेलन। उहे मलिकार हवें।"

कुँवर बाबू घरे अइलन आ अपनी परिवार से बतकही क के, दुसरही दिन लइका के गाँवे पहुँचलन। लइको के चाचा उनकर खातिर-बात कइलन आ कहलन कि बिआह रउरी किहें होई।

कुँवर बाबू कहलन, "कुछ लेनो-देन के बारे में बता देतीं तऽ ओही हिसाब से हम तर-तइयारी करितीं।"

"रउवां हमके छव लाख नकद दे देबि आ लइका-लइकी के कुछ सर-समान दे देइब। ऊ रउरी मरजी पर बा। वइसे त हमरी लइका खातिर लोग दस-दस लाख देवे के तइयार बानें।"- मलिकार निवोहे कहलन।

सुन के कुँबर बाबू चुप हो गइलन।

फेरू कहलन, "ठीक बा। हम जात बानी, जल्दिये फिरू रउवों के जोह देइब।"

कुँबर बाबू जब घरे अइलन त संयोग से उनकर बड़को लइका घरे आइल रहे। सभके बिआह के बारे में भइल बतकही के जानकारी दिहलन। आ कहलन, "लइका आ परिवार त हमके बहुत पसन्द बा, बाकि जोर-बटोर के तीने लाख रुपया हमरी पासे बा।"

"बाबू जी, हमहूँ दू लाख रुपया बिआह खातिर बटोरले बानी"- लइका कहलस।

कुँबर बाबू के आँख में आंसू आ गइल। तबले उनकर मेहरारू बोललीं, "काहें मुंह ओरमा लिहलीं। लइकी के बिआह त करही के बा। रउवां के जब लइका पसन्द बा त कवनो अर-इंतजाम कऽ के व्यवस्था बनवहीं के पड़ी।"

"ठीके बा। जब तोहरो बिचार बा तऽ एक लाख रुपया हम जी०पी०एफ० फण्ड से लोन ले लेत बानी। एह तरह से छव लाख रुपया उनके दे दिहल जाई। बाकि दू-तीन लाख के इंतजाम खेती-बारी से कऽ लिहल जाई।"- कुँवर बाबू सोच त कहलन।

एकरी बाद फिरू अपनी लइका के लेके कुँवर बाबू बिआह खातिर लइका वाला के घरे गइलन। संयोग से ऊ लइकवो आइल रहे। पंडित जी बोलावल गइलन। दिन-बारी तय हो गइल। कुँवर बाबू, बरइक्षा पर दू लाख रुपया दे दिहलन आ कहलन कि चार लाख रुपया हम तिलक पर रउवां के दे देइब।

मलिकार कहलन, "देखीं, जवन बात तय हो गइल बा ओमें एने ओनें ना होखेके चाहीं। आगे राउर मरजी।"

कुँवर बाबू कहलन, "हमरो सम्बन्ध इलाका के जानल-मानल परिवार से बा। शहरों में एगो इज्जत बा। जवन कह देले बानी, ओमे कवनों कमी ना होई।"

एकरी बाद सभ लोग भोजन कइल। पंडित जी के कुँवर बाबू बर-विदाई दिहलन। ओकरी बाद चले के तइयारी भइल।

तबले नोकरानी आके कहलसि कि मलिकिन के कहनाम बा कि तिलके पर लइका खातिर एगो नीमन चेन चाहीं। कुँबर बाबू कहलन कि हम पुरहर कोशिश करऽब कि समधिनों के इच्छा पूरा करीं।

तिलक जाये के पांच दिन रहि गइल रहे। कुँवर बाबू के अबले जी०पी०एफ० के लोन ना मिल पावल। तिलक के सभ सर-सामान त खरीद लेले रहलन, बाकि अभहिन ले उनकी पासे तीने लाख रुपया नकद जुटल रहे। चार लाख नकद त तिलके पर दे देबे के रहे, बाकि तीन-चालीस हजार अउरी एने-ओने के खरच खातिर जरूरिये रहे। कुँवर बाबू परेशान रहलन। लाजन केहू से कहू ना पावें।

सबेर के बेरा रहे। कुँवर बाबू हाता में नल के पास दतुवन करत रहलन, तबले गाँव कऽ दूगो मनई अइलन सऽ। एगो के नाम सुमेर रहे जेके ऊ पहिचानत रहलन।

"बाबू, इनकर नाम बरखू हऽ ई कुजड़ा हवें। रउरी मरिचवा की खेत खातिर आइल बाने। अगर सउदा पट जाई त चारो बिगहा ले लीहँ"- सुमेर दूसरका क परिचय दिहलन।

कुँवर बाबू पूछलन, "कवनी रेट से लिहे ?"

बरखू कहलन, "बाबू, हमहन के रउरे आदमी-जन हईं जा। पचास हजार रुपया बिगहा की रेट से हम दे देइब।"

एकरी बाद कुँवर बाबू घर के भीतर अइलन। अपनी मेहरारू आ लइका से एह बारे में बतकही कइलन। फिर कुछ देर बाद कुँवर बाबू ओह लोगन के पास आ गइलन।

मुस्कियाते कहलन, "रेट त तू कम बतावत बाड़े। साठ हजार रुपया बिगहा चलत बा। एह साल हमार मरिचा बहुत अच्छा बा।"

बरखू कुजड़ा कुँवर बाबू कऽ गोड़ पकड़ लिहलस आ कहलस कि बाबू हमहन के गरीब मनई हईं जा। पूरा परिवार एही में लागल रही। हमहनों के दू पइसा लाभ ना होई तऽ... ...।

सुमेर कहलन, "जाये देईं बाबू, ई राउर गोड़ पकड़ लेले बा। रउवां के चारो बिगहा के दू लाख रुपया ई पहिलहीं दे देई।"

कुँवर बाबू कहलन, "रउवां हमार पुरान संगी हईं। राउर बात हम कइसे टाल सकिलां। बाकि हमरो लइकी के बिआह बा। हमके पूरा रूपया पहिलहीं चाहीं।"

बरखू कहलन, "मालिक, एक लाख त रउवां अबे ले लेईं आ एक लाख हम बिआह के दू दिन पहिले जुटा के दे देइब।"

ऊ एक लाख रूपया निकाल के कुँवर बाबू के सामने रख दिहलन। कुँवर बाबू रुपया गिन के रख लिहलन आ फिरू कहलन कि बाकी रुपया समय से चाही ना तऽ....।

बात काटत सुमेर कहलन कि बाबू, रउवां निफिकिर रहीं। एकर जिम्मेदारी हमार बा।

एकरी बाद ऊ लोग चल गइल आ कुँवर बाबू एक लाख रूपया लेके घर के अन्दर अइलें। अपनी मेहरारू से कहलन, "अब चिंता के कवनो बात नइखे। चार लाख रूपया तिलक पर देबे खातिर हो गइल। बिआह के दू दिन पहिले एक लाख अउरी मिली जाई। कुछ एने ओने कऽ के काम चल जाई।"

मेहरारू कहलीं, "तिलके पर सोना क चेनों न देबे के बा। चेन त अबहिन खरिदाइल नइखे।"

कुँवर बाबू झुंझलाते कहलन, "चेन के हम कवनों सकरले थोड़े बानी। हम त ई कहले बानी कि व्यवस्था बनी त दिहल जाई।"

"लइकी कऽ बिआह करत बानी। एह तरह झुंझलइला से ना होई। जब समधिन चेन खातिर कहले बाड़ी त चेन जरूर दिहल जाई।"- मेहरारू समझवलीं।

सुनते कुँवर बाबू के गुस्सा अउर बढ़ गइल।

"तब तूहीं आ समधिन करऽ जा। हमरा से का मतलब ? कइसे-कइसे हम रूपया के इंतजाम.....।" तबले उनके लइका बोललन, "बाबूजी, गरमइला से काम ना चली। माई सोरहो आना ठीक कहति बा।"

अपनी लइका के बात सुन के कुँवर बाबू चुपे रहला में आपन खैरियत समझलन। अपनी मेहरारू से कहलन, "तूंहीं इनकी संगे जाके एगो हलुक-पातर चेन खरीद ले आवऽ।"

दुपहरिया बाद कुँवर बाबू के मेहरारू पचास हजार रुपया लेके अपनी लइका के साथ चेन खरीदे खातिर सोनार के दुकान पर पहुँचली। सोनार चेन देखावे लागल। हलुक-पातर चेन माई-बेटा केहू के पसन्दे ना पड़े। सोनार यह लोगन के मानसिकता भांप लिहलस आ एगो दू भर के खूब भड़कीला चेन देखवलस। ई चेन लोगन के पसन्द पड़ गइल। चेन के दामों सोनार पचास हजार आठ सौ तीस रुपया बता दिहलस। बाकिओ लोगन के पास पचासे हजार रहे। सोनार मान गइल आ ओतने में चेन दे दिहलस। चेन लेके माई-बेटा घरे पहुंचल।

कुँवर बाबू के मन में रहे कि एक-डेढ़ भर के चेन पचीस-तीस हजार के आस-पास मिल जाई। पचास हजार के चेन सुनते कुँबर बाबू माथ पकड़ लिहलन, बाकि कुछ कहलन ना। उनकर बजट तऽ गड़बड़ा गइल। परसवें तिलक जाये के रहे। ओही पूंजी में से पचास हजार खरच हो गइल। रात के उनके नींद ना आइल। पचास हजार रुपया के इंतजाम के बारे में सोचत रह गइलन। मेहरारू त बहुत खुश रहली। ऊ सोचत रहलिन कि एइसन चेन देख के दामाद जी तऽ खुशे होइहें समधिनों कम खुश ना होइहें।"

कुँवर बाबू फजिरहीं अपनी एगो हीत के फोन कइलन की काल्ह तिलक जाये वाला बा। दुपहरिया ले, पचास हजार रुपया लेके चलि अइहऽ। हीत कहलन कि काल्ह त ना, बाकि परसों बाहरे-बाहर हम तिलके पर रुपया लेके आ जाइब। कुँवर जी सोचलन, ठीके बा।

कुँवर बाबू तिलक लेके पहुँचलन। उहवाँ के व्यवस्था बड़ी आलिशॉन रहे। तिलक चढ़े के साइत नवे बजे रात ले रहे। एसे सात बजे सभ तर-तइयारी हो गइल रहे। कुँवर बाबू बहुत होसियार रहलन।

तिलक से पहिलहीं मलिकार से कहलन,
"एह समय हम साढ़े तीन लाख रूपया दे देइब। पचास हजार रूपया सबेरे आठ बजे ले रउवां के मिल जाई।"

मलिकार कुछ बोललन ना। मान गइलन। मनेमन सोचलन सबेरे रुपया पवला के बादे लगन-पत्री लिखाई। तिलक बड़ी धूम-धाम से चढ़ल। एकरी बाद खियावल-पियावल सुरू भइल। लइका के बाप से कवनो मतलब ना रहे। सभ मलिकारे की देख-रेख में होत रहे।

रात दस बजे कुँवर बाबू मलिकार से अकेले में कहलन, 'बुध' हमार नीक दिन ना हवे। एसे लगन-पत्री एही बेरा लिखा जाइत त ठीक रहल हऽ। मलिकार मनेमन सोचलन कि लगन-पत्री एही बेरा दे दिहला से हमार हाथ कट जाई आ काल्ह कुँवर बाबू पचास हजार ना दिहें त कुछ कइल ना जा सकेला। लागत बा उनकर नीयत रूपया देबे के नइखे।

इहे कुल सोच के मलिकार कहलन, "रउवां लगन-पत्री खातिर एकदम बेफिकिर रहीं। रउवां के लगन-पत्री काल्ह

फजिरहीं मिल जाई।"

कुँबर बाबू उनकी शंका के समझ गइलन, बाकि कई का सकत रहलन। चुप लगा गइलन।

कुँवर बाबू अपनी लोगन के साथ बइठल रहलन। मन उदास रहे। चेहरा गिरल रहे। इगारह बजे लइका के बाप तिलकहरू लोगन के खाये खातिर कहे अइलन। कुँवर बाबू के उदास चेहरा देख के, उनके शंका भइल।

लइका के बाप पूछलन, "बड़े बाबू, रउवां उदास काहें बानीं ? तिलक त ठीक-ठाक हो गइल। कवनों परेशानी नइखे न ? रउवां अब हमार हीत हो गइलीं। कवनों बात होखे त बताईं।"

कुँवर बाबू झेंपते कहलन, "प्रिंसिपल साहब, बुध हमार ठीक दिन ना हऽ। हम चाहत रहलीं हंऽ कि एही बेरा लगन-पत्री हमके मिल जाइत।"

प्रिंसिपल साहब कहलन, "एही खातिर रउवां उदास बानी। मलिकार से ना कहलीं हऽ। पंडित जी त अभहिन बटले बाड़नऽ। लगन-पत्री रउवां के मिल जाई।"

"मलिकार से तऽ कहली हंऽ बाकि"- संकुचाते कहला के बाद कुँवर बाबू चुप हो गइलन। ऊ कुछ कहि ना पवलन आ आँख से आँसू आ गइल।

कुँवर बाबू के हाव-भाव देख के समधी समझ गइलन कि दाल में कुछ काला बा। मलिकार जरूर हमसे कुछ छिपावत बानें। प्रिंसिपल साहब कहलन, "बड़े बाबू, लागत बा रउवां आ मलिकार हमसे कुछ छिपावत बानी। जवन होखे साफ-साफ कहीं।"

कुँवर बाबू डेरात-सहमत कहलन, "प्रिंसिपल साहब, हम लइकी के बाप हईं। तिलक पर सर-सामान के अलावा चार लाख नकद देबे के रहल हऽ। ओही रूपया में से हम पचास हजार के लइका खातिर चेन खरीद लिहलीं हंऽ। काल्ह पचास हजार एगो हीत से मंगवले बानी। काल्ह आठ बजे ले पचास हजार बाकी रूपया रउवां सभ के मिल जाई। एही से मलिकार लगन-पत्री आज देबे में हीला-हवाली करत बानें।"

अपनी समधी के बात सुन के प्रिंसिपल साहब सन्न हो गइलन। थोरकी देर ले चुप रहलन। फिर कहलन, "एतना कुल हो गइल आ हम जान ना पवलीं। मलिकार तऽ हमसे बतवले रहलन कि बड़े बाबू सभ कुछ अपनी मन से खुशी-खुशी देत बानें। उनका उपर कवनों दबाव नइखे।"

एकरी बाद प्रिंसिपल साहब ओइजुए मलिकार आ पंडित जी के बोलवलन। फेर पंडित जी से कहलन की रउवां लगन-पत्री लिखीं आ अभहिने बड़े बाबू के दे देईं। फेरू घूमि के मलिकार से कहलन, "भइया, बड़े बाबू से अब एको रुपया नइखे लेबे के। काल्ह पचास हजार हम तोहके दे देइब।"

तबले पंडितजी लगन-पत्री लिख के तइयार कऽ दिहलन। प्रिंसिपल साहब लगन-पत्री खुदे कुँवर बाबू के सुर्पुद कऽ दिहलन। मलिकार देखते रह गइलन। उनकर चेहरा लाजन झुंक गइल। प्रिंसिपल साहब कुँवर बाबू से फिरू कहलन, "बड़े बाबू, रउवां के अब बिआह में कवनों सामान नइखे देबे के। हमहन के पास सभ कुछ बा। बरियात के खातिर-बात ठीक से कऽ देइब। बरतिहा तऽ खाहीं खातिर जालें सऽ। कवनों परेशानी होई तऽ बता देइब।"

लगन-पत्री पा के कुँवर बाबू बहुत खुश भइलन। हालांकि दूसरा दिने उनके हीत पचास हजार रूपया लेके पहुँच गइलन। कुँवर बाबू बहुत चालाक रहलन। मनेमन सोचलन कि पचास हजार रूपया नइखीं देत त मलिकार नाराज हो जइहें। अभहिन बिआह भइल नइखे। कवनों लफड़ा खड़ा क सकेलन। रूपया देई दिहला में भलाई बा। इहे कुल सोच के चुपे से पचास हजार रूपया मलिकार के दे दिहलन आ क्षमा मांग लिहलन।

मलिकार बड़ी धूम-धाम से बरियात लेके पहुँचलन। कुँवरो बाबू इंतजाम में कवनों कमी ना छोड़ले रहलन। खुशी-खुशी बिआह भइल। पउनी-परजो के मुंह मांगल दिहल गइल। कुँवर बाबू सभ रसम उत्साह से कइलन।

विदाई के समय, दहेज में मिले वाला सामान के देख के मलिकार फूला ना समइलन। बाकि ऐन मोका पर लइका के बाप अपनी समधी से कहलन कि हम त रउवां से पहिलहीं कह देले रहलीं कि हमरी पास सभ कुछ बा। हम कवनो सामान ले ना जाइब।

कुँवर बाबू हाथ जोड़ लिहलन। लइकी के विदाई होते रहे, एसे आँख से आँसू गिरत रहे। कुछ बोल ना पवलन। बरियात विदा हो गइल। मलिकार के सामान छोड़के खाली हाथ जाये के पड़ल।

●●●

कहानी

हरजाई

❑ आशुतोष कुमार

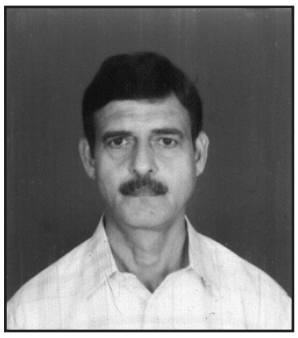

ई कहानी जतना साँच बा, ओतने झूठ बा। झूठ में साँच आ साँच में झूठ मिलावे के मंतर हमरा आवेला। जब काशी आपन कहानी हमरा से सुनावत रहन, तबे हम उनका से कहले रहीं-

"मरदे, कहाँ ओकर मरद आ लइकी आ तहार-आपन मेहरारू बाल बच्चा, ई कइसन प्रेमकथा हऽ। बियाह के बाद के सम्बन्ध हमनी के समाज में केहू निमन ना कही, एकरा से समाज आ, जवान मरद मेंहरारून में गलत संदेश जाई। हँऽ ओकर मरद ना रहीत आ तहार मेहरारू ना रहित त ई एह रकम के बात होइबो करित।"

बाकिर कहाउत कहल जाला कि- सराहले धीया डोम घरे जालीऽ, छोड़ीं जाये दीं, अब असली बात पर आइल जाय, चलीं अब कहानी सुनीं।

काशी के देख के हम भकुआ गइनीं- अरे ई काशी हवन, इ कइसन हो गइल बाड़न, चालीसे बरीस के उमिर में बुझाता कि पैंसठ के होखस। दाढ़ी, बार कुल्ही पाक गइल बा, गाल में के हड्डी लउकऽता। हाथ में करनी आ बँसुली ले ले पाछे से दुगो मजूरा जवरे गँवे गँवे जात रहन कि उनका पर हमार नजर पड़ गइल, कहनीं- "काऽ हो काशी, ई कइसन दशा बना ले ले बाड़ऽ पहिलहीं नियन मुस्काइ के काशी कहलें- "देखते बाड़ऽ..."

- 'लउकत नइखऽ का हाल बा ? हम कहनी।'

"हाल ठीके बा, साँझी खा तहरा किहाँ आइब अबहीं काम पर जात बानी।"

"हँ साँझ के हमरो फुरसत रहेला" हमहूँ कहनी।

काशी चल गइलन त हम अपना मन में सोंचें लगनी- काशी कतना बढ़िया मर्द रहन, जइसन शरीर ओइसन सुभाव। गाँव में उनकर कवनो सिकाइत ना सुनाइल रहे, कवनो लइकी मेहरारू- के ऊ ताकतो ना रहलन। बोलल बतियावल त दूर के बात रहे। बाकिर आपन जिनगी नरक बना लिहलन। के जानेला केकर मति कब मराइ जाई, सोझिए बाछी लुग्गा चढावेली। हम सुरूवे में काशी के कतना बेरि समझवनी कि, 'तूँ ठीक नइखऽ करत।' जब शीला उनका पर डोरा डालत रही, काशी हमरा से कहले रहन। ऊ हमरा से कवनो बात ना छिपावत रहन, सब बतावसु। हम काशी से कहनी कि 'देखऽ ! काशी एकरा के प्रेम ना कहल जाला, ई रास्ता देह का ओरी जाला। कवनो मेहरारू जेकर आपन सवाँग बड़ले बा, कवनो बाल बच्चादार आदमी के काहे फँसाई ? खाली प्रेम करे खातिर ?' अइसन ओकर प्रेम के गगरी छलकता। साफा साफी बात बा कि 'ओकर रहन-चाल बिगड़ गइल बा।'

आ ईहो बात हम काशी से कहले रहीं कि- 'ऊ तहरो होइके ना रही। अइसन मेहरारू एक पानी पर रहे वाली ना होली स। बाकी जोम में मातल काशी पर हमरा बात के कवनो प्रभाव ना पड़ल। उनकरा बुद्धी में शीलवा भाँग घोर देले रहे।'

कवनो बीज जब माटी में एक बेर जाम जाला त बे कबरले ऊ खतम ना होखे। ईहो जहर के बिया बढ़ि के बड़का फेंड़ हो गइल।

ओह घरी काशी नया घर के बने वाला छत के ढलाई के पहिले सटरिंग (पटरी ठोके के काम) करत रहन। सभ पटरी आ बाँस काशी आ उनकर पाटनर चनर के आपन रहे। ऊ लोग ठीका लेके ई काम करे। चनर आ काशी दूनो जाना दू गांव के रहे लोग बाकि संघत खूब रहे ओ लोगन में। काशी के रंग साँवर रहे, बाकिर छवफुटा अलबेला जवान रहन। चनर निपढ़ रहन, काशी बी०ए० पास रहन। बातचीत के तौर तरीका में काशी चनर से ढेर तेज रहलन।

जेकर घर बनत रहे ऊ लोग कलकता से एहीजा बसे खातीर आइल रहे। एगो किराया के घर ले के आपन घर बनवावत रहे। घरभरन शर्मा नाम रहे, बिजली मिस्त्री रहलन कलकत्ता में। रिटायर होइके एहीजा आपन घर बनवा के रहे वाला रहलन। मेहरारू मूंइ गइल रहे। दू गो लइका रामाशंकर शर्मा आ उमाशंकर शर्मा। दूनो कलकत्ते में काम करत रहलन। बड़ लइका रामाशंकर के बियाह हो गइल रहे आ एगो लइकियो

आठ-दस साल के रहे। रामाशंकर के अपना जनाना से तनिको ना पटत रहे, एहसे ओकर मेहर शीला ससुर किहाँ एहीजे आ गइल रहे लइकिया के साथे।

घर के देवाल जब छत ले उठ गइल त शटरिंग करे के ठीका चनर आ काशी के मिलल। ई लोग आपन काम शुरू क दिहल। रोज सबेरे हथउड़ी, खन्ती आ काँटी लेके बांस पटरी ठोंके के काम चालू हो गइल।

चढ़ते जेठ से काम लागल रहे। खर दुपहरिया में मुँह आ देंही के चाम झवाइ जात रहे, लूह आ घाम के गरमी बुझाए कि झांई मार दी, बाकिर काम त कामे रहे। माथ पर अँगउछी बन्हले दूनो जाना के ठुक-ठुक ठाँय-ठाँय चलत रहत रहे। पीछे एगो नीम के फेंड़ रहे, ओकर छाँह त ना पड़त रहे बाकिर रह-रह के ओकर ठंढा हावा आवे त जुड़वाइ देत रहे। ओकरा ठीक बगले में किराया पर घर बनवावे वाला शर्माजी आ उनकर पतोह नातिन रहत रहे लोग। काशी चनर जब काम करे ऊपर चढ़े लोग त ओ घर के अँगना साफ लउके।

रोज ऊ लोग देखे कि शर्मा जी के पतोहिया बारह-एक बजे दिन में, मुँह धोवे आ नहाए। पानी के कल अँगने में रहे। काशी चनर आपन मूड़ी गाड़ के काम करे लोग। जब ऊ नहाए लागे त अन सोहाते नजर ओकरा पर पड़ जात रहे। ओकर जवान आ उघार देंह साफ लउकत रहे, एकदम सुडौल देंह जवना पर केनीयो एकी छटाँक फालतू चरबी ना चढ़ल रहे। का जाने ऊ जानत रहे कि ना, कि ऊपर से दूगो मिस्त्री ओकरा के देखतो बाड़न स। पसन से साबुन मलमल के ऊ घंटा भर ले नहाए। काशी आ चनर के ई रोज के रसमंडल हो गइल रहे।

काशी से चनर पूछबो करस कि- 'काशी भइया का ऊ जानत ना होई कि ऊपर से दूगो मरदाना, ओकरा के देखत बाड़न स ?' काशी कहस- "ना चनर मेहरारू बहुत अगमजानी होली सऽ। राह चलत मेहरारू के केहू पाछे से ताकेला त अँचरा ठीक करे लागेले।"

एक दिन काशी के घरहीं काम रहे, ऊ काम पर ना गइलन। रोज लेखा शर्मा जी के पतोहिया, दुपहरिया में आइल। ऊपर ताक के चनर से पूछलस- 'आज रउवा अकेले लउकत बानीं ?'

चनर कहलें- 'हँ आज काशी के घरहीं काम रहे, एही से ना आइले हाँ।'

अच्छा त उनकर नाम काशी हऽ!

आ राउर नाम का हऽ ?

'हमार चनर ह, माने लोग चनर कहेला, नाम रामचनर हऽ'

'अइसहीं पूछ लेनी हाँ, रउवाँ खराब ना नू लागल हा।'

'खराब लागेवाला कवन बात बा, बलुक निमने लागल हा कि जेकर घर बनत बा ऊ कम से, कम पूछ-ताछ त कइलस।'

ऊ घर में चल गइल।

थोरकी देरी में दू गो गिलास में चाह लेके आइल, आ चनर से कहलस- 'आई तनी दू घोंट चाय पी लीं।'

चनर उतर के पानी पीए खातिर कल भिरी गइलन, त ऊ कल चलावे लागल। पानी पी के चनर मुँह अंगउछी से पोंछ के चाह पीए लगलन। अतने देरी में शर्मा जी के पतोहिया चनर से पुछलस 'काशी के बियाह भइल बा कि ना, कहवाँ गाँव बा, कवन जात हवन ऊ।' चनर बगली में से चुनौटी निकालके खइनी बनावत बतावे लगलन- 'काशी के बियाह त भइल बा बाकिर उनका अपना जनाना से पटेला ना, एहसे ऊ पाँच बरिस से अपना नइहरे रहेले।' उनका देहे एगो लइकी बिया। अब ना काशी के परिवार ओकरा के बोलावे जाला ना, ओकर माई बाप, ओकरा के काशी किहाँ भेजत बा।'

गजब औरत रहे ऊ।

खोद-खोद के चनर से काशी के बारे में पूछे लागल।

चनर कहलें- 'काशी भइया एकदम लजकोंकड़ आदमी हवन, कवनो मेहरारू से त बतियावे के कवनो सवाले नइखे, आदमियों से फालतू बतकही ना करस।'

फेर चनर ऊपर आपन काम करे चल गइलन। बिहान भइला काशी काम पर अइलन। अपना टाइमें पर शर्माजी के पतोहियो मुँह धोवे आ नहाए आइल। चनर से आंख मिलल त मुस्काइल। नहा धोइ के भितरी गइल। तनी देरी के बाद एगो लोटा में चाह आ गिलास लेले आइल। आ चनर के आवाज देके बोलत, "सुनऽतानी, आई सभ, तनी चाह पी लीं जा।"

चनर काशी के तकलन त काशी ना-नुकुर करे लगलन।

शर्मा जी के पतोहिया कहलस- 'तनी सुस्ताए खातिर कहत बानी, कवनो जहर माहुर नइखीं डललें।'

अब काशी के बोतलती बन हो गइल। नीचे उतरल लोग आ चाह पियल लोग।

फेर त ई रोजे के कारबार हो गइल, दुपहरिया में चाह पीए के आ हँसी मजाक आ गप करे के। चनर के बुझाइल

कि शर्माजी के पतोहिया काशी पर चुवल जात बिया। उनका गिलास में चहवो बेसी डालऽ तिया। काशी चनर के बेर बेर कहलो पर हाल दे उठत ना रहन, ओकरा से बतियावे में भुला जासु।

गते-गते काशी ओकरा मिठास में फँसत चल गइलन। पानी के धार जब नीचे गीरे लागेला त जोर बान्ह देला। काशी के बुझाए कि उनका जरत जिनगी में ई मेहरारू ठंडा पानी के फुहारा हऽ। धीरहीं-धीरे होखे लागल। राँवा आ रउवाँ से तूँ आ तहरा पर बात होखे लागल।

एक दिन काशी पुछले- 'तहार नाम का ह ?'

ऊ कहलस- 'हमार नाम शीला हऽ शीला शर्मा।'

जइसे माटी में बोवल बिया पानी के राह ताकेला, ओहसही मुँह के प्रेम आ मिठ बोली अब देंह के रास्ता खोजे लागल।

अब शीला के बजारे से कवनो सामान मंगावे के होखे त उ काशी से मँगवा लेत रही। बुढ़ऊ घरभरन शर्मा के एह कुल से कवनो मतलब ना रहे। ऊ परदेश से आके घर बनवावत रहलन। उनका एको आदमी से जान पहचान ना रहे, काशी के छोड़ के। काशी घरवइया अस हो गइल रहन।

शीला शर्मा बकायदा लिस्ट बना के आ झोरा-पइसा दे के काशी से कहि देस- 'तनी हई समनवा बजारे से आन दीं।'

अइसहीं एक दिन, पइसा झोरा आ सामान के पुरजी देइके काशी से कहली कि- 'तनी सामान बाजारे से किनले आईं।'

काशी झोरा उठा के चल देलन। राह में पुरजी निकाल के पढ़े लगलन त उनकर दिमागे चकरा गइल। सामान के साथे एगो बत्तीस नम्बर के चोली लिखल रहे। ऊ बेचारू लाज में पड़ गइलन। सोंचे लगलन कि गलती से त ना लिखा गइल बा। हार-पछताइ के दोकान पर गइलन। दोकानदार तरह तरह के दाम का डिजाइन वाला चेली देखवलस। काशी आज ले इ सब किनलहीं ना रहन, ए से उनका बुझाइबे ना करे कि कवन लीं। अन्त में उनका अपना से जवन बढ़िया बुझाइल कीन लिहले। घरे सामान के झोरा शीला के धरवलन त ऊ मुस्काइके कहलीं-

'सब मिल गइल हा नूं ?'

उनकर रस में लभेराइल मुस्की देख के काशी के मन गील हो गइल। धीरे से कहलें- 'हँ!'

शीला एगो आउर मुस्की मार के कहली- 'जवन ना मिलल होई, उहो गते गते मिल जाई।'

करेजा में धँसल तीर से घाही काशी भितरे भीतर ऊभचूभ हो गइलन !

चोन्हा करत- शीला घर में ढुक गइली।

एक दिन चनर काशी से कहलन- 'देखऽ काशी भइया, हरसठे कवनो मेहरारू दोसरा मर्द से ई सामान ना मँगवाई। अब तूँ अझुरात बाड़ऽ सम्हर जा।'

काशी ना सम्हरले, कबहूँ शीला उनका से माथ दर्द के दवाई, त कबही नोह पालीस, त कबहीं मिठाई मँगवावे के बहाना खोजिए लेस।

काशी घरभरन शर्मा के घर के सवाँग लेखा हो गइले। शर्मा कहस कि- 'काशी हमार बेटा लेखा हवें, दुनिया चाहे कुछ समझे।'

शर्मा जी, पाकल उमीर के रहले पाकि उनका ई ना बुझात रहे लतर आ मेहरारू निज के चीज से अझुराली सऽ।

छत के ढलाई हो गइल। ओहिजा से कामो खतम हो गइल। बाकि काशी साँझ-फजीर भा दुपहरिया कबो शर्मा जी किहाँ पहुँच जात रहन।

शर्मा जी एक दिन काशी से कहलन कि- 'दोसरा किहाँ रहत आ किराया देत अब जबून लागऽता, शटरिंग खुल जाय त गृह परवेस कर लिहल जाय।'

शटरिंग त तनी साफ सफाई करा के गृह परवेस के तेयारी शुरू हो गइल। सउँसे बोझा काशी के कान्ह पर पड़ल। हलुवाई से लेके नेवता बाँटे तक, सामान किने से लेके, दरी कुर्सी टेबुल आ जरनेटर जुटावे तक काशी एकदम घिरनई अस नाच गइलें।

शर्मा जी के दुनो लइका कलकत्ता से आ गइल रहन स। काम धाम आ बेवस्था ऊहो देखत रहन स। हलुवाई आपन काम में जुट गइल लोग। पंडीजी पूजा करावे के काम कइलें। पूजा खतम होखे से सांझ हो गइल, त लोगन के खियावत पियावत रात के दस बज गइल। अन्त में काशी के परिवार आ शर्माजी के परिवार खाए बइठल। खा-पीके काशी के परिवार अपना घरे चल गइल। काशी के शर्माजी रोक लिहलें- 'नाया घर बा कइसन दो लागता, आज तुहूँ एही जे सूत रहऽ।'

शर्माजी, उनकर दूनो लइका आ काशी ओसारा में सूतल। शर्माजी के पतोह आ नातीन, भितरी कोठरी में। काशी के बड़ा अजगुत लागल कि- 'अतना दिन पर कवनो मरद अपना घरे आई त, अपना मेहरारू लगे रही, कि बाबू लगे। ई कइसन

रिश्ता ह ?'

तीनो बाप पूत के नाक बाजे लागल। दिनवे में त झींसी लागले रहे, ओह घरी झमझमा के बरिसे लागल। जब बूनी के जोर बढ़े लागल त ओसारा में झटास मारे लागल। काशी किनारे रहलन। ऊ घुसुक के शर्माजी से सट गइलन। तले उनका बुझाइल कि केहू उनकर गोड़ हिलावऽता मुँह उघार के देखलन त शीला रहली। धीरे से कहली- 'रउवा किनारे बानी, भींजि जाइब, हो कोठिरया में चलि के सूत जाईं।'

काशी के त सब घरवे बनावल रहे, एसे उनका भुलवना ना लागल। कोठारी में एगो चउकी आ बिछवना पहिलहीं से रहे। काशी ओह पर सूते लगलन, ऊ तनी देरी ठाड़ रहिके, कुछ सोचली फेर गँवे गँवें चल गइली।

तनी आँख झँपाइल त बुझाइल फेरू केहू उनके हिलावऽता। अचके में डेराइ के आँख खोल दिहले।

- काऽ जी सूत गइनी का ?- शीला रहली

काशी लजाते कहलें- 'ना अबे तनी आँख लाग गइल हा

शीला कहली- 'रउवा से एगो बात कहिए से पूछल चाहत रहलीं, कि रउवाँ सुरुये से हमनी के अतना मदद काहें कइले जात बानीं ?'

'आदमी के चोला में जनम भइल बा, त आदमिए नू आदमी के मदद करीं'- काशी कहलें।

-'बाकिर हम ई नइखीं मानत।'

ऊ चउकी पर काशी से सट के बइठ गइलीं, काशी के त हकबक बन हो गइल।

'हमरा के अतना अलगा काहें समझत बानीं ?' शीला उनके देंह प हाथ धर के कहली। काशी के आज ले अपना जिनगी में अइसन कवनो सँजोग ना मिलल रहे, डर के मारे उनकर देवता पिछुवारी जाए लगलन तले शीला उनका के भर अँकवारी धइ लिहली। बरखा के जोर अउर बढ़ गइल। खुब लपलपाइ के बिजुली तड़कल आ नीयरे कहीं गिर गइल। अबले पुरवइया बहत रहे, अब दोरस बयार चले लागल।

बिहाने काशी बहरी निकललन त बुढ़ऊ शर्मा दुआर बहारत रहन। दिन खुल गइल रहे, सामने मुँड़ेरा पर कबूतर के जोड़ा आपन ठोर लड़ावत रहन सऽ। काशी आंख झुकाइ के निकल गइलन।

तहिये से काशी के चुरकी शर्माजी के घरे गड़ा गइल। काम कहीं करस, बाकिर जबे मोका मिले, शीला लगे पहुंच जात रहन।

गृह परवेश के बिहाने भइला शर्माजी के दूनो लइका कलकत्ता चल गइल रहन स। कभी काल आवतो रहन स, त शीला के कवनो फेर फर्क ना रहत रहे।

शीला शर्मा के अपना मरद से तनिको पटत ना रहे। ना बोलचाल रहे ना संग साथ। एक दिन बाते बात में शीला काशी से बतवली कि- 'हिंजड़ा हऽ हमार मरद, हम अपना जिनगी में ओकर कवनो सुख नइखीं जनले, ना देंह के, ना धन के। कंजड़ अइसन कि आज ले एगो भुरकुस ढेला हाथ प' ना धइलस।'

काशी पुछलन कि- 'आ बुढ़वा ? हमनी के अतना हेलमेल देख के कुछ ना नूं बोले ?'

'बुढ़वा अपना करनी के चलते मुँह दुबर हो गइल बा। ओकर मुंहें नइखे कि हमरा से कुछ कही। भरले समाज में लँगटे क देब ओकरा के।'

शीला कहली- 'ईहो तरह तरह के ढरनच करेला, मुंहझउँसा ! बुढ़वा बानर के इश्कबाजी से हमहूँ पाक गइल बानी।'

काशी के बुझा गइल कि शीला के मरद नपुंसक हऽ आ बुढ़ऊ शर्मा ओकरा नजर से गिर गइल बाड़न। शीला लाद के साफ आ करेजा के पोढ़ बाड़ी। अब काशी छुट्टा साँढ़ अस शीला के चरे लगलन।

टोला महल्ला सभे जान गइल। काशी के ससुरारी ले ई बाति पहुंच गइल त उनकर ससुर अपना बेटी के काशी घरे खुदे पहुंचा गइलन।

काशी के मेहरारू के आइल जान के शीला शर्मा के तरवा चटक गइल। अब काशियो खातिर शीला के देह के खिंचाव कम हो गइल रहे। शीला के लगे कि जतना प्रेम ऊ काशी से चाहऽतारी ओतना नइखे मिलत। खेलाड़ मेहरारू एक दिन काशी संग मंदिर से अपना माँग में सेनूर लगवा लिहलीं आ उनकर गोड़ लाग के कहली- 'हम आज से राउर बियहुती मेहरारू हो गइनी।'

काशी एक दिन चनर से ई बात बतवलन त ऊ बिच्छी मरला अस चिंहुँक गइलें।

चनर कहले- 'का काशी भइया, अब तूँ अनकर अंडा सेवे चललऽ हा ? आपन लइकी मेहरारू छोड़ के, आन के अगोरिया करबऽ ?'

बुढ़ऊ शर्माजी अब अपना पतोह से जरल खोरल रहत

रहलें। जबसे काशी के बेसी लसफस देखे लगलन तबसे काशियो के देख के मुँह बना लेस।

ओही घरी, एक दिन शर्माजी के भतीजी के बेटा अपना नाना किहाँ अइलें। बुढ़ऊ नाती के मानत रहन धनी मनी परिवार में लइकी बियहले रहलन, एसे ऊ सजल-सँवरल आ बनल ठनल रहत रहलन। अब त पट्ठा जवान हो गइल रहन, मामी से छेड़छाड़ होत रहे त बाते बात में शीला उनका के ललचा दिहली। पहिले त ऊ शरमइले बाकि मामी के अंगड़ात देंह का आगे उनकर जवानी भिहिलाईं गइल।

शीला के कोठरी में रात खा उनके जात बुढ़ऊ चूपेचाप देखत रह गइलन, शीला से बोले के उनका बूता ना रहे।

महीना दिन हो गइल नाती अपना घरे जाए के नामे ना लेस। शर्माजी कहबो कइलें कि अब तहरा घरे जाए के चाहीं, त शीला बिच्चे में कूदि परसु। काशी ई ना जानत रहलन कि मामी भगिना के नाता दूसरा नाता में बदल गइल बा।

एक दिन आपने पुरनका आदत का झोंक में ऊ दुपहरिया में शीला के कोठारी में चल गइलन। मामी-भगिना के जोड़ा सांप अस लपटाइल देखिके, काशी के कठया मारि दिहलस। शीला झटका से उठि के काशी के ओर झपटली, बाकिर काशी हरहराइले बहरा निकल गइलन। राह में, कोठरी के सीन आँख का सोझा आ-आके उनकर महमंड खउलावत रहे।

कुछ दिन का बाद काशी एकदम शान्त रहे लगलन। ऊ अपना काम से सीधा अपना घरे लवटसु खा-पीके सुत जास। उनकर मेहरारू गम्हीर आ चल्हाँक रहे। कूल्हि समझियो के चुप रहे आ उनकर खान-पान, कपड़ा लत्ता के खेयाल राखे। भितरे-भीतर ऊ खुश रहे कि अब सब कुछ ठीक हो गइल।

ओह दिन काशी साँझ खा हमरा किहाँ देर ले बइठलन। कुल्हि खिस्सा साँच साँच कहि के ऊ एकदम शांत आ थीर हो गइलन। बुझाइल जइसे, कवनो भारी बोझा उतारि के फेंक देले होखस।

– 'अच्छा, त ई तोहार प्रेम-कहनी हम लिख दीं नऽ ?' हम पुछनी।

– 'तहार मन, लिखबऽत लिख दऽ ! बाकिर हमार नाँव मति लिखिहऽ आ ओकरो ना, हरजाई निकलल त का, ऊहो त एगो औरते नऽ हऽ!' एगो फीका हँसी उनका ओठ प नाच गइल।

आज हम, ऊहे कहनी, नाम बदलि के अपना तरीका से लिखि के, कुछ नून-मरिचाई लगा के पूरा कऽ दिहनी।

●●●

---

fdrkc feyy--------

१. ^ruh cky· gk e|uk* (कहानी संग्रह), गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश', मूल्य- ३००/-, प्रकाशक- 'उमरावती प्रकाशन, बी-१०, पत्रकारपुरम्, राप्तीनगर (आरोग्य मन्दिर) गोरखपुर-०३ ।

२. ^c|Vokjk* (भोजपुरी उपन्यास) रमेशचन्द, मूल्य-६०/- सूर्यश प्रकाशन, आनन्दनगर, बलिया-२७७००१।

३.^vej dFkk* (कथा संग्रह) बरमेश्वर सिंह, मूल्य-१५०/- भोजपुरी संस्थान, ३/६, इन्द्रपुरी, पटना-०४ ।

४. ^cjenk f=dku* (कहानी संग्रह) कृष्ण कुमार, मूल्य- २००/-, सावित्री शिक्षा सदन, महावीर स्थान, करमन टोला, आरा- ८०२३०१ (बिहार)।

५. ^l|Unjorh* (उपन्यास), शिव बहादुर पांडेय 'प्रीतम', मूल्य- ७५/-, कुमुद प्रकाशन महराजा हाता बक्सर (बिहार)।

६. ^Hkkj dc gkb* (गजल संग्रह), शिव पूजन लाल 'विद्यार्थी', मूल्य- ८०/-, नीलम प्रकाशन, प्रकाशपुरी शीतलटोला, आरा (बिहार)।

●●●

कहानी

खंड-खंड पाखंड

❑ शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम'

रामलखन हमरा बचपन के लँगोटिया यार रहलन। हमनी का एके साथ विद्यालय में पढ़ी जाँ। साँझि खा, विद्यालय का खेल का मैदान में खेलबो करींजा। रामलखन पढ़े लिखे में बहुत तेज रहलन। हम तऽ उनका बुद्धि के लोहा मानत रहलीं आ हमार अनुमान रहे कि ऊ पढ़ि-लिखि के जरूर कवनो ना कवनो ऊँचा पद पर पहुँचि जइहें। ऊ बहुत हाजिर जबाबो रहलन आ गणित उनुकर प्रिय विषय रहे। कठिन से कठिन सवाल ऊ चुटकी बजाइ के हल कर देंस। विद्यालय के शिक्षकों लोग उनका से बहुत खुश रहे आ उनका के प्यार करे। रामलखन सुभावो से बड़ा सरल, उदार, विनम्र आ समय क पाबंद रहलन। मैट्रिक के परीक्षा हमनी एके साथ पास कइलीं जा। रामलखन के नब्बे प्रतिशत अंक प्राप्त भइल रहे। जवना खातिर उनका के पुरस्कारो मिलल रहे। हमरा सँगहीं, इण्टर में, ऊहो आपन नाम लिखववलन। बाकिर दू-तीन महीना के बाद उनुकर स्कूल आइल बंद हो गइल। हम पता लगवलीं तऽ मालूम भइल कि उनुका पिताजी के कवनो लम्बी बिमारी का चलते निधन हो गइल बा। घर में केहू देखभाल करे वाला दोसर नइखे। खलिसा महतारी आ एगो छोट बहीन बा। उनका पास एक बिगहा खेत रहे जवना के जोति-बोइ के अपना परिवार के भरण-पोषण करत रहलन।

धीरे-धीरे समय बीतत चलि गइल। हमहूँ इण्टर पास कइला के बाद बी०ए० का पढ़ाई बदे शहर में चलि गइलीं आ रामलखन के इयाद हमरा मानस पट से फिसलत चलि गइल। पढ़ाई खतम कइला के बाद हमरो नियुक्ति शिखक का पद पर हो गइल। हमार बियाहो हो गइल आ दूगो बालबुतरू हो गइलन।

पिछला साल के, दुर्गा पूजा के छुट्टी में, हम घरे आइल रहलीं। हमार श्रीमती जी लइकन के साथे नइहर गइल रहली। उनुके ले आवे खातिर ससुरारी जाएके रहे। ससुरारी जाएके दूगो रास्ता रहे। एगो त ऊभड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ता रहे जवना के दूरी लगभग पनरह किलोमीटर रहे आ ओह पड़े जाए में पाँच-छ घंटा लाग जात रहे। दोसरका रास्ता पक्की सड़क के रहे बाकिर घूमि के जाए में ओकर दूरी चालिस किलोमीटर पड़ि जात रहे। जीप आ बस चलत रहली स आ दू-ढाई घंटा में ई दूरी आराम से जय हो जात रहे। अगिला दिने हम नास्ता-पानी कइले के बाद ससुरारी खातिर निकलि गइलीं। बस स्टैंड पर गइला का बाद पता लागल कि पेट्रोल के दाम बढ़ला से, बस वाला, जीप वाला आजु हड़ताल कइले बाड़े सन आ चक्का जाम के एलान कइले बाड़न स।

हम जवान आदमी बानी आ हिम्मत हारि गइल हमरा के शोभा ना देई, उहो ससुरारी जाएके मुद्दा पर। एह से हमहूं निश्चय कइ लिहलीं कि पहाड़ी रास्ता से पैदले हम ससुरारी जाइब, बाकिर घरे लवटि के तऽ नाहिए जाइबि। हम अपना मर्दानगी पर भरोसा रखले पहाड़ी रास्ता पकड़ि लिहलीं आ अपना मंजिल का ओर बढ़े लगलीं। तीन-चार किलोमीटर चलला का बाद हमरा चाउर दाल के भाव बुझाए लागल। हमरा कुछ थकावट बुझाइल आ हम एगो फेंड़ के छाया में बइठि के आराम करे लगलीं। ओहिजा से थोरही दूरी पर पानी के एगो झरना लउकल। ओहिजा जाके हम हाँथ-मुँह धोवली आ पानी पियलीं। फेर चुस्त-दुरुस्त होके हम अपना मंजिल के ओर आगे बढ़लीं।

पहाड़ी रास्ता रहे, कबो ऊपर चढ़े के परे तऽ कबो नीचे का ओर उतरे के परे। आठ-नौ किलोमीटर चलला का बाद हम थाकि के चूर हो गइलीं आ आराम करे के विचार बनवलीं। थोरही दूरी पर लोगन के चहल-पहल लउकल। ओहिजा एगो आश्रम लेखा बनावल रहे। देखे से बुझाय जे कवनो मंदिर हवे, जहाँ भगतन के भीड़ लागल रहे। मरद, मेहरारू बच्चा हर उमिर के लोग ओहिजा बटुराइल रहे। नजदीक जाके देखलीं कि एगो गुम्बदाकार आ काफी लंबा चौड़ा खम्हिया नीयन बनल आ बाहरी गेट पर मोटा-मोटा अक्षरन में लीखल रहे- "सिद्ध संत, बाबा रामदास का समाधि स्थल।" गेट का एने-ओने फेड़न के छाँह में कुछ लोग बइठल रहे। हमहूँ ओह लोगन का पँजरा जाके आराम करे खातिर बइठि गइलीं। धीरे-धीरे हम ओह लोगन से घुल-मिल गइलीं।

लोग बतावल कि ई सिद्ध संत बाबा रामदास के समाधि-स्थल हवे। ऊहाँ का एगो पहुँचल जोगी आ सिद्ध संत रहलीं।

एक दिन उहाँ का अपना शिष्यन के बोलाके कहलीं- "अब हम जीवित समाधि लिहल चाहत बानी। तोहन लोग एगो बड़ा गड़हा खोदऽ जा जवना में बइठ के हम समाधिस्थ होइब। हमरा समाधि लिहला का बाद तू लोग पत्थर के बड़े-बड़े पटिया हमरा कपार से दू फीट का ऊँचाई पर लगा दीहऽ जा आ फेर ऊपर से माटी डालिके ढाँकि दीहऽ जा आ बाद में इहाँ पक्का समाधिस्थल बनवा दीहऽ जा। जे भी भक्त चाहे श्रद्धालु हमरा समाधि पर माथा टेकी ओकर सब मनोकामना हम जरूर पूरा करब।"

एकरा बाद भगतन के अतना भीड़ रहे लागल कि ओह लोगन के ठहरे खातिर कईगो विश्रामगृह आ धर्मशाला बनावल गइल। समाधि बाबा बड़ा जगता हउअन। समाधि बाबा अपना भगतन के मनोकामना निश्चित रूप से पूरा करि देवेलन। एह में अचिको संदेह नइखे। लोगन से सुनिके हमरो मन में समाधि बाबा का प्रति बड़ा श्रद्धा उपजल। हाँथ-गोड़ धोके हमहूँ माथा टेके अंदर चलि गइलीं। ओहिजाँ बाबा का समाधि का बगल में लम्बी-लम्बी दाढ़ी वाला, गेरूआ वस्त्र पहिनले दूगो महंथ जी लोग बइठल रहे, जे आशीर्वाद के रूप में एगो छड़ी से धीरे-धीरे श्रद्धालुअन के पीठ ठोंक देत रहे। लोग, ओहू लोगन के चरण स्पर्श करत रहे आ नगद रूपिया-पइसा आ चढ़ावा, समाधि बाबा का बगल में रखिके वापिस आ जात रहे। ईहे नाहीं बड़े-बड़े पुलिस पदाधिकारी नेतो मंत्री लोग माथा टेके समाधिबाबा का दरबार में आवत रहे। रोजे लगभग दस-पनरह हजार रूपया चढ़ावा में आइए जात रहे। हमहूँ पूरा श्रद्धा के साथ समाधि बाबा के सामने माथा टेकिके बइठ गइलीं। फेर हम दूनो दिव्य पुरूष महात्माजी लोगन के चरण स्पर्श कइलीं। हमरा पीठ पर धीरे-धीरे छड़ी मारिके लोग आशीर्वाद दीहल। जब हम बाहर निकले खातिर मुड़लीं तऽ एगो महात्मा जी हमसे कहलन- "भगत ! तू एहिजे बइठऽ। हमरा तोहसे तोहरा भविष्य का बारे में कुछ बतलावे के बाटे। तोहरा आज रात में एही आश्रम में रहेके बा आ कल सुबह तू, जहाँ जाएके बा, चलि जइह। अभी जा बहरी घूमऽ आ सूर्यास्त के बाद फिर एहिजा आ जइहऽ।" हमरा समझ में कुछ ना आवत रहे कि आखिर ई महात्मा जी अचानक हमरा प्रति काहें दयावान हो गइलन। अइसे हमहूँ पूरा थाकि गइल रहीं, एह से महात्मा जी के प्रस्ताव हम स्वीकार कइ लिहलीं। ईहो सोंचली कि दिन के तीन बज रहल बा आ अब चलबो करब तऽ ससुरारी ना पहुँचि पाइब। बहरी निकलि के एने-ओने थोरे घुमलीं। वनस्थली के दृश्य बड़ा सुन्दर आ मनोरम लागत रहे। एगो लड़िका अपना हाथ में कुछ किताब लेके बेचत रहे। ई किताब समाधिबाबा के प्रशस्ति में लीखल रहली स। समाधिबाबा का सामने सभ लोग नतमस्तक रहे आ नतमस्तक भला काँहे ना होई। मत्था टेकले के बाद केहू मोकदिमा जीत जात रहे, केहू बिमारी से छुटकारा पा जात रहे, निःसंतान के पुत्र के प्राप्ति हो जात रहे, कुछ लोग भूत-प्रेत का आतंक से मुक्ति पा जात रहे तऽ केहू के बिगरल काम बनि जात रहे। ओहिजा बिके वाली किताबो एह बात के गवाही देत रहली सऽ।

साँझि के छव बजे हम अपना वादा के मोताबिक साधू जी का पास गइलीं। ऊ हमार इन्तजार करत रहलन। हम फेर उनुका के प्रणाम कइलीं। उहाँ का कहलीं- "चलऽ अंदर बइठि के हमनी इतमिनान से बात कइल जाई।" हमनी का अंदर गइलीं जा। भीतर सूते आ बइठे के बड़ा सुन्दर इन्तजाम रहे। सूते खातिर गद्देदार विस्तर लागल रहे आ बइठे बदे सोफा लागल रहलन स। हम तऽ सोफा पर बइठे में हिचकत रहीं। बाकिर महात्मा जी कहलीं- "अरे यार ! बेतकल्लुफ होके सोफा पर बइठऽ भा मन करे तऽ बिस्तर पर आराम करऽ।"

फेर महात्मा जी आपन आलमारी खोललन। हम देखिके हैरान हो गइलीं कि पूरा आलमारी नोट के गड्डी से भरल रहे। ऊ ओह में से एगो लिफाफा निकललन आ हमरा पँजरा आके बगल में बइठि गइलन। ऊ लिफाफा खोलिके ओह में से एगो फोटो निकललन आ हमरा के थमावत पुछलन- "का तू पहचान सकेलऽ कि ई फोटो केकर हऽ ?"

फोटो देखला के बाद हमार पूरा अतीत सनीमा लेखा हमरा दिमाग में नाचे लागल। थोरे देर खातिर त हम हक-बक हो गइलीं। फेर होस सँभारत जबाब दिहलीं- "हँ महात्माजी ! हम खूब बढ़िया से पहचानत बानी। ई तऽ हमार खास मित्र रामलखन के फोटो हऽ। हमनी का एक साथे पढ़त रहलीं जा, एक साथे खेलत रहलीं जा। बाकिर हमनीका एक दूसरा से अइसन बिछुड़लीं जा कि रामलखन के देखले हमरा पनहर बरिस गुजरि गइल। दस साल पहिले हम इनिका गाँव का लोगन से पता लगावे के कोशिशो कइलीं। बाकिर पता लागल कि रामलखन कवनो नोकरी भा रोजिगार के तलाश में दूर देश चलि गइल बाड़न आ उनकर कहीं अता-पता नइखे।" ई कहत-कहत हमरा आँखि से टप-टप लोर चूए लागल। हलुके

हँसी हँसत महात्मा फेर एगो सवाल हमरा से कइलन, "का तूँ हमरा के पहिचानत बाड़ऽ।"

हमरा त कुछ बुझाते ना रहे। हम विनम्रतापूर्वक जबाब दिहलीं- "ना महात्मा जी ! रउरा से त हमार पहिला मुलाकात बा, भला रउरा के हम कइसे पहचानब ?"

महात्मा जी मुस्किअइलन आ कहलन- "अरे हमार लंगोटिया यार ! हमहीं तोहार पुराना दोस्त रामलखन हँईं। परिस्थितिवश हमरा दाढ़ी बढ़ाके आ गेरुआ वस्त्र पहिन के ई महात्मा के रूप बनावे के परल बा।"

हम ध्यान से देखलीं कि उनुकर आँखि लोर से ढबढबा गइल रहली स। ऊठि के ऊ हमरा के अपना गला से लगा लिहलन। हमहूँ अपना के रोकि ना पवली आ हमरो आँखि से लोर बहि चलल। अपना पुराना दोस्त से मिल के हमरा बहुत खुशी भइल, करेजा गद्‌गद् हो गइल। पाँच मिनट का बाद हमनी का फेर सामान्य भइलीं जा आ सोफा पर आमने-सामने बइठ गइलीं जा। हम रामलखन से पुछलीं- "अच्छा मित्र, ई बतावऽ कि तू अपना गाँव से नौकरी का तलाश में गायब हो गइल रहलऽ आ फेर एहिजा कइसे आ गइलऽ।"

रामलखन एगो लमहर साँस खिंचलन आ फेर साँस छोड़त कहे शुरू कइलन- "तऽ सुनऽ भाई वंशीधर, हमरो राम कहानी बड़ा विचित्र बाटे। नोकरी का तलाश में हम दू-तीन गो शहर में गइलीं, कल-कारखाना में गइलीं, नेता-मंत्री लोगन का शरण में गइलीं। बाकिर हमरा के कवनो नोकरी नाहीं मिलल। भला मैट्रिक पास के केहू नोकरी देत बा ? बी०ए० आ एम०ए० पास लोग सड़क पर बेरोजगार घूमि रहल बा। बाकिर एह पापी पेट के भरे खातिर कवनो ना कवनो उत्‌जोग तऽ करहीं के पड़ी नऽ। हम अपना जिनिगी से पूरा तरह निराश होके ऊपरी पहाड़ी वाला रास्ता से घरे वापस आवत रहीं कि बीचे में एगो मजार मिलल। बड़ा धूम-धाम रहे, शायद उर्स चलत रहे। लोग मुर्गा रोटी बनाके मजार साहेब के चढ़ावत रहे, गरीबन में बाँटत रहे, आ अपनहूँ खात रहे। हमरो कड़कड़ाइ के भूख लागल रहे आ हमहूँ भिखमंगा नियर कतार में लागि गइलीं। हमरो के चार गो रोटी आ चार पीस मुर्गा भेंटा गइल। खाके हमहूँ आपन भूख मिटवलीं, पानी पियलीं आ एगो फेंड़ के छाया में आराम करते करत सूति गइलीं। जब नींद खुलल त राति के आठ बजि गइल रहे। मेलहरू चलि गइल रहली स। मजार साहेब के दरवाजा अब बंद होखे वाला रहे। संयोग के बात रहे कि ओह मजार के देख-रेख करे वाला मौलाना साहेब घूमत-घामत हमरा लगे आ गइलन आ पुछलन-"अरे बच्चा, तू एहिजा अकेले का करत बाड़ऽ, तू के हवऽ आ कहँवा से आइल बाड़ऽ।"

हम जबाब दिहलीं- "बाबा, हम एगो अनाथ आदमी हँईं आ दुनिया में हमार केहू नइखे। जदी रउरा हमरा के आपन सेवक बना लीं तऽ बड़ी मेहरबानी होई।"

या अल्लाह, या अल्लाह कहत उहाँ का हमार हाँथ पकड़ि के उठवलीं आ कहलीं- "चलऽ भीतर चलऽ।"

मजार साहेब के दरवाजा बंद हो गइल आ हम बाबा के साथे अंदर चलि गइलीं। ओहिजा उहाँ का हमके खाना दिहलीं आ एगो कम्बल देके कहलीं- "लऽ हेके जमीन पर बिछा के आराम से सुतिजा।"

हम कम्बल लेके सवाल करते कहलीं- 'पीर बाबा ! हम रउआ से एगो बात कहल चाहत बानी। हम राउर नमक खइले बानी। एह से हमार मन करत बा राउर थोरे सेवा करि दीं, तेल मालिस करि दीं। एह से हमरा दिल के बोझा थोरकी हल्का हो जाई।'

पीर बाबा इन्कार ना करि सकलन आ प्रेम से हम उनुकर हाँथ-पैर दबवलीं। ऊ बहुत खुश भइलन आ कहलन- "अच्छा बच्चा, अब तूँ जाके सुति जा। कल हम तोहरा बदे कवनो ना कवनो इन्तजाम करब।"

अगिला दिन सबेरही उठि के हम हाँथ-मुँह धोवलीं आ पीर बाबा के सामने हाँथ जोरि के खड़ा हो गइलीं। पता नाहीं कवना जनम के पुन्न रहे कि पीर बाबा हमरा पर मेहरबान हो गइलन। ऊ हमरा के आपन चेला बना लिहलन। ऊ हमसे कहलन- "देखे में तऽ तू हिन्दू बुझात बाड़ऽ। बाकिर एहिजा हिन्दू के कपड़ा ना चली। तोहके आपन लिबास बदले के परी। तोहरा लुँगी पहिने के परी आ मुसलमानी दाढ़ी बढ़ावे के परी। रहि-रहि के तोहरा अपना मुँह से या अल्लाह-या अल्लाह, या पाके परवर दिगार कहत रहे के बा, जवना से तोहरा के लोग पक्का मुसलमान समझे। वइसे त अल्लाह भा ईश्वर एक्के हउवन। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई सब एके ईश्वर के औलाद हऽ। बाकिर वक्त आ स्थान के मोताबिक भेख अउरी भाषा बदले के परेला। तूँ कोरान के कुछ आयत याद कर लऽ सिर पर मुसलमानी टोपी पहिनल करऽ।"

धीरे-धीरे पीर बाबा हमरा के नमाजो पढ़े सिखा दिहलन।

हम उनका साथे-साथे पाँचों बखत के नमाज अदा करे लगलीं। मजार पर रोज हिन्दू-मुसलमान सभ जाति आ मजहब के लोग आवे आ अपना बेंवत के मोताबिक पइसा रूपया आ चादर चढ़ावे। मजार साहेब के मेहरबानी से ओह लोगन के मुराद पूरा हो जाव।

एह तरे मजार साहेब के बड़ा चलती रहे। सालो भर उर्स के माहौल बनल रहत रहे। पीर बाबा के शागीर्द बनि गइला का बाद हमरो जिनिगी खुशहाली में गुजरे लागल। तीन-चार साल बितला पर हमरा अपना घर के इयाद आइल। एक दिन हम पीर बाबा से अर्ज कइलीं- "बाबा, हम कुछ दिन खातिर अपना घरे जाइल चाहत बानी। हमरा माई के आ छोटकी बहिन के बड़ा इयाद आवता।"

उहाँ का कहलीं- "ठीक बा जा, बाकिर जल्दिये लवटि के आ जइहऽ। काहे कि देखते बाड़ऽ जे एहिजा कतना काम बा आ तोहरा बिना एहिजा के इन्तजाम सँभारल कठिन आ मुश्किल बा। तू एगो नेक आ ईमानदार इन्सान बाड़ऽ। अल्लाह तोहरा के तरक्की देबें।"

अतना कहले के बाद ऊ हमरा के कुछ कपड़ा-लत्ता आ पाँचि हजार रुपिया नगद देके कहलन- "पहाड़ी रास्ता बाटे आ पैदल गइल ठीक नइखे। राहे में तू थाकि जइब। एह से तोहरा खातिर हम एगो गदहा के इन्तजाम करि देत बानी जवना पर बइठि के आरा से जा सकेलऽ।"

अगिला दिन सबेरहीं हम मजार साहेब के मत्था टेकलीं, पीर बाबा के सलाम कइलीं आ गदहा का पीठि पर बइठि के अपना घर खातिर चलि दिहलीं। रास्ता वाकई बड़ा बीहड़ रहे। कई जगह तऽ हम गीरत-गीरत बचलीं। बुझिला माई हमरा खातिर खर जिउतिया कइले रहे आ एही से हम बाल-बाल बचि गइलीं। हम लगभग दस कीलोमीटर के दूरी तय कइले रहीं आ गदहवो थाकि गइल रहे आ ओकरा पीठ पर बइठल-बइठल हमहूँ थाकि गइल रहलीं। दिन के करीब चार बजत रहे। सूरज अब पच्छिम दिशा में आ गइल रहलन। आराम करे का विचार से हम गदहा का पीठ पर से नीचे उतरि गइलीं आ एगो फेंड़ का छाया में बइठि के आपन पीठ सोझ करे लगलीं। थोरही देर का बाद हम देखलीं कि गदहवा जमीन पर छटपटात बा। शायद ओकरा पेट में काफी दरद रहे कि का बाति रहे। हम तुरंते ऊठि के ओकरा भीरी गइलीं आ ओकरा पीठ पर आपन हाँथ धइलीं। ओकर देहि बुखार से तपत रहे। हम का करितीं। दउरल गइलीं आ पास का झरना से पानी ले आके ओके पियावे के कोशिश कइलीं। बाकिर ऊ पानी का ओर तकबो ना कइलस। ओकर छटपटाहट देखिके हमरा बड़ा तकलीफ भइल। बाकिर हम लाचार रहलीं, करिए का सकत रहीं। हम मने मन राम से आ रहीम से दुआ करे लगलीं। बाकिर सभ बेकार। थोरे देर छटपटइला का बाद गदहा बेचारा अल्लाह के प्यारा हो गइल। हमरा आँख में आँसू आ गइल आ हम रोवे लगलीं।

फेर हम अपना के सँभारत उठलीं आ निश्चय कइलीं कि गधा के कब्र खोदि के ओह में दफन कइ देबे के चाहीं, नाहीं तऽ ई सरी तऽ दुर्गंध फइली आ वातावरण प्रदूषित हो जाई। शायद इहे कारन बा कि धरम भा मजहब में लाशि के कब्र में गाड़े के व्यवस्था देल गइल बा। कुछ दूर जाके गाँव से हम एगो कुदारी माँगि के ले अइलिं आ एगो गढ़हा खोदि के गदहा के लासि गाड़ि दिहलीं आ ओपर पानी छिरिकि के, लीप-पोत के एगो कब्र बना दिहलीं। ईहे सब करत-धरत रात हो गइल। अब हम भला कहाँ जइतीं। पीर बाबा रास्ता खातिर कुछ पूड़ी आ आलू के भुँजिया देले रहलन, ऊहे खोलिके खइलीं आ ओहिजे सूति गइलीं। अगिला दिने सबेरही उठि के हाँथ मुँह धोवलीं आ बइठ के गाँवे जाऐ के योजना बनावे लगलीं। एही बीच में मजार साहेब जाये वाला भगतन के एगो टोली एही रास्ता से गुजरल। एह कब्र के देखि के लोग रूकि गइल आ आदर से आपन माथा टेके लागल। लोग हमरा से एक कब्र के बारे में पूछताछ गइल। बाकिर हम ओह लोगन के का बतइतीं। हमरा त कुछ समझे में ना आवे। एह से हम मौने रहल अच्छा समझलीं आ एगो कागल पर लिखि के ओह लोगन के थमा दिहलीं, जवना पर लिखल रहे- "आज हमार मौन ब्रत बा। कल रउरा सभ आइब तऽ हम एह कब्र के इतिहास रउरा सभे के बतलाइब।"

ऊ लोग कुछ रुपया-पइसा कब्र पर चढ़ावल आ मत्था टेक के चल गइल। ओकरा बाद हमरा दिमाग में एगो योजना आइल। हम सोंचलीं कि हमार देश के लोग कतना अंधविश्वासी आ आस्थावान होला। हमरा इहाँ तऽ लोग गाय, बैल, साँप, कूकुर आ नदी, पहाड़ो के पूजा में विश्वास करेला। आस्था आ विश्वास के कारन ओ लोगन के मनोकामनो पूरा हो जाला। लोग पत्थर के पूजा करेलन, पेड़ के पूजा करेलन, चाँन आ सूरुज के पूजा करेलन। हर जगह उनका के कवनो ना कवनो रूप में भगवान लउके लागेलन। ओह लोगन के विश्वास अतना

बड़ा बा कि ऊ लोग कवनो स्थान पर भगवान चाहे भगवती के स्थापना करि देवेलन। हमरा देश के पंडित आ पुजारी लोग भले एगो मूवल मूस के मत जिया पावो बाकिर ऊ लोग मंत्र का माध्यम से पत्थरो में प्राण प्रतिष्ठा कर देवेलन। कतना बड़ा बा एह मंत्र में शक्ति। भगवान सृष्टि के रचना कइलन आ ई संसार बनवलन। ई पूरा कायनात अल्लाह के हऽ। एकरा के बनावे भा बिगारे के पूरा शक्ति उनही के हाँथ में बा। कण-कण में भगवान बाड़न। सभ जीव में रुह भा आत्मा होले जवन परमात्मे के अंश हऽ। तऽ देखल जाय त एहू गदहा के आत्मा परमात्मा के एगो अंश भइल। एह से गदहा के आत्मा के ओतने इज्जत प्रतिष्ठा मिले के चाहीं।

ईहे सभ सोंचिके हमहूँ एगो मनगढ़ंत कहानी तइयार कइलीं आ अगिला दिन से लोगन के बतावे शुरू कइलीं कि ई सिद्ध संत महात्मा रामदास के समाधि स्थल हऽ। एहिजा जे भी मत्था टेकी, ओकर मुराद जरूर पूरा होई आ ओकरा जिनिगी में कबो कवनो चीज के कमी ना होई। उनुका बारे में हम कई गो कथा-कहानी गढ़ि-गढ़ि के लोगन के बतलावे लगलीं कि कइसे एगो निःसंतान के पुत्र प्राप्त हो गइल। फलाना गाँव के फलाना आदमी समाधि बाबा के दया से मोकदिमा जीत गइल। फलाना आदमी जे कैंसर के मरीज रहे ठीक हो गइल। बाबा रामदास कइसे समाधि ग्रहण कइलन, आ अपना शिष्य लोगन से कवन-कवन बाति कहलन, एकर कहानी लोगन का माध्यम से बिजली लेखा दूर-दूर तक फइल गइल। अब का पूछे के, कुच्छे दिन में एहिजा दूर-दूर से लोगन के दल आवे लागल। एहिजा एह बात के छूत रहे कि हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई, कवनो भी जाति धरम, संप्रदाय भा मजहब के लोग समाधि पर मत्था टेक सकेला। लोगन के भीड़ रोज-रोज बढ़ते चलि गइल आ चढ़ावो खूब चढ़े लागल। खेवा-खरचा काटि के महीना में डेढ़-दू लाख रुपिया तऽ बचिए जाय। रोज शुद्ध घीव के दस किलो हलुओ बनेला जवन दिन भर परसादी का रूप में लोगन के बाँटल जाला।

सिद्ध संत बाबा रामदास के समाधि के महातिम अतना बढ़ि गइल कि अब मजार साहेब का दरबार में लोगन के आइल-गइल कम होखे लागल, भलुक खतमे हो गइल। ओहिजा के पीर बाबा आ शागिर्द लोग खाए-पीए के मोहताज हो गइल। पीरो बाबा कहीं चल गइलन।

रामलखन बतवलन कि- "आज से करीब दू साल पहिले संझा के बखत हम अपना आश्रम में बइठल रहलीं। हम देखलीं कि मजार साहेब के पीर बाबा अइलन आ समाधि बाबा के मत्था टेकि के बइठि गइलन। हम उनुका के हलुआ के प्रसाद दिहलीं जवना के खाके ऊ पानी पियलन आ हमरा पँजरा बइठ के आपन दुखड़ा गावे लगलन- "का करीं महंथ जी, हम मजार साहेब के देखरेख करी। बाकिर जबसे ई समाधि बनल, ओकरा बाद अब मजार साहेब पर मत्था टेके कोई जाते नइखे, चढ़ावा के बाति त बहुत दूर बा।"

ई कहत-कहत उनका आँख से आँसू छलके लागल। उनुकर राम कहानी सुनि के हमरो मन द्रवित हो गइल।

हम पीर बाबा से कहलीं- "पीर बाबा, रउरा एकदम घबड़ाईं जनि। अल्लाह सभकर मालिक हउअन। ऊ मुँह देले बाड़न त रोटी जरूरे दीहन। आज से रउरा एही आश्रम में रहीं। अब रउरा के कवनो तकलीफ ना होई। रउरा जाति के मुसलमान हँई तऽ का भइल। आखिर रउरो के तऽ भगवाने नऽ बनवले बाड़न। भगवान तऽ खलिसा इन्सान पैदा करेलन। बाद में आदमी हिन्दू आ मुसलमान बनि जाला। बाकिर ई संत रामदास जी के समाधि हऽ, एह से रउरा ई मौलवी वाली टोपी छोड़ेके परी आ मुसलमानी दाढ़ी भी कटवावे के परी। एह कपड़ा का बदले रउरा गेरुआवस्त्र पहिरे के परी आ अल्लाह-अल्लाह का बदला श्रीराम कहे के परी। रउरा यदि मंजूर होखे तऽ एह आश्रम के आपने समझीं।"

उनहूँ के मजबूरी रहे। भा बाबा बड़ा खुला खयाल के आदमी रहलन। एह से ऊ हमार बात मान लिहलन। अगिला दीने नाऊ बोलवा के उनुकर दाढ़ी-मोंछ सब साफ करा दियाइल। सिर के बाल भी सफाचट करवा दियाइल। ऊ गेरुआ रंग के कपड़ा पहिन लिहलन आ रामनामा के एगो चादर कंधा पर धारण कइ लिहलन। श्रीराम, श्रीराम कहे लगलन आ समाधि बाबा के बगल में आसन लगा के बइठ गइलन। आवे वाला भगतन के आ श्रद्धालुवन के पीठ छड़ी से ठोकि के आशीर्वाद देबे लगलन। ऊ गीता के कुछ श्लोको रटि गइलन।"

"हमनी दूनो आदमी समाधि बाबा के संस्थापक आ व्यवस्थापक बानी जाँ।" एकरा अलावे बहुत चेलो-चाँटी बन गइल बाड़न जे हमनी का कहले पर अलग-अलग काम निपटावेलन। सभ लोग गेरुए वस्त्र में रहेला आ सबका के पाँच हजार रुपया महीना दरमाहा के रूप में दियाला। समाधि बाबा के निर्माण आ समूचा खेवा-खर्चा काटि के जवन रकम बाँचि जाला हम

आ पुरुषोत्तम दास (पुरनका पीर बाबा) दूनो आदिमी आध ाा-आधा राख लेनी जा। एह तरे हमन क माली हालत अबहीं बहुत अच्छा बा। समाधि बाबा का मरजी से हम अच्छा खासा मकान शहरे में बनवा लेले बानी। पलिवार आनंद से शहर में रहेला। महीना में एक बेर पारी-पारी से हमहन अपना घरे जाईला। एहिजा समाधि स्थल पर महीना में दू बेर गरीबन के भोजनो करावल जाला आ चढ़ावा में मिलल कपड़ा गरीबन में बाँटि दिहल जाला।

अतना बात बतवला के बाद जब रामलखन चुप भइलन तऽ हम उत्सुकतावश फेर एगो सवाल पूछि बइठलीं- "अरे भाई रामलखन, तनी ई तऽ बतावऽ कि पुरुषोत्तम जी पहिले जहाँ पीर बाबा का रूप में रहलन, ऊ कवना फकीर, औतिया चाहे शहीद के मजार रहे।"

हमार सवाल सुनिके रामलखन कुछ देर तक चुप रहलन। फेर ऊ कहलन- "अरे भाई तू तऽ बड़ा अच्छा सवाल कइलऽ। एकरा बारे में तऽ कबो हमार ध्याने ना गइल रहे। रहऽ पुरुषोत्तम दास जी के बोलाके एकर खुलासा अबहिएँ करि देत बानी।"

रामलखन बहरी निकललन आ पुरुषोत्तम दास के आवाज लगवलन। थोरी देर के बाद पुरुषोत्तम दास जी आ गइलन आ सोफा पर एकतरफ बइठि गइलन। रामलखन उनुका से हमार परिचय देत कहलन- "ई हमरा बचपन के मित्र वंशीधर हवन। हमनी का बड़ा घनिष्ट हँई जा। इनिका के हम आपन पूरा रामकहानी आ एह समाधि स्थल के पूरा सच्चाई बतला देले बानी। रउरो समूचा राज आ रहस्य इनिका के बतला देले बानी। बाकिर रउरा इचिको घबड़ाइब जनि। वंशीधर ई सभ बात केहुके बतलइहन ना आ अगर केहू के बतलइबो करिहें तऽ इनिका बाति के केहू विसवासे ना करी। काहे कि समाधिबाबा का खिलाफ एकहूँ शब्द सुने खातिर केहू तइयार ना होई। लोग उल्टे इनही के गारी देबे लागी आ मारे-पीटे लागी बस ई ईहे जानल चाहत बाड़न कि पहिले हमनी का जहाँ हमनी का जहाँ रहत रहलीं जाँ, ऊ कवना औलिया, फकीर शहीद के मजार हउए।"

कुछ देर तक चुप रहला के बाद पुरुषोत्तम दास बतवलन कि- "जदी राउर दोस्त वंशीधर जी एह समाधि स्थल के पूरा सच्चाई जानिए चुकल बाड़न तऽ रउरा सामने हमहूँ साफ-साफ बतला देल चाहत बानी कि पहिलको मजार एगो गदहे के मजार हउए।"

ई सुनिके हमनी तीनो आदमी ठहाका मारि के हँसे लगलीं जा आ हँसत-हँसत लोट-पोट हो गइलीं जा। फेरु गम्हीर होत हम कहलीं- "चलऽ अच्छा बा, जइसे राम आ रहीम, हिन्दू आ मुसलमान एक हवन, ईश्वर आ अल्लाह एक हवन, ओइसहीं मजारो साहेब आ समाधिबाबा एक्के बाड़न। हमार बाति सुनिके एक बेर फेर सब हँस दिहल।"

●●●

एह अंक के रचनाकार,

१. पाण्डेय कपिल, ३/६, इन्द्रपुरी, पटना ८०००२४ (बिहार)। २. अरूण मोहन भारवि, आर्या एकेडमी, बंगाली टोला, बक्सर ८०२१०१ (बिहार)। ३. अक्षय कुमार पाण्डेय, रंजीत मुहल्ला, रेवतीपुर, गाजीपुर-२३२३२८ (उ०प्र०)। ४. डा० ओम प्रकाश सिंह, (अंजोरिया डाट कॉम), अधिवक्ता नगर मार्ग, विजयीपुर, बलिया २७७००१ (उ०प्र०)। ५. राजगुप्त, राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया- २७७००१ (उ०प्र०)। ६. विष्णुदेव तिवारी, तिवारीपुर, दहिबर, बक्सर- ८०२११६ (बिहार)। ७. आशुतोष कुमार, राजा बाजार, बिहिया, भोजपुर (बिहार)। ८. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, टाउन इन्टर कालेज, बलिया- २७७००१।
९. शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम', कुमुद कुटीर, थाना रोड, बक्सर (बिहार)। १०. शशि प्रेमदेव, प्रवक्ता अंग्रेजी, कुँवर सिंह इन्टर कालेज, बलिया। ११. शिवपूजन लाल विद्यार्थी, प्रकाशपुरी, आरा भोजपुर (बिहार)। १२. इन्द्र कुमार दीक्षित, ५/३१६, मुन्सिफ कालोनी, देवरिया २७४००१। १३. त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम' शारदा सदन, कृष्णानगर, बलिया (उ०प्र०)।

●●●

जिनिगी के गीत

❑ शशि प्रेमदेव

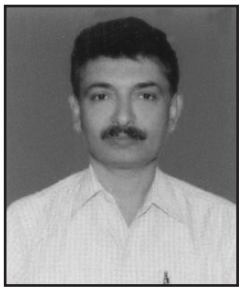

झिलमिला के लुका गइल जिनगी !
लाख चहलीं सहेज लीं, बाकिर
धूरि बनि के छिंटा गइल, जिनगी !!

दूर के चान में धियान रहल
मन में चिरई के आसमान रहल
तीर अइसन धंसल करेजा में
छटपटा के थिरा गइल जिनगी !!

आँखि भरके कबो गुमान से हम
देखि पवलीं ना इतमिनान से हम
सब के राजी करे में रहि गइलीं
हाथे-हाथे बंटा गइल जिनगी !!

एही डर से कि टोक दी दुनिया
सिर उठाइब त का कही दुनिया
खुल के हंसली, ना खुल् के रो पवलीं
कशमकश में ओरा गइल जिनगी !!

का बताई कि हम कहाँ गइलीं
आँच लागल कि हम, धुआँ भइलीं
हार गइलीं जुगत-जतन कइ के
आँखि झपकल, छिना गइल जिनगी !!

●●●

बीतल केतना पतझर

❑ इन्द्रकुमार दीक्षित

बीतल केतना पतझर, बगिया में तबो बसन्त न आइल
टूटल सपना लिहले मन में जिनिगी बा नियराइल।

मिलल सुराज रूप बदले खातिर बा शुरू लड़ाई
जोर जबरजस्ती से अब ना केहू राज चलाई
टूटल जिमदारी बा सबके मन में ललक समाइल।

सोचलीं अब हमरो दिन लौटी, कटी राति अन्हियारी,
धुंध अमावस के मिटि जाई, अवते दिया-दियारी
पर सपना त सपने होला ऊ सच कहां भेंटाइल ?

चक्के खातिर दिन-दिन भर, धवलीं चकबन्दी आफिस
देके अगिला तारिख हरदम हाकिम कइलन वापिस
खाता अलग करवला में मोर सारा खेत बिकाइल।

एक मजूरी के असरा पर गाड़ी हम सरकवलीं
पेट काटि एक ही धोती में तन के लाज बचवलीं
बीस-सूत्री में घेरवा मोर जबरन नऽस कटाइल।

देहीं में काबू रहते हम निसंतान हो गइलीं,
कइसन बा ई लोकतन्त्र हम दीन-धरम से गइलीं
कौन देबी की पूजा में ई बलिदान दियाइल ?

'अन्त्योदय' में सोचलीं एगो चउआ मिली उबारे,
बीडीओ, आ परधान से मिलि के पवलन रामदुलारे
परसलिएं जेकरा घर में, बा ट्रैक्टर नया किनाइल।

आइल वोट उछाह भइल, हलधर पर मुहर लगवलीं,
मानो अपना के गद्दी पर अपने हम बइठवलीं।
आंखि खोलि के देखली सब कुइयां भांगि घोराइल।

भाषण सुनि के लागे, अब त धरती सरग बनति बा,
का दुसरी आजादी आके अन्तिम सांस गिनति बा।।
ना जनलीं अपनी अंगुरी से अपने आंखि फोराइल।

केतना पीढ़ी अबहिन अइसे माटी में खपि जाई
उजरल बारी में अब इहवां के बहार ले आई।।
समता खातिर कतने इहवाँ, संझिये माथ कटाइल।

●●●

धनिया के पाती, सिपाही के नाँवें

❑ त्रिभुवन प्रसाद 'प्रीतम'

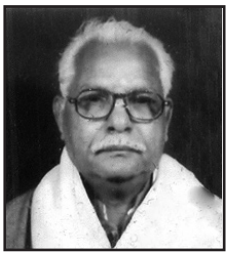

पतिया पवलीं, पतिया पढ़लीं, पतिया लिखि फेरु पठावत बानी,
सब ठीके रहे, उहाँ नीके रहऽ, नित नेम से क्षेम मनावत बानी।
तुलसी चउरा पर बारि दिया, गउरा गोरया गोहरावत बानी,
अहिवात सनातन मोर रहे, सेनुरा टहकार लगावत बानी।।

माई आ बाबा के सेवा करीलें, असीस मिलेला हो, हाथ उठाई,
अंतरा-अंतरा, तुहईं-तुहईं, तो हरे सुधिये दिन रात कटाईं।
फटही लुगरी नित सीयत बानी, आ पेवन-पेवन पानी बचाईं
लुगरी तरवें पिय भारत के, हो भविष्य के प्यार से पालीं पढ़ाई।।

इहाँ हम धर्म आ कर्म निबाही, उहाँ युग धर्म के रीति निभइहऽ,
रन में रहिहऽ, बन में रहिहऽ, करनी करिहऽ, यशकीर्ति कमइहऽ।
माई के दूध के लाज रहे, जब अइहऽ घरे, रन जीति के अइहऽ
छतिया पर घाव लगे त लगे, हमरी कीरिये जनि पीठि देखइहऽ।।

आँखि देखावे त फोरिदऽ आँखि, आ पाँव पसारे त पंगु बना दऽ,
मुंडन-मुंडन काटि पिया, हर मन्दिर में नरमुण्ड चढ़ा दऽ।
अरसे से पियासलि बे पिरिथी, रन क्षेत्र में रक्त के गंग बहा दऽ,
शत्रुन के गढ़ में घुसिके, हनुमन्त नियन फिर लंक जरादऽ।।

जीति के अइबऽ त मान बढ़ी, हम भाव से आरति-थार सजाइबि,
वीरन के गति पवलऽ कहीं, तब पांव क धूरि ले मांग भराइबि।
छाती उतान रही सगरो, रन में प्रिय गोदी के लाल पठाइबि,
रणचण्डी कहाइबि देश बदे, हमहूं टटके हथियार उठाइबि।।

●●●

धरती के गीत

❑ शिवपूजन लाल विद्यार्थी

नील गगन के कथा-कहानी खूब भइल
अब धूसर धरती के गीत सुनाइब हम।

चान-तरेंगन के छाँहाँ में छन्द प्यार के रचलीं
अउर अँजोरिया में टहटह विरहिन के पतिया बँचली
अब ले रहीं अलापत सिरिफ राग प्रेम के
अब अभाव-महँगी के महिमा गाइब हम।

इन्द्रधनुष के चुनरी में कविता के खूब सजवलीं,
दूर कल्पना के नंदन-बतीया में रोज घुमवलीं
आसमान के माथा में हम रहीं भुलाइल
अब कविता के खेत-बधार घुमाइब हम।

बदरा के कजरा से, रजनी के अँखिया के अँजलीं,
चनवा के चमचम बिंदिया से मँगिया सुन्दर सजलीं
केसर-कुमकुम मललीं कविता के गलवा में
अब धीरया से दिल के भाव सजाइब हम।

दूर समुन्दर के तटवा पर देखलीं नाच लहर के,
शोर शहर के छोड़ि के, सुनलीं गीत नदी-निरझर के
कोइलिया के सुर के मदिरा पियलीं अबले
अब रोपन के गीतन पर बउराइब हम।

जिनिगी से जिनिगी के मसला से, हम भागत रहलीं
मनवाँ के पीरा कुदरत के कानवाँ में जा कहलीं
अपने सुख-दुख के गोदना हम गोदत रहलीं
राह समाज के, ऐना अब देखलाइब हम।

रितु बसंत के मदिरा भरलीं धरती के कन-कन में,
बान फूल के मारि जगवलीं काम-लहर हर मन में
कलियन के घूँघटा अबतक हम खोलत रहलीं
अब खेतन में धानी पट लहराइब हम।

नारी-तन के सुन्दरता के बहुत कसीदा कढ़लीं,
चान-तरेंगन के उपमा के, गोटा छलमल मढ़लीं
रुपवा-रसवा के गलियन में घूमत रहलीं
अब शक्ती आ पौरूष के दुअरा जाइब हम।

महल-अटारी के विलास-लीला के चित्र उतरलीं,
दियरी, होली, तेवहारन के, रंगवो गाढ़ा भरलीं
राजा-महराजा के विरूद बखानत रहलीं
अब नंगा-भूखन पर कलम चलाइब हम।

●●●

यात्रा स्मरण

चारों धाम पहुँचला के दास्तान

❑ डॉ0 अरुणमोहन भारवि

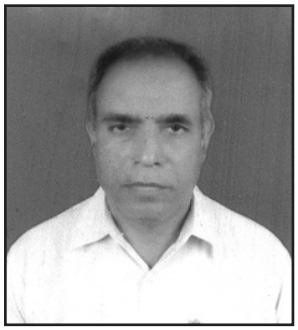

हम अपना धर्मपत्नी नीलम के संगे २६ मई २०१२ के उत्तराखण्ड के चारों धाम- यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ आ बदरीनाथ के यात्रा खातिर बक्सर से कुंभ एक्सप्रेस से हरिद्वार खातिर निकलनी। निकलनी ना बलुक निकालल गइनी। हमार श्रीमती जी हर हाल में ई यात्रा कइल चाहत रही। उनका सिर पर भूत सवार रहे, जेकरा कारन हमरा हथियार डाले के परल। ठीक ओही तरह जइसे भगवान श्रीराम के ई जनला के बादो कि एह संसार में सोना के हिरन ना होले, तबो अपना पत्नी सीता के निहोरा पर स्वर्णमृग के पीछे दउड़े के पड़ल रहे- 'असम्भवश्य हेमश्च मृगश्च जन्मं तथापि रामं लुभधं भवेत।'

२७ मई के साँझि हमनी हरिद्वार पहुँचनी। होटल में कमरा लेहला के बाद साँझि के हर के पौड़ी पर पतितपावनी श्री गंगा के आरती के शानदार नजारा आ कलकल अवाज करत गंगा के ऊँच-नीच हिलोरा लेत लहरन पर लउकत-लुकात हजारन दीयन के टिमटिमात-झिलमिलात लौ के सुघराई कमाल के रहे। मंदिरन में बाजत घंटी, गूंजत शंख, गंगा के जयकार, आरती के पँवरत स्वर वातावरण के भक्तिमय बनावत रहे। हरिद्वारे में हमनी के भेंट बक्सर के विनोद सर्राफ, उनकर मेहरारू रेखा, बच्चा रिया आ आदित्य तथा प्रेमसिंह, पत्नी सीमा आ उनका सास से भइल। दोसरा दिन हमनी हरिद्वार के खास-खास दर्शनीय जगहन- मनसादेवी मंदिर, चण्डी देवी मंदिर, ब्यूटी प्वाइन्ट, भीमगोड़ा सरोवर, सप्तऋषि, दक्ष महादेव, सतीकुण्ड, कनखल, भारतमाता मंदिर, नीलधारा पक्षी बिहार आदि के देखनी आ ऋषिकेश महादेव, भरत मंदिर, त्रियम्बकेश्वर मंदिर आदि के देखनीं जा। हरिद्वारे से देवभूमि उत्तराखण्ड के चारो धाम के यात्रा शुरू होला। हमनी एहिजे से वंशी ट्रेवल एजेन्ट से महेन्द्रा के मैक्स गाड़ी भाड़ा पर लेनी आ दोसरा दिन हिमालय के गोद में बसल देवभूमि के देखे बदे निकल पड़नी जा।

२६ मई के देहरादून होत हमनी अपना चारो धाम यात्रा के श्रीगणेश कइनी जा। हमन के पहिला पड़ाव प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर बनल-जहाँ बड़हन अक्षरन में लिखल रहे- 'भगवान शिव को पैसा न चढ़ाये, भगवान सबको पैसा देते है इसलिए आप उनके पैसा न चढ़ाये'। जहाँ मंदिरन में पंडन द्वारा भक्तजन के ठगे के, सतावे के खबर आम बात बा, ओहिजा एह मंदिर के सुघर इन्तजाम सहजे सबके आकर्षण के केन्द्र बनल बा। देहरादून होते हमनी पहाड़न के रानी मसूरी के प्राकृतिक, मनभावन, सुघर आ खूबसूरत नजारा के देखत हिमालय के गोद में बनल अवधूत भगवान श्री राम के आश्रम में पहुँचनी। आश्रम के सादगी, सफाई, सुघर इंतजाम, शांति आ पंचमुखी स्फटिक शिवलिंग के मूर्ति से सजल भव्य मंदिर देखते हमनी के सउंसे थकान मिट गईल। इहां से चलिके हमनी नौगाँव पहुँचनी आ एहिजे होटल में पड़ाव डाल देनी जा।

३० मई के सुबह ०८ बजे हमनी यमुनोत्री खातिर निकलनी जा, आ तकरिबन दस बजत-बजत जानकी चट्टी पहुँच गइनी जा। बसे पड़ास पर हमनी सभ सामान गाड़िए पर चालक विक्रम सिंह (चम्बा वाले) के जिम्मेवारी पर छोड़के एगो झोरा में स्नान-दान आ पूजा पाठ के सामान, गोड़ में कपड़ा के जूता, हाथ में छड़ी ले के यमुनोत्री के दुरूह, कठिन बाकिर ऊँच वर्फ से तोपाइल चोटियन, घनघोर भरल पुरल जंगल, कलकल, छलछल, हहरत-घहरत यमुना, गुलाबी जाड़ा, गलत ग्लेशियरन के देखत-निहारत नौ किलोमीटर के पैदल कठिन चढ़ाई पर निकल पड़नी जा। खाड़ चढ़ाई रहे। बार-बार थकान बुझाय। बइठे के पड़त रहे। सुस्ताए के पड़त रहे। लोगन के अपार उत्साह काबिले तारीफ रहे। लोग पैदन, टट्टू, खच्चर, पालकी भा पीठ के सहारे चलत रहन। बेर-बेर यमुना माई के जय जयकार लागत रहे। राह में हर जगह दुकान रही स- जहाँ खान-पान के सभ सामान मिलत रहे। राह पातर रहे, जवना पर पैदल, टट्टू, खचर आ पालकीवालन खातिर कवनारे अलग लाईन ना रहे, जेसे पैदल यात्रियन- खासकर कमजोर आ महिलन के ढेरे परेसानी होत रहे, बाकिर उत्साह, आस्था

आ श्रद्धा परेसानी पर भारी पड़त रहे। हमनी दिन के तीन बजत-बजत यमुनोत्री पहुँच गइनी जा, जहाँ हमनी के मोबाइल काम कइल बंद क देलस।

यमुना नदी के उद्गम के यमुनोत्री कहल जाला। ई स्थान हिमालय के हिमशिखर पर समुद्र से ३२३५ मीटर ऊँच बा। एहिजा यमुना जी के मंदिर बा, जेके टिहरी नरेश महाराजा प्रतापशाह सम्वत् १९१९ में बनववले रहन, जेकर जिर्णोद्धार कलकत्ता के सेठ जालान के मदद से भइल बा। इहाँ जोरदार जाड़ा रहे। मंदिर के बगले में पहाड़ से यमुना काफी वेग से हहरात गिरत रही, जेकर नीला साफ पानी बर्फों से अधिका ठण्ढा रहे। हमनी का मंदिर के बगल के गर्म कुण्ड में नहइनी जा। सब थकान रफूचक्कर हो गइल। मंदिर में हमनी भक्तिभाव के संगे पूजा-अर्चना कइनी जा। गर्म कुण्ड में चाउर आ आलू मौली में बांध के पकवनी जा आ फेनु ओके प्रसाद रूप में ग्रहण कइनी जा। प्रकृति आ भगवान के लीला कतना विचित्र बा। एक ओर यमुना के पानी अतना बर्फीला रहे कि ओके बोतल में भरे के पहिलही हाथ जमे लागल, ओहिजे दोसरा ओर गर्म कुण्ड में चाउर पाक जात रहे। बहुत खूबसूरत नजारा रहे। सोझा बर्फ से तापाइल हिमालय के चोटी रहे। हरल-भरल पहाड़ रहे। मनभावन सुघराई रहे। नदी, झरना के खूबसूरती के मुँह बिरावत रहे। हमनी खूब फोटोग्राफी गइनी। सुघर दृश्य काा खूबसूरती के कैमरा में कैद गइनी जा। होटल में पानी पी के आ फेनु पैदले पहाड़ से उतरे खातिर तइयार हो गइनी जा। हमार श्रीमती जी खूब थाक गइल रही। बार-बार रुके आ सुस्ताए के पड़त रहे। राह में टट्टू से धक्का लागे के डर, पांकी भरल सड़क पर बिछलहर से चलल मुस्किल रहे। तबो आस्था जीत गइल आ हमनी रात आठ बजे तक जानकी चट्टी चहुँप गइनी जा। होटल में कोठरी ले, खाना खा, देह के थकान से छुटकारा खातिर नाईस (निमोस्लाइड) खा के सुत गनी जा।

३१ मई के मंहगाई के खिलाफ भारत बंद रहे। हमनी जानकी चट्टी से गंगोत्री खातिर निकलनी जा। बंद के कारण राह में बहुते कम गाड़ी मिलत रही स। पातर पहाड़ी राह, जलेबी अस गोल चक्करदार खाली सड़क। एक ओर ऊँच-ऊँच तनि के खड़ा पहाड़ पर तरनात-इठलात फेंड़न के पाँत त दोसरा ओर गहरी खाई जेके देखते डर लागत रहे। पहाड़ के चोटी से झाँकत सूरज के चमकत किरिन, कपकपांत हवा के लोरी सुनत, झपकी लेत यात्री लोग चौंक के प्राकृतिक सुघराई के मजा लेबे में लीन हो जासु। बियफे रहे, हमार श्रीमती के व्रत रहे। राह में एक जगह गाड़ी रोक के सभे नदी के साफा बाकिर बर्फीला पानी में नहाइल। नदी के तेज धार के चलते नहाए में मगे-मग देह पर पानी डाले के पड़ल। उत्तरकाशी में हमनी एगो होटल में खाना खइलीं। काशी विश्वनाथ मंदिर में भगवान शिव के दर्शन कइली। गंगनानी तक पहुँचत-पहुँचत किरिन डूबला से पड़ाव डाल दिहल गइल, काहे कि पहाड़ी राह पर रात आठ बजे के बाद गाड़ी चलावल मना बा। होटल ऋषिलोक में बड़ा सुघर लकड़ी के कलात्मक नक्कासीदार कोठरी बनल रही स। थकला के कारण तुरन्ते सुत गइलीं जा।

०१ जून के सुबहे पता चलल कि होटल से खाली पांचे मीटर पर व्यासकुण्ड (गर्म पानी के कुण्ड) आ मंदिर बा। एहिजे ऋषि परासर के तपस्थली रहे। हमनी इहें नहा-धोआके ताजा भइनी। हिमालय के पवित्र, प्राकृतिक सुघराई, विशालता के मनमोहेवाली खूबसूरती के साक्षात् दर्शन भइल। गर्म कुण्ड के पानी अदहन अस जरत रहे, ओह में उतर के नहाइल कठिन रहे। लोटा से पानी निकाल-निकाल के भगत लोग नहात रहन। हमनी पूजा-पाठ कइली आ फेनु तइयार हो गंगोत्री के यात्रा पर निकल पड़ली।

गंगोत्री के राह में जगह-जगह हिमालय के वर्फ से तोपाइल चोटी, प्राकृतिक झरना, हरल-भरल झूमत देवदार आ चीड़ के जंगल के दर्शन भइल, जेकरा के देख के जिया अघा गइल। हमनी के गाड़ी बारह बजत-बजत गंगोत्री पहुँच गइल। एहिजा पैदल ना चले के पड़ल। एहिजा पहुँचते हमनी के मोबाइल ठप हो गइल। ई जगह समुद्र तल से ३१४० मीटर के ऊँचाई पर बा। गंगा के उद्गम 'गोमुख' एहिजो से १८ किलोमीटर दूर बा, जहाँ पैदले जाएके पड़ेला। ई राह बहुते कठिन बा। कथा बा कि राजा सगर के लइकन के उद्धार खातिर राजा भगीरथ कठोर तप कइ के गंगा के धरती पर ले आइल रहन। एही से इहाँ गंगा के भागीरथी कहल जाला। इहाँ गंगा उत्तरवाहिनी बाड़ी। इहाँ गंगा एगो बड़हन झरना के रूप में गिरेली, जेकर सुघराई अजीब आ बखान से परे बा। एहिजा गंगा पर से नजर ना हटे। इहां गंगाजल में बालू बहुत आवेला। गंगोत्री मंदिर के अमरसिंह थापा १८वीं शदी में बनववले रहन। ई मंदिर अक्षय तृतीया (मई से नवम्बर) तक खुला रहेला आ जाड़ा में बन्द हो जाला। गोमुख ग्लेशियर, ४२०० मीटर के ऊँचाई पर बा, जवन एहिजे से लउकेला। एकर प्राकृतिक छटा देखनउक बा।

गंगोत्री मंदिर के लगहीं भगीरथ शिला बा। कहल जाला एहिजे भगीरथ तप कइले रहन। हमनी एहिजा गंगा के बर्फीला पानी में नहइली जा। पूजा-पाठ कइलीं। फोटोग्राफी कइलीं आ जमके प्राकृतिक सुघराई के मजा उठवलीं जा। घाटे पर अनेक होटल रहे जहाँ खांटी शाकाहारी खाना मिलल। एकरा बाद हमनी के केदारनाथ के यात्रा पर निकल पड़ली। पटवारी में रात काटल गइल।

०२ जून के भोरे पटवारी से हमनी के केदारनाथ के यात्रा शुरू भइल। केदारनाथ द्वादस ज्योतिर्लिंगन में एगो सिद्ध लिंग ह, जे समुद्रतल से ३५८० मीटर ऊँचाई पर बा। भगवान शिव के निछावर एह धाम के यात्रा गौरी कुण्ड से १५ किलोमीटर पैदल करे के पड़ेला। एह यात्रा में हमनी के अब तक हिमालय के मनमोहक प्राकृतिक सुघराई के छक के मजा लेले रहीं जा। उत्तरकाशी से जब हमनी के गाड़ी श्रीनगर के आगे निकलल त हिमालय के एगो नया रूप देखे के मिलल। जंगल में आग लागल रहे। पहाड़ पर खाड़ पेड़ धू-धू के जरत रहन। जंगल में लागल आग के धुँआ से राह ना लउकत रहे। चालक विक्रम सिंह बहुत कुशल रहे। ऊ पहिले झुक के ऊपर पहाड़ देखे तब गाड़ी आगे बढ़ावे। राह में चलल आ रुकल दूनों खतरनाक रहे। पहाड़ से फेंड़न के जरल डाँढ जरि-जरि के गिरत रहे। ओकरा संगही पत्थरों ढिमलात रह सऽ। कबो गाड़ी पर कवनो जरत डाँढ़ के गिरे के खतरा बनल रहे। हमनी के साँस रुकत जात रहे। सगरो धुँआ-धुँआ लउके। पहाड़ पर आग के लपट दूर से लाईन से जरत दीयरी के नजारा फेल करत रहे। यात्रा बड़ा कठिन रहे। गहरी खाई, टेढ़-मेढ़ राह, गहरा धुँआ से घिरत घनघोर अन्हार आ नाक में घुसत धुँआ के खूशबू। पता चलल कि एह बेरी तीन साल बाद उत्तराखण्ड के जंगल में फेनु आग लागल बा। पहाड़ के सुघराई, गिरत झरना, लहलहात खेत, झूमत फेड- जंगल के ई सुघराई से ई एगो अलग रूप रहे। 'ओम् नमः शिवाय' के जप करत-करत हमनी रूद्रप्रयाग पहुँचनी जा। इहाँ होटल में खाना खाते आंधी आ गइल, फेनु बरखा शुरू हो गइल। देर तक रूके के पड़ल। आगे बढ़ला पर जगह-जगह पहाड़ से गिरल फेंड़न के चलते राह जाम मिले लागल। लोग बड़ा निक रहन कि तुरत फेंड़न के काट के राह साफ क देत रहन। अगस्त मुनि आवत-आवत हमनी के हिम्मत जबाब दे देलस। आंधी के चलते पहाड़ से एगो सोगहग देवदार के फेंड़ यात्रियन से भरल बस पर गिर गइल रहे। बस पचक गइल रहे। ड्राइवर सहित चार लोग मर गइल रहन। बीस गो घाही रहन। हमनी के अन्हार होखे के पहिलहीं अगस्तमुनि के एगो होटल में डेरा डाल देनी जा। मन में विरक्ति के अजीब भाव भर गइल रहे।

०३ जून के हमनी के एक बजे तक गौरीकुण्ड पहुँचनी जा। इहाँ गर्म कुण्ड में नहइनी जा। सब थकान मिट गइल। खाना खाइल गइल। सब सामान गाड़िये पर विक्रम सिंह के जिम्मे छोड़ पूजा पाठ, दान-पुण्य खातिर कपड़ा-सामान, रेनकोट ले चल पड़नी जा। गौरी कुण्ड से १५ किलोमीटर के पैदल चढ़ाई करे के रहे। हमनी भाड़ा पर टट्टू लेनी जा। एहिजो मोबाइल धोखा दे देलस। पूरा राह मनमोहक प्राकृतिक सुघराई से भरल रहे। चमचमात वर्फ के चोटी, दमकत ग्लेशियर, अल्हड़ नदी-नाला, मचलत-इठलात झरना, मखमली घास आ फूलन से लदल पहाड़ के सुघराई निहारत हमनी के अपना जिनगी के धन्य मानत रहीं जा। पढ़ला-सुनला से हजार गुना जादा जीवन्त रहँऽस ऊ नजारा जवना पर से आँख हटते ना रहे। रामबाड़ा तक आवत-आवत अन्हार हो गइल। जून में जब पूरा देश ०.४४ डिग्री के गर्मी में जरत रहे, एहिजा जाड़ा में हमनी के दाँत कटकटात रहे। संयोग से हमनी के रामबाड़ा में टट्टूबालन के पहल पर बिड़ला गेस्ट हाउस में रात बितावे के जगह मिल गइल। दू-दू गो रजाई ओढ़लो के बादो देर रात तक हमनी के दाँत बाजत रहे। रात भर कमरा के बगल से हल्ला करत नदी बहत रहे। सुबह के नजारा जोरदार रहे। पहाड़ से नदी हहरात उतरत रहे। बर्फ से तोपाइल चोटियन के कतार सामने रहे। अनेक झरना मचलत पहाड़ से उतरत रहन। पूरा पहाड़ कहीं वर्फ से, त कहीं हरा-भरा जंगल से ढंकल रहे। हमनी के पानी गरम करा के नहइनी जा आ फेनु टट्टू के सवारी से केदारनाथ के राह पर चल देनी जा। लगभग नौ बजे हमनी केदारनाथ पहुँचनी। इहाँ के नजारा खूब अजीब रहे। ई जगह समुद्र से ३५८० मीटर ऊँचाई पर बा। एहिजा पंडन के भीड़ रहे। ऊ अपना जजमानन के पकड़त रहन, उनकर माली हालत परखे खातिर उनकर पहिला सवाल होत रहे- 'क्या हेलीकाप्टर से आए हैं ?' बक्सर क्षेत्र के सतीश तिवारी पंड़ा मिल गइलन। हजारन भगतन के लाइन लागल रहे तबो जल्दिए हमनी के पूजा-पाठ पूरा हो गइल। केदारनाथ मंदिर के स्थापत्यकला देखे लायक बा। मंदिर के पत्थलन के तराशके बनावल गइल बा। मंदिर के भितरो दीवारन प खुदाई क के पांड़वन आदिन के

मूरत बनावल गइल बा। गर्भगृह में ग्रेनाइट के तिकोन बड़हन पत्थर के शिवलिंग दर्शनीय बा जवन भइंसा के पीठ के आकार के बा। ई शिव के एकलउता मूरत बिया जवना पर घीव लगावे के परम्परा बा। ई मंदिर मई से नवम्बर तक भगतन खातिर खुला रहेला। हमनी के हिम ग्लेशियरन के निहारत रहीं जा, फोटोग्राफी करत रहीं जा कि मौसम के मिजाज बदलल। बरखा होखे लागल। बर्फ गिरे लागल। रेनकोट पहिन के हमनी आपन वापसी यात्रा शुरू कइनी जा कि जे केदारनाथ के यात्रा क लेलस ओकरा प्राकृतिक सुन्दरता के सोझा भारत के कवनो हिल स्टेशन के सुघराई फींका बा।

०५ जून के हमनी के सोनप्रयाग, गुप्तकाशी, उखीमठ, चौपटा होते बद्रीनाथ के यात्रा शुरू कइनी। मन थाक गइल रहे। देह टूटत रहे। गाड़ी पर बइठे के मन ना करत रहे। एक जूने से हेमकुण्ड साहिब के यात्रा शुरू भइल रहे। एही गुरूद्व ारा में सिख गुरू गोविंद सिंह जी महाकाल के तपस्या कइले रहन। हजारन सिखन के जत्था राह में हेमकुण्ड साहिब जात मिलल रहे। एह सिखन के सेवा में जगह-जगह लंगर चलत रहे, जहाँ आदर के संगे निहारो के साथ रोक-रोक सभका के सरदार लोग खाना, शर्बत, आ प्रसाद देत रहन। हमनियों के एकर लाभ उठवनी जा, काहें कि उनकर स्वयंसेवक हमनी के बिना कुछ लिहले आगे जांही ना देत रहन। केतना अजीब बात बा। हिन्दू धर्म स्थानन पर सबकुछ लूटे वाली नीयत रहेला, ओहिजे सिख भाई। सब श्रद्धा भाव से सबकुछ निछावर करे के भाव काम कर रहल बा। गोविन्द घाट से हेमकुण्ड साहिब के २० (बीस) किलोमीटर के पैदल चढ़ाई कइल जाला। एहिजे से 'फूलन के घाटी' के राह जाले। गोबिन्द घाटे में हमनी के एकमुखी रुद्राक्ष और केशर खरीदनी जा। रुद्राक्ष पा के मन के बड़ा तसल्ली मिलल।

हमनी का साँझ होत-होत बद्रीधाम चहुँप गइनी जा। पड़ाव के इन्तजाम करत-करत रात हो गइल आ बरखा होखे लागल। अकाश के चूमत नर आ नारायन दू पहाड़न के गोद में बसल आदि तीर्थ बद्रीनाथ धाम (बदरी विशाल) हिन्दुअन के श्रद्धा आ आस्था के अटूट केन्द्र बा, जवन बेजोड़ प्राकृतिक सुघराई आ खूबसूरती से भरल बा। ई देश के चार प्रमुख धामन में से एगो बा। इहाँ अलकनन्दा के कलकल-छल-छल करत निर्मल बर्फानी धार आ ठीक ओकरा बगले में गरम कुण्ड के अदहन अस खउलत पानी प्रकृति के अजूबापन के जियतार रूप पैदा करऽता। ई धाम ऋषि-गंगा आ अलकनन्दा नदी के संगम पर ३१३३ मीटर के ऊँचाई पर बसल बा। एहिजा के मंदिर भगवान विष्णु के निछावर बा। ई पूरा क्षेत्र के बैकुण्ठ कहल जाला। स्थापत्य कला के नजर से ई मंदिर के कवनो सानी नइखे। मंदिर तीन भाग में बँटल बा-गर्भगृह, दर्शन मण्डप आ सभा मण्डप। भगवान विष्णु के मूर्ति के आसपास आउरो मूर्ति बाड़ी स। कहल जाला एहिजा कबो बदरी (बइर) बेर के जंगल रहे। राह बहुत कठिन रहे। बाकिर आज त एहिजा गाड़ी से पहुँचल जा सकता। पैदल नइखे चले के पड़त। एह मंदिर के कपाट मई से नवम्बर तक खुला रहेला। इहाँ रोज लगभग दस हजार श्रद्धालु पहुँच जालन। रात भर बरखा होत रहल। हमनी सुबह तइयार होके बदरी विशाल के दर्शन खातिर पहुँचली जा। ठिठुरत वातावरण में गरम कुण्ड में नहइला के अपूर्व सुख मिलल। बद्री विशाल के दर्शन खातिर हजारन भगत बरखा में भींजत लाईन में खाड़ रहन। कइसे भगवान के दर्शन होई ? इहे चिंता मन में उमड़त रहे। भगवान के किरपा से ओही समय पं० विजय काटजू पहुँच गइनी। जे हमरा डुमरी गाँव (बक्सर जिला) के पण्डा रहीं। उनका मदद आ भगवान बदरी विशाल के किरपा से पांचे मिनट में हमनी के श्री बदरी विशाल के सोझा रहीं जा। अभूतपूर्व नजारा रहे। भगवान के छवि देखते बनत रहे। देर तक आराम से दर्शन भइल। पूजा-पाठ भइल। दान-पुण्य भइल। तन-मन जुड़ा गइल। खाना खा हमनी आपन वापसी यात्रा शुरू कइनी जा। देह थाक के चूर रहे, बाकिर मन में आत्मिक संतोष से भरल रहे। ०७ जून २०१२ के हम हरिद्वार होत रात में दिल्ली पहुँच गइनी। बस स्टैण्ड पर पुत्र आदित्यवर्द्धनम्, बहू श्वेता आ पौत्र अक्षरादित्य दादा-दादी के अगवानी में गाड़ी लेके खाड़ रहन। एह तरी हमार चारो धाम के यात्रा पूरा भइल।

●●●

9415860896
(शादी-तिलक कार्ड, किताब, पत्रिका, विजिटिंग कार्ड,कैशमेमो, कलेण्डर आदि की आकर्षक कम्पोजिंग एवं छपाई हेतु...
कम्प्यूटर्स प्वाइंट
भृगु आश्रम, बलिया (उ.प्र.)

राउर–पन्ना/राउर चिट्ठी

'पाती' जून २०१२ में दू गो कविता पहिलही (कवर पेज पर) पढें के मिली। मन खूंटा में बन्हा गइल। आनन्द संधिदूत जी के ''पृथिवी बडी सवदगर राम'' आ अशोक द्विवेदी के 'ऊ अँजोरिया कहाँ, जे सुघर लागे' पढ़ते मन बेचैन हो गइल। हम दिल्ली महानगर में जरूर रहीले मगर आज तक ले गांव ना भुलाइल। मानत बानी कि समय के साथ बहुत कुछ बदल गइल। पहिले अइसन गांव अब ना रह गइल। तबो संधिदूत के लाइन 'जे चाहे उ जाय सरग में, पृथिवी बडी सवदगर राम' बान्ह दिहलस आ एही परिवेश के दूसर दर्द रउरा कविता में उभरल.... 'ऊ अँजोरिया कहाँ, जे सुघर लागे'।

दूनू कवितन में मन के भाव बड़ा सच्चाई से उजागर भइल बा। अपने जानत बानी कि अब बिना मेकअप के साहित्य लिखात नइखे, कुछ अपवाद भले हो सकेला। अब बरिसन पहिले के अजोरिया देखल आ ओकर अनुभूति कइल आ आज के अजोरिया के अनुभूति कइला में फरक बा। आसमान उहे बा, दिन-बार के अनुसार सूरज चान ओहि तरह उगत, घटत बढत बाडे, तबो ओह चांदा के चाँदनी कहाँ लुका गइल ? लिखे के आशय ई बा कि एह दूनू रचना में बड़ी सच्चाई से समय के बदलाव आ अनुभूति के चर्चा भइल बा... कतना बदलल इ गउँवाँ-नगर लागे। घर में अइला प', दुसरा के घर लागे।।

रामयश 'अविकल' के गजल लाइन 'रहनदार के बेटी जेइसन, अभियो गांव लजात बा' सुन्दर अभिव्यक्ति बा। तंग इनायत पुरी के विनोद भरल लाइन 'कहाँ जाएब बुढ़ौती में चाचा इ कनखीमार होली में'। हमहूं अपना जिनिगी में गांव आ शहर के बहुत होली देखनी, बाकिर ई 'कनखीमार होली' के रचाव कमाल के बा। प्रकाश उदय के कविता में व्यंग्य, भोजपुरी खातिर आयरन टेबलेट क काम करेला। चौधरी कन्हैयाप्रसाद सिंह के नाटक 'धरमी' छोटे कलेवर में बड़हन बात कह गइल बा। पाती के एह अंक में लगभग सभे प्रतिष्ठित रचनाकार लोग छपल बा, अभी पढ़े के समय ना मिलल ह। सभे बधाई के पात्र बा, भोजपुरी के जेतना रपट एमे छपल बा, ओसे पता चलत बा कि देश के कोना कोना में भोजपुरी के तरक्की खातिर चेतना जागल बा। भोजपुरी कुछ खाइयो-पी लीही त अन्हुआये वाली भाषा ना हऽ ।■Mk- jek'kdj JhokLro] आर-७, वाणी विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली.५६

'पाती' देखते छाती हरसल, हियरा खूब जुड़ाय । सुन्नर, सुध्घर ऊपर चीकन हाथ देत छहलाय।
हाथ देत छहलाय, पढ़त भीतर के बतिया। कविता, कहनी सरस लेख साजे जे मतिया।
कह किसलय हरिद्वार, धनबाद एह खाती। सुफल सहज संजोग कि हाथे लागल 'पाती'।।

■ gfj}kj i;lkn fdly;] ग्रा० पो० राजापुर, वाया-दलीपपुर, भोजपुर-८०२१५५

'पानी आ जल सम्पदा' पर विशेष अंक ६४ जून-१२ मिलल। अस्वस्थ रहला के बादो बहुत कुछ पढ़ गइली। पानी के अहमियत पर राउर गंभीर आ विचार भरल संपादकीय गौरतलब बाटे। प्रगत द्विवेदी जल संरक्षण आ ओकरा समस्या के बड़ा गंभीरता से उठवले बाडन। दिन पर दिन गहिरात जल संकट से निजात पवला खातिर राष्ट्रीय स्तर पर कारगर कदम उठावल जरूरी बाटे। अंक में छपल कुल गीत, कविता दमगर बा। पांचो चइता रसगर लागल। कहानी अभी नइखी पढले।.... इ माने के पडी कि पाती हरेक स्तर पर दिन पर दिन निखरल जातीया। रेशम नियन मुलायम मखनिया कागज के जाबाबे नइखे। 'सोबियत लैड' पत्रिका अइसन उम्दापन बाटे।■f'koi;tu yky fo|kFkh] प्रकाशपुरी, आरा, भोजपुर-८०२३०१

'पाती' कऽ अंक ६४ (जून-१२) मिलल। मुख पृष्ठ बहुते आकर्षक बा। हरियरी आ कंकड़ पाथर क बीचे कल-कल करत झरना क उरेहल चित्र देखते मन जुड़ गइल। पत्रिका अपना नाम के अनुरूप एक से एक रोचक, मनोरंजक आ दिशाबोधक सामग्रियन से भरल पूरल बा भीतर कहानी, नाटक, लघुकथा, गीत, कपिता, गजल आ अन्य प्रकार के सामग्रियन के भरमार बा। कुल्हि मिला के गागर में सागर भरे के सफल प्रयास कइल गइल बा।

वइसे एमें छपल कूल्हि सामग्री स्तरीय पठनीय आ शिक्षाप्रद बाड़ी स। विशेष रूप से हमार पन्ना में ''पानी बिना जिन्दगानी के अरथ'' शिर्षक वाला सम्पादकीय में पानी के दिसाई भविष्य के प्रति सम्पादक जी के चिन्ता, चिन्तनीय बा। सचहूँ पानी कऽ दुरूपयोग रोके के साथे, पानी के संरक्षण आ संचय कइल बहुत जरूरी बा। दुसरी ओर कृष्ण कुमार क सक्शन पम्प में कन्या भूण हत्या आ गर्भपात पर गम्भीर चिन्तन बा। ए चिन्तन परक आलेख में रचनाकार के ई शंका कि ए पर तत्काल रोक ना लागल त, नारी पुरूष के अनुपात गड़बड़ा जाई, एकदम सही बा। सुरहा ताल पर डॉ० श्रीराम सिंह के शोधपरक लेख संग्रहणीय बा। साथे साथ 'लोकराग' में स्व० रामविचार पाण्डेय, भोलानाथ गहमरी, प्रभुनाथ मिश्र, शिवदत्त श्रीवास्तव 'सुमित्र' के नांव आ रचना पढ़ के ओह लोगन के याद ताजा हो गइल आ ओ लोग का संगे बितावल दिन इयाद पडल। अइसन स्तरीय पत्रिका के प्रकाशन खातिर संपादक डा० अशोक द्विवेदी आ एसे जुड़ल लोगन के साधुवाद बा।■f=Hkou i;lkn flg ^ihre*] मंत्री, बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा, टाउनहॉल, बलिया (यू.पी.)

'पाती' कऽ अंक ६४ (जून-१२) मिलल। रचना चयन, संपादन आ छपाई में ओइसहीं सुंदर आ निखरल। कुछ स्थायी स्तंभ जइसे पुस्तक समीक्षा (आलोचना) के पन्ना खाली मिलल। जबकि एह ममिला में ई पत्रिका सुरूए से जानल जाले। आगे से एकरा खातिर संपादक जी के कोशिश करे के चाही। काहे कि आलोचना के लेके भोजपुरी साहित्य में विशेष जागरूकता आ दिलचस्पी नइखे देखे के मिलत।

ओइसे अपना समय-संदर्भ आ अनुभूति, संवेदना से भरल, पाती भोजपुरी के अइसन प्रतिनिधि पत्रिका मानल जाले जवना में स्तरीय साहित्य का साथे साथ, समाज आ परिवेश के लेके स्वाभाविक चिंता आ चिंतन दूनू मिलेला। भोजपुरी भाषा का लेहाजो से, 'पाती' के अबतक छपल विशिष्ट अंकन के साहित्य के भाषा एकदम आदर्श मानल जाई। 'पाती' भोजपुरी पत्रकारिता के इतिहास में आपन स्थायी आ विशिष्ट स्थान बना चुकल बीया। ■ _ pk] द्वारा विजय दूबे, रतनगंज, मीरजापुर (उ०प्र०)